Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारब्ध और पुरुषार्थ

गुरुदत्त

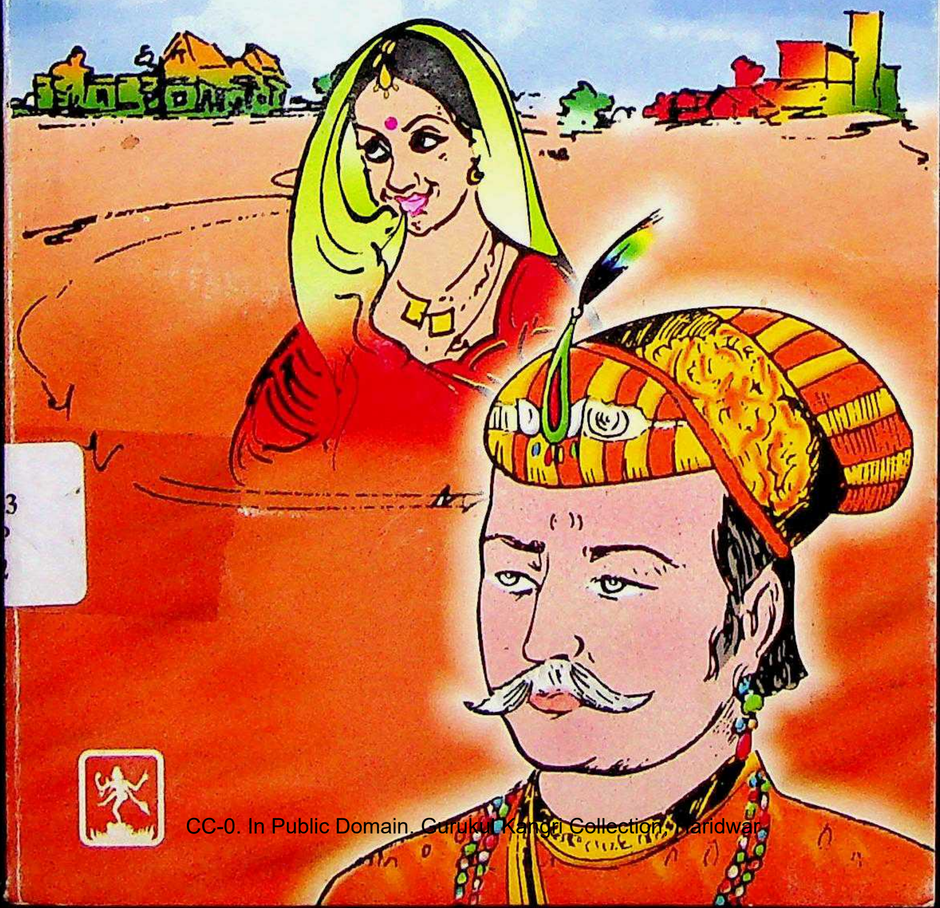

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

167942

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारब्ध और पुरुषार्थ

मनुष्य कर्म करने में स्वतन्त्र है। इस कारण भाग्य (प्रारब्ध) के विरुद्ध जब वह पुरुषार्थ करता है तो उसके परिणाम (शुभ अथवा अशुभ) का उत्तरदायित्व उसका अपना होना है। तब वह भाग्य पर दोषारोपण नहीं कर सकता।

'प्रारब्ध और पुरुषार्थ' का यही कथानक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रारब्ध और पुरुषार्थ

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Relegious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

081
167942

गुरुदत्त

Central Library
167942
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar

हिन्दी साहित्य सदन
नई दिल्ली-110 005

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

R
089.9143
GUR-P

© हिन्दी साहित्य सदन

मो० 7065618555, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बरस, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

मूल्य : 80.00 रुपये

प्रकाशक : हिन्दी साहित्य सदन
2 बी.डी. चैम्बर्स, 10/54 डी.बी. गुप्ता मार्ग
(समीप प्रह्लाद मार्केट) करोल बाग, नई दिल्ली-5
फोन : 3553624 ◆ फैक्स : 91-11-5412417
E-mail : indiabooks@rediffmail.com

संस्करण : 2002

मुद्रक : अजय प्रिंटर्स
दिल्ली-110032

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आर्ष साहित्य
Complete Vedic Books Store
Yog, Vedic, Ayurvedic, Religious
All Yog & Organic Products
(M) 9541317278, 8869821468
Web.: aarshsahitya.com

प्रथम परिच्छेद

आगरा से दस मील उत्तर की ओर मथुरा की सड़क के किनारे भटियारिन की सराय नाम का एक स्थान था जिसके आज भग्नांश ही शेष रह गए हैं। अकबर के काल में वहाँ एक सराय थी और अकबर के पोते शहंशाह शाहजहाँ के काल में वहाँ एक भरा-पूरा गाँव था। इस पर भी इस निर्धनों के गाँव में महल और अटारियाँ थीं, सड़कें और उद्यान थे। आज उस स्थान पर एक टीला है जो प्रकट करता है कि वह किसी गाँव के मलबे का ढेर है।

अकबर अभी बीस-इक्कीस वर्ष की वयस् का ही था और अपने गुरु और सरपरस्त बहरामखाँ के शिंकजे से छूटकर खुदमुखत्यार शहंशाह के रूप में आए उसे दस-बारह वर्ष व्यतीत हो चुके थे। अकबर दिल्ली और आगरा प्रायः आता-जाता रहता था। उसका स्वभाव था कि घोड़े पर सवार हो दिल्ली से एक दिन में मथुरा और मथुरा से आधे दिन में आगरा आ जाया करता था। मार्ग में भटियारिन की सराय एक नगण्य स्थान था। सरपट दौड़ते घोड़े पर सवार हो जाते हुए उसका इस सराय की ओर कभी ध्यान भी नहीं गया था। साथ ही उसने आगरा से तीन कोस उत्तर की ओर एक विशेष आरामगाह बना रखी थी। कभी आगरा पहुँचने में देर हो जाती तो रात इस आरामगाह में आराम कर वह प्रातः तरोताजा हो आगरा पहुँचने में लाभ समझता था। इस आरामगाह का नाम 'नगर चैन' विख्यात था। वहाँ शाही सुख-आराम की सुविधा रहती थी। इस कारण 'नगर चैन' के समीप होने से भटियारिन की सराय की ओर शहंशाह का कभी ध्यान भी नहीं गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस दिन इस सराय के सामने से गुजरते हुए अकबर के घोड़े की नाल उखड़ गई। घोड़े ने लँगड़ाकर चलना आरंभ कर दिया। अकबर एक अनुभवी घुड़सवार होने के कारण घोड़े के लँगड़ाने को देख उसे खड़ा कर उतर गया। उसके साथ आ रहे आधा दर्जन सिपाही भी खड़े हो गए। अकबर ने सिपाहियों के सालार से कहा, "करीमखाँ! देखो, यह कौन-सी जगह है।"

करीमखाँ इस वीराने में एक पक्का मकान बना देख उसकी ओर चल पड़ा। मकान एक अहाते की सूरत-शक्ल का था और अहाते में यात्रियों के रहने के कमरे थे। अहाते के भीतर जाने के लिए एक फाटक बना था और फाटक के बाहर एक दुकान और प्याऊ थी। दुकान भुने चने की थी और चना खानेवालों के लिए मिट्टी के मटके में ठंडा पानी रहता था। चने खाने पर वहाँ जल बिना दाम के मिलता था। दुकान में चना भूनने की भट्टी भी थी।

करीमखाँ शहंशाह को सड़क पर ही छोड़ इस दुकान की ओर आया और दुकान में बैठी एक कमसिन लड़की को कड़ाही में गरम-गरम रेत में चनों को भूनते और हिलाते देख पूछने लगा, "ए लड़की! यह कौन-सी जगह है ?"

लड़की ने अपना सिर चनों की कड़ाही से ऊपर उठा इस प्रश्न करनेवाले की ओर देख कह दिया, "ए तिलंगे! यह भटियारिन की सराय है।"

करीमखाँ लड़की की हाजिर जवाबी पर विस्मय में उसके मुख को देखने लगा। लड़की ने उसे अपने मुख को देखते हुए कह दिया, "जेब में दाम है तो सराय में ठहर सकते हो।"

करीमखाँ को लड़की की शोखी पसंद आई। एक भटियारिन के मैले और धुएँ से काले हुए कपड़ों में एक अति सुंदर मुख दिखाई दिया। बड़ी-बड़ी आँखें और मोटे-मोटे लाल होंठ, उभरती जवानी के लक्षण देख वह मुग्ध होकर उसका मुख देखता रह गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की अब चने और रेत को कड़ाही में से छननी में ले हिला रही थी। उसने रेत कड़ाही में छन जाने पर भुने चने समीप रखी टोकरी में डाल दिए और दुकान के बाहर खड़े सिपाही से बोली, "मेरे मुख को क्या देख रहे हो? क्या चाहते हो?"

करीमखाँ ने मुस्कराते हुए कहा, "पर मैं तिलंगा नहीं हूँ।"

तिलंगे दक्षिण के सिपाहियों को कहते थे जो रोजगार की तलाश में उत्तरी भारत में आ राजा-रईसों की नौकरी करते थे। वे प्रायः हिंदू होते थे। करीमखाँ तो पठानी सलवार और कुर्ता तथा कुर्ते पर कुर्ती पहने हुए था।

लड़की ने तुरंत उत्तर दिया, "तिलंगे नहीं तो लफंगे जरूर हो। किसलिए खड़े हो?"

करीमखाँ को शहंशाह के सड़क पर खड़े प्रतीक्षा करने की बात याद आ गई। इस कारण उसने मतलब की बात कर दी, "यहाँ घोड़ों की नाल लगानेवाला कोई लोहार है?"

"सराय के फाटक के भीतर साथ ही लोहार की दुकान है। वह नाल लगा देगा। किसकी नाल उखड़ गई है?"

करीमखाँ मुस्कराया और शहंशाह की ओर चल पड़ा। वहाँ पहुँचकर उसने कहा, "जहाँपनाह! एक लोहार का पता चला है। लाइए घोड़ा, अभी ठीक करवा लाता हूँ।"

"और यह किस शै की दुकान है?"

"एक भटियारिन की दुकान है और यह सराय है। नाम है भटियारिन की सराय।"

"हुजूर!...." करीमखाँ लड़की के विषय में कुछ कहना चाहता था, परंतु अन्य सिपाहियों की उपस्थिति में कह नहीं सका और घोड़े की लगाम पकड़ लँगड़ाते घोड़े को लेकर सराय के फाटक की ओर चल पड़ा।

दुकान के बाहर एक पीपल का पेड़ था और उस पेड़ के साए में बैठ यात्री चने खाया करते थे और ठंडा पानी पी चनों का दाम दे चल देते थे। जो दिन के चौथे प्रहर पहुँचते थे और सूर्यास्त से पूर्व मंजिल पर पहुँचने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की आशा नहीं रखते थे, वहीं सराय में रह जाते थे। सराय में दो पैसे नित्य के भाड़े पर मिलनेवाली खाट से लेकर एक रुपया नित्य पर मिलनेवाले कमरे तक का प्रबंध था। सराय के फाटक पर एक व्यक्ति खाट डाले बैठा था। उसने करीमखाँ को लँगड़ाते घोड़े के साथ आते देखा तो समझ गया कि घोड़े की नाल उखड़ गई है। उसने खाट पर बैठे-बैठे ही हाथ से लोहार की दुकान की ओर संकेत कर दिया।

करीमखाँ उस ओर चला गया। अकबर सड़क पर खड़ा रहने के स्थान, भटियारिन की दुकान के बाहर पीपल की छाया में आ खड़ा हुआ। लड़की फिर चने के दाने कड़ाही की रेत में डाल हिलाने लगी थी। वह दूसरे हाथ से कड़ाही के नीचे सूखे पत्ते इत्यादि डाल-डालकर आग को तीव्र कर रही थी।

अकबर की दृष्टि भी भटियारिन की ओर गई तो वह उसकी रूप-रेखा पर मुग्ध हो गया। उसने दुकान के सामने जाकर कहा, "सुंदरी! एक टके के चने दो।"

'सुंदरी' शब्द से लड़की का ध्यान भट्टी की ओर से हटकर शहंशाह पर गया। उसकी पोशाक और रूप-राशि देख लड़की समझ गई कि कोई रईस है। इसी समय उसने सड़क पर आधे दर्जन सिपाहियों को भी खड़े देखा। इस कारण वह बोली, "हुजूर! जरा ठहरिए। इस पुर को निकाल लूँ तो देती हूँ।"

"किसकी बेटी हो?"

"इस सराय के मालिक की।"

"वह कहाँ है?"

"भीतर किसी काम से गया है।"

"बहुत सख्त काम वह तुमसे ले रहा है।" अकबर ने लड़की से सहानुभूति प्रकट करते हुए कहा। लड़की रेत और चने छननी में लेकर भुने चने रेत से पृथक् कर रही थी। काम में व्यस्त और यात्री की ओर न देखते हुएं उसने कह दिया, "हुजूर! पेट की खातिर सब मेहनत करते हैं। आप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी तो इस धूप में यात्रा कर रहे हैं।''

''तो मैं भी पेट के लिए कर रहा हूँ?'' अकबर ने लड़की से बातों में दिल बहलाने के लिए कह दिया।

लड़की का सतर्क उत्तर था, ''शरीर, मन और बुद्धि की तसल्ली के लिए ही तो सब संसार भाग-दौड़ कर रहा है।''

''ओह!'' अकबर को लड़की के उत्तर में एक श्रेष्ठ मंतक (मीमांसा) युक्त कथन ही लगा। वह अवाक् लड़की के मुख को देखता रह गया।

लड़की ने तराजू उठाया और एक पत्थर का बाट डाल चने तोल तराजू का पलड़ा शहंशाह की ओर कर दिया और कहा, ''हुजूर! किसी रूमाल में डलवा लें।''

अकबर तो लड़की के हाथ-पाँव और शरीर की बनावट को देख रहा था। लड़की ने तराजू के पलड़े को आगे किया और शहंशाह ने जब चनों के लिए रूमाल नहीं निकाला तो लड़की ने कहा, ''यह हैं दो पैसे के चने। बताइए, किसमें लेंगे?''

''ओह!'' अकबर ने जेब से एक रेशमी रूमाल निकाला तो लड़की ने समझा कि रूमाल तो बहुत कीमती है। चनों से खराब भी हो सकता है। इस कारण उसने कहा, ''तो इस पर डाल दूँ? परंतु आप तो मेरे मुख को देख रहे हैं।''

''हाँ! क्या उम्र है तुम्हारी?''

''तो दो पैसे में यह भी बताना पड़ेगा?''

''इसके बताने का दाम अलहदा भी दिया जा सकता है।''

''नहीं। मेरी माँ कहती है कि मैं आगामी कार्तिक में पंद्रह साल की हो जाऊँगी।''

''और तुम्हारी शादी नहीं हुई?''

इसका उत्तर लड़की ने नहीं दिया और चने बिछे रेशमी रूमाल पर डाल दो पैसे लेने के लिए हाथ पसार दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकबर ने जेब से एक स्वर्ण मुहर निकालकर लड़की की ओर बढ़ाई। लड़की मुहर को देखकर बोली, "इसका बाकी मेरे पास नहीं है।"

"और मेरे पास इससे कम नहीं है।"

"तो रहने दो।"

"और चनों के दाम?"

"फिर कभी इधर आइएगा तो दे दीजिएगा।"

"और अगर मैं न दूँ तो?"

"तो आप बेईमान भी हैं? आप तो रईस मालूम होते हैं।"

"तो रईस बेईमान नहीं होते?"

"उनको बेईमानी करने की जरूरत नहीं होती। परमात्मा ने उन्हें इतना कुछ दिया होता है कि उन्हें दो पैसे के लिए मुकर जाने की जरूरत नहीं होती।"

अकबर विचार कर रहा था कि वह तो नित्य अपने राज्य की वृद्धि के लिए झूठ, फरेब और बल-प्रयोग कर रहा है। तो क्या वह कंगला है जो यह करता है?

उसे लड़की की दलील गलत समझ आई। उसकी तीन बेगमें तो राजमहल में ही थीं और उनके अतिरिक्त भी कई स्त्रियों से संबंध था। इस पर भी वह इस लड़की के सौंदर्य को, जो मैले, भट्टी के धुएँ से काले हुए कपड़ों में छुपा हुआ था, देख मन में इसको प्राप्त करने की लालसा करने लगा था।

वह यह समझा कि यह जीवन-मीमांसा निर्धनों को शांत और अपनी निर्धनता से संतुष्ट रखने के लिए किसी ने बनाई है। वस्तुस्थिति यह है कि धनवान अधिक लोभी होते हैं। निर्धन धनवानों से अधिक संतोषी और ईमानदार होते हैं।

"मैं रईस तो हूँ, मगर दो पैसे के लिए बेईमान भी हो सकता हूँ!"

"तो परमात्मा तुमसे अगले जन्म में नाक में नकेल डालकर दिलवा देगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं। मैं तो इसी जन्म में दाम अदा करना चाहता हूँ।"

"तो अपने किसी साथी से दो पैसे माँग लो।" इतना कहकर लड़की ने सड़क पर खड़े सिपाहियों की ओर देखा।

अकबर को यह बात समझ आई तो उसने कह दिया, "तो मैं देखता हूँ कि किसी के पास एक टका है अथवा नहीं।"

इतना कह वह रूमाल में चने बाँध सड़क की ओर चल पड़ा। भटियारिन अपने काम में लीन हो गई और दो पैसे की बात भूल गई।

एक घड़ी लगी घोड़े की नाल लगने में। करीमखाँ घोड़े की नाल लगवा उसे लगाम से पकड़ सड़क पर ले आया। सड़क पर करीमखाँ से शहंशाह ने कुछ बात कही और वह दो सिपाहियों के साथ दुकान पर आया और लपककर दुकान पर चढ़ लड़की को पकड़ कंधे पर डाल सड़क की ओर भागा।

लड़की ने शोर मचा दिया, "बचाओ! बचाओ! बाबा! बचाओ!"

सराय में से तीन-चार व्यक्ति हाथों में तलवारें लिए निकल आए और सड़क पर लड़की को छटपटाते हुए और चीख-पुकार करते हुए देख उधर लपके।

अकबर लड़की को अपने घोड़े पर लाद स्वयं घोड़े पर सवार हो सरपट भगाता हुआ चल दिया। उसके सिपाही घोड़ों पर सवार हो शहंशाह के पीछे चल पड़े।

सराय में से निकले लोग हाथों में तलवारें लिए लड़की का अपहरण करनेवालों को घोड़े दौड़ाते हुए और अपने पीछे उड़ती धूल छोड़ते हुए देखते रह गए।

2

सराय का मालिक रामकृष्ण भटियारा था। तीस वर्ष पूर्व वह मथुरा के समीप एक गाँव से आगरा जाता हुआ थकावट दूर करने के लिए सड़क के किनारे बने एक कुएँ की जगत पर बैठ गया। उसने अपने थैले से डोर-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोटा निकाल कुएँ से जल निकालकर पिया। कुएँ का जल ठंडा और मीठा था। कुएँ के समीप घनी छाया का एक पीपल का पेड़ देखकर वह विचार करने लगा कि आगरा में क्या रखा है। यहीं क्यों न दुकान कर ले। दिल्ली-आगरा की सड़क तब भी बहुत चालू थी। रामकृष्ण के बैठे-बैठे पंद्रह-बीस यात्री आए जो कुएँ से जल निकाल पी चलते गए।

रामकृष्ण गाँव में सबसे निर्धन व्यक्ति था। वहाँ खाने को तो मिल जाता था, परंतु जीवन की अन्य आवश्यकताओं के लिए नकद कुछ नहीं मिलता था। अपने गाँव में भी वह चने, मक्की, बाजरा भून-भूनकर गाँववालों को दिया करता था, और उसके बदले में गाँववाले उसे गेहूँ, गुड़, शाक-भाजी इत्यादि दे जाते थे। कोई धनी भूमिपति कभी फटा-पुराना कपड़ा भी दे जाता था, परंतु नकद एक भी पैसा उसके हाथ में नहीं आता था।

माता-पिता विहीन रामकृष्ण गाँव के जीवन से ऊब नगर में अपने भाग्य की परीक्षा लेने चल पड़ा था। मार्ग में कुएँ पर स्वयं थकावट दूर करने और जल पीने बैठा तो उसके देखते-देखते कई यात्री आए और उसके डोरी-लोटे से जल निकाल पी चल दिए। कोई आगरा को और कोई मथुरा को।

रामकृष्ण मन में कल्पना के घोड़े दौड़ाने लगा। परिणामस्वरूप वह कुएँ की जगत पर बैठा ही रह गया। लोग आए और चलते गए। सायंकाल हो गया और वह कुएँ की जगत पर ही एक ईंट का तकिया बनाकर लेट गया।

प्रातः उठा तो प्रातः की शीतल समीर में वह दृढ़ संकल्प हो वहाँ रहने का विचार करने लगा। दूर खेत में गोड़ाई करते किसानों के पास जा उनसे फावड़ा माँग लाया और पीपल के पेड़ की बगल में मनमानी भूमि पर निशान लगाकर उस पर अधिकार जमाने का प्रबंध करने लगा। वहाँ से एक कोस के अंतर पर एक गाँव से भुने चने उधार माँग लाया और कुएँ की जगत पर चादर बिछा उन पर भुने चने रख तथा लोटे से पानी निकाल प्याऊ लगा बैठ गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्याह्न के समय यात्री आकर ठहरने लगे। भुने चने रखे देख कुछ एक-एक पैसा दाम दे मोल ले खाने लगे तो रामकृष्ण लोटा-डोरी से जल निकाल उनको पिला देता। पहले दिन दस पैसे मिले। सायंकाल वह गाँव में गया। वह भटियारे को पाँच पैसे दे पुनः अगले दिन के लिए चने ले कुएँ की जगत पर आ बैठा।

दिन चढ़ने से मध्याह्न तक वह अपने मकान के लिए मिट्टी खोद उसमें कुएँ से निकाले जल से गारा बना एक कोठरी की दीवारें बनाने लगा। मध्याह्न के समय वह कुएँ पर जल पिलाने तथा चने बेचने का काम करता था। वहाँ से कोई भी बड़ी बस्ती पाँच कोस से कम अंतर पर नहीं थी। इस कारण यात्री मध्याह्न के उपरांत ही आने लगते थे और प्यास तथा थकावट से व्याकुल कुएँ पर आते तो एक पैसे के चने और फोकट में जल पीकर तृप्त हो रामकृष्ण को आशिष देते हुए चल देते थे। रामकृष्ण सायं होते ही पड़ोस के गाँव में जाता और भटियारे को अपनी कमाई का आधा भाग देकर अगले दिन के लिए चने ले आता।

छः मास में वह अपने हाथ से ही एक कमरा बनाने में सफल हो गया। उसके पास बीस रुपए के लगभग जमा हो गए और उसने कमरे में भट्टी बना चने भूनने का प्रबंध स्वयं कर लिया।

छः महीने और लगे जब उसकी दुकान यात्रियों में विख्यात होने लगी। उसने अपने कमरे के साथ एक दूसरा कमरा भी बना लिया। कहावत है कि स्थान अनुकूल हो तो प्राणी उसमें रहने के लिए स्वतः ही आ जाते हैं।

पड़ोस के गाँव के भटियारे की लड़की युवा हो रही थी। रामकृष्ण को परिश्रम से उन्नति करते देख भटियारे ने ही अपनी लड़की का विवाह उससे कर दिया। अब दो के स्थान पर चार हाथ कार्य करने लगे तो रामकृष्ण की दुकान और निवास आरामगाह का रूप धारण करने लगे। रामकृष्ण के पास रुपए भी एकत्रित होने लगे।

पाँच वर्ष में रामकृष्ण ने सराय बना ली। इस समय तक उसके तीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संतानें भी हो चुकी थीं। गाँव में भटियारे के कार्य से सड़क पर यात्रियों की सेवा अधिक लाभ वाला काम सिद्ध हुआ।

दस वर्ष में रामकृष्ण का बड़ा लड़का मोहन आठ वर्ष का हो गया। उससे दो छोटे लड़के भी थे। नाम था भगवती और कल्याण। तब तक सराय पक्की ईंटों की बनने लगी थी। जो यात्री वहाँ रात को रहते उन्हें एक रात रहने का आधा रुपया देना पड़ता और उसी आधे रुपए में उसे एक समय की रोटी मिल जाती थी। अन्न-अनाज बहुत सस्ता था। एक रुपए का दो मन गेहूँ, बीस सेर गुड़ था। शाक-भाजी यात्रियों के मतलब की और दाल, नमक, मिर्च सब मिलाकर एक व्यक्ति के एक समय के खाने पर तीन-चार पैसे से अधिक नहीं बैठता था। सेवा रामकृष्ण की पत्नी और बच्चे कर देते थे और पाँच से दस तक यात्री वहाँ आकर रात को विश्राम पाते थे। इस प्रकार पाँच-छः रुपए नित्य की आय सराय की कोठरियों से हो जातीं और निर्वाह तथा उन्नति मजे से होने लगी थी।

पाँच वर्ष और व्यतीत हुए तो सराय के अहाते के चारों ओर पक्की दीवार और उसमें तीन खुले बरामदे तथा सात कोठरियाँ बन गई थीं। जो खुले बरामदों में सोते थे उनको खाट तथा खाना चार आने में मिल जाता था और जो कमरा लेते थे उनको बारह आने प्रति प्राणी देने पड़ते थे। कोठरियों में प्रायः बाल-बच्चों के साथ यात्रा करने वाले ठहरते थे।

रामकृष्ण की कल्पना का महल पंद्रह वर्ष के अनथक प्रयत्न से साकार होने लगा था। उन दिनों उसकी पत्नी राधा, बच्चे मोहन, भगवती और कल्याण तो घर के प्राणी थे। एक सेवक भी रखा हुआ था जो यात्रियों को भोजन खिलाने-पिलाने में सहायक होता था। दो-तीन सहस्र रुपए वार्षिक की बचत होती थी और उसका अधिकांश रामकृष्ण सराय को अधिक और अधिक सुखप्रद तथा सुंदर बनाने में व्यय करता था। सराय के प्रांगण में छोटी-सी फुलवाड़ी भी लग गई थी। एक कमरा तो दरी, पलँग और बैठने की चौकियोंवाला बन गया था। इस कमरे के साथ पृथक् शौचालय भी बना दिया गया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे का भाड़ा दो रुपये और भोजन भी विशेष, घी-चीनी युक्त, दूध, प्रति यात्री एक रुपया होता था।

इन्हीं दिनों एक स्त्री आगरे की ओर से एक घोड़े पर धीरे-धीरे चलती हुई आई और भटियारिन की सराय में ठहरने के लिए द्वार पर ठहरी तो रामकृष्ण की पत्नी राधा, जो दुकान का काम करती थी, दुकान से निकल आई। घोड़े की लगाम पकड़े एक व्यक्ति साथ-साथ चला आ रहा था।

राधा को समझ आया कि घोड़े पर सवार गर्भ से है और वह भी पूर्णता तक पहुँच चुकी है। यह देख वह लपककर दुकान से निकल घोड़े के पास चली आई।

"बहन! यहाँ ठहरने का विचार है?" राधा ने पूछ लिया।

"और कर ही क्या सकती हूँ? मुझे प्रसव-पीड़ा होने लगी है।"

"ओह!" राधा के मुख से निकल गया। उसने कहा, "इस अवस्था में यात्रा पर क्यों निकली हो?" राधा ने आश्रय दे उस स्त्री को घोड़े से नीचे उतारा और मोहन को आवाज देने लगी। मोहन आया तो राधा ने कहा, "शीघ्र बड़ा कमरा खोल दो और देखो उस पर बिस्तर इत्यादि लगा दो।"

स्वयं राधा उस स्त्री को आश्रय देती हुई उसी कमरे की ओर लेकर चल पड़ी। चलते हुए राधा ने पुनः पूछा, "बहुत कष्ट है?"

"नहीं। परंतु रह-रहकर पीड़ा उठ रही है। वह भी बहुत कष्टप्रद नहीं। इस पर भी अब शीघ्र ही इससे छुटकारा पानेवाली हूँ।"

मोहन भागकर गया। कमरा खोल सब सामान झाड़-फूँककर बिस्तर लगाने लगा। तब तक राधा उस स्त्री को कमरे के बाहर एक चौकी पर बिठाकर दया के भाव से उसके मुख को देखने लगी। स्त्री इस समय पीत मुख थी। उसका मुख और हाथ-पाँव हल्दी के समान पीतवर्ण हो रहे थे।

चौकी पर बैठे-बैठे स्त्री के मुख पर बल पड़ा तो राधा समझ गई कि प्रसव-वेदना उठ रही है। वेदना दो क्षण तक ही रही और फिर शांत हो गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहन कमरे से निकला और माँ को बताने लगा, "माँ! सब ठीक है।"

राधा ने कहा, "मंगतू से कहो कि दूध गर्म कर ले आए। जल्दी करो। बहन जी बीमार हैं।"

मोहन सराय के फाटक की ओर भागा। मंगतू उस समय दुकान पर था। मोहन का पिता कुएँ पर खड़ा जल निकाल रहा था।

राधा ने उस यात्री स्त्री को खाट पर लिटाते हुए पूछा, "क्या नाम है और कहाँ से आई हैं?"

उस स्त्री ने अपने आँचल से डिब्बा निकाल राधा को देते हुए कहा, "इसमें मेरा सब पता इत्यादि लिखा है। यदि जीवित रही तो कल सब बताऊँगी।"

"तो बच्चा पैदा करने पर औरत मर भी जाती है?" राधा ने विस्मय में पूछा।

वह स्त्री पलँग पर लेट गई थी और बोली, "यहाँ कोई दाई भी होगी?"

"यहाँ तो बस मैं ही हूँ।"

"तो बहन भटियारिन! मैं अब तुम्हारे हवाले हूँ।" उसे पुनः पीड़ा हुई।

मंगतू दूध लाया तो उस स्त्री ने दो घूँट गरम-गरम दूध पिया और बच्चे को जन्म दे दिया। राधा रात-भर उसके पास रही।

बच्चा लड़की थी। पैदा होते ही वह बहुत सुंदर प्रतीत हुई थी, इस कारण उसका नामकरण 'सुंदरी' कर दिया गया।

माँ को बच्चा होने के उपरांत ही ज्वर होने लगा। पहले यह समझा गया कि थकावट के कारण है, परंतु जब ज्वर उतरा नहीं तो गाँव से वैद्य को बुलाया गया। वह औषधि दे गया। परंतु ज्वर तो रोगी की मृत्यु के उपरांत ही उतरा।

मरने तक राधा उससे उसके घर और घरवालों का नाम-धाम पूछती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रही, परंतु उस स्त्री ने नहीं बताया। बच्चा होने के सातवें दिन प्रसूता ने प्राण त्याग दिए और सुंदरी राधा की लड़की के रूप में पलने लगी।

एक दिन रामकृष्ण ने पत्नी को कहा, ''इस सुंदरी की माँ का पता करना चाहिए। वह डिब्बा खोलकर देखा जाए।''

वह स्त्री मरने से पूर्व राधा को एक डिब्बा दे गई थी। राधा ने वह डिब्बा अपने संदूक में से निकाला और खोलकर देखा तो उसमें कुछ जड़ाऊ भूषण थे। भूषणों में नग बहुत चमक-दमक वाले थे। इससे रामकृष्ण को समझ आया कि भूषण रत्न-जड़ित हैं। अवश्य बहुत मूल्यवान् होंगे। भूषणों के साथ एक सौ स्वर्ण मुद्राएँ थीं और साथ एक कागज था जिस पर कुछ लिखा था जो घर का कोई भी प्राणी पढ़ नहीं सका।

एक दिन वह लिखा कागज ले गाँव में गया और वहाँ पंडित को ढूँढ़ उससे वह कागज पढ़ने के लिए कहने लगा।

कागज पर लिखा था, ''मैं घर से भागी जा रही हूँ। मेरे पेट में बच्चा मेरी अवैध संतान है। मैं विधवा हूँ और गर्भ धारण कर बैठी हूँ।

''मैं नाम नहीं बताऊँगी। जिस किसीको यह संदूकची मिले वह उससे, यदि मेरा बच्चा जीवित रहा तो, उसका पालन-पोषण करे। यह मेरी अंतिम इच्छा है। मेरी लज्जा की बात मेरे बच्चे को न बताई जाए। उसे कहा जाए कि उसकी माँ जन्म देने के उपरांत बिना पता बताए मर गई है।''

रामकृष्ण ने तीन भाइयों में एक उनकी बहन समझ सुंदरी का पालन-पोषण करना आरंभ कर दिया।

सुंदरी बहुत सुंदर और बुद्धिशील लड़की सिद्ध हुई। मोहन आदि तो उसके सामने बहुत ही मोटी बुद्धिवाले जीव थे। लड़की कुमारी के पेड़ की भाँति बढ़ने और फैलने लगी। जब अभी सुंदरी चौदह वर्ष की थी कि एक यात्री की उस पर दृष्टि पड़ गई और वह उससे विवाह का हठ करने लगा।

विवाह हो गया और यात्री एक रात सराय में सुंदरी के साथ रहकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपने घर आगरा चला गया। वहाँ से वह नहीं लौटा। जाते समय वह सुंदरी को अपना पारिवारिक चिह्न एक अँगूठी दे गया था। उसने सुंदरी को एक स्वर्ण मुद्राओं की थैली भी दी थी। सुंदरी अपने कमरे में यह सब रखे हुए अपने पति की प्रतीक्षा करती हुई अकबर की दृष्टि में चढ़ी तो वह उसका अपहरण कर ले गया।

इस समय तक मोहन और भगवती युवा और विवाहित हो गए थे। वह हृष्ट-पुष्ट थे और अब अस्त्र-शस्त्र धारण कर सराय की रक्षा करते थे। तीसरा बच्चा कल्याण अकबर की सेना में भरती हो आगरे में रहता था। सराय में अब चार सेवक थे और सब तलवार लेकर सराय की रक्षा करते थे।

जब सुंदरी ने हल्ला किया तो सेवक और रामकृष्ण के लड़के तलवारें ले सराय से निकले, परंतु अकबर की आज्ञा से उसके साथी भाग खड़े हुए। सुंदरी अकबर के आगे घोड़े पर दबोचकर ऐसे पकड़ी हुई ले जाई जा रही थी जैसे किसी बाज के चंगुल में चिड़िया।

सुंदरी छटपटाती रही और अकबर सरपट घोड़ा दौड़ाता हुआ जा रहा था। करीमखाँ ने समीप चलते हुए कहा, ''जहांपनाह! हुक्म हो तो इन काफिरों को दो-दो हाथ दिखा आऊँ। वे गाली दे रहे हैं।''

''बेवकूफ हैं। हमें फल खाने से मतलब है या बगिया उजाड़ने से?''

सरायवाले पैदल होने के कारण पीछे रह गए और अकबर के साथियों ने नगर चैन पर पहुँचकर दम लिया।

सुंदरी शोर मचाती-मचाती हताश हो चुप कर चुकी थी।

3

नगर चैन के महल में पहुँचते ही अकबर ने हुक्म दिया, ''इस लड़की को गुसल करा साफ-सुथरे वस्त्र पहना, शृंगार कर हमारे साथ खाने पर लाया जाए।''

अकबर स्वयं आराम करने चला गया। नगर चैन की मुहाफिज एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रौढ़ावस्था की स्त्री थी। वह सुंदरी को बाँह से पकड़कर गुसलखाने में ले गई। वहाँ दो स्त्रियों की सहायता से सुंदरी के कपड़े उतार उसे साबुन, उबटन लगा स्नान कराया गया। उसके बदन पर से भटियारिन की भट्टी की कालख उतारी गई। उसे इत्र, तेल लगाया गया और फिर सुंदर जरीदार वस्त्र पहनाए गए।

जब इस प्रकार सुंदरी को बलि के लिए तैयार किया गया तो मुहाफिज स्त्री ने कहा, ''तुम तो गजब की खूबसूरत हो।''

सुंदरी ने कहा, ''पर माँ! मेरी तो शादी हो चुकी है।''

''किससे?''

सुंदरी मुख देखती रह गई। वह अपने पति का नाम-धाम नहीं जानती थी। उसने बहाना बना दिया, ''हम हिंदुओं में अपने पति का नाम नहीं लेते।''

''वह कहाँ रहता है?''

''आगरा में रहता है। मेरा गौना कुछ ही दिनों में होनेवाला है।''

''तो हो जाएगा। जानती हो कि तुम्हें यहाँ कौन लाया है?''

''नहीं।''

''शहंशाह-ए-हिंद जलालुद्दीन अकबर! नाम सुना है कभी?''

''सुना है। मगर क्या उन्हें एक भटियारिन लड़की से अच्छी लड़की और नहीं मिली?''

''तुम जहाँ की औरतों में सबसे ज्यादा खूबसूरत हो।''

''मगर एक शादीशुदा औरत के साथ तो उनका सहवास महा पाप हो जाएगा।''

''शहंशाह के लिए सब जायज़ है।''

सुंदरी अपने अज्ञात पति के साथ सहवास कर चुकी थी। इससे वह समझती तो थी कि उससे क्या किया जानेवाला है। परंतु वह पति के उस रात के उपरांत पुनः उसकी सुध न लेने पर निराश और उदास थी। इससे वह समझ नहीं रही थी कि उसकी अवस्था तदनंतर क्या होगी। क्या उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजमहल में स्थान मिलेगा अथवा अपने पति की भाँति त्यक्ता ही रहेगी।

जब शहंशाह दो घंटे विश्राम कर चुके तो सुंदरी को उनके समक्ष उपस्थित किया गया। अकबर उसे इन वस्त्रों में तथा शृंगारयुक्त देख बहुत प्रसन्न था।

"क्या नाम है ?" अकबर ने पूछा।

"सुंदरी।"

"ओह ! तुम सचमुच ही बहुत सुंदर हो।"

लड़की अभी भी सामने खड़ी थी। अकबर पलंग पर बैठा था। नगर चैन की मुहाफिज स्त्री को संकेत किया गया तो वह सुंदरी को वहाँ छोड़ कमरे से निकल गई।

अकबर ने मुस्कराते हुए पूछा, "अब रोओगी तो नहीं ?"

"हुजूर ! मेरा क्या करने जा रहे हैं ?"

"तुम्हारा विवाह।"

"वह तो हो चुका है।"

"सच ? किससे ?"

"नाम नहीं बता सकती। आगरा में रहता है।"

"कोई भटियारा है ?"

"नहीं। वह कहता था कि एक बहुत बड़े रईस का पुत्र है।"

"और तुमको चने भूनने पर लगा गया था ! देखो, हम तुम्हें राजरानी बना देंगे।"

"मगर यह तो पाप होगा।"

"वह एक घूँट शराब से घुलकर बह जाएगा।"

"हुजूर ! मुझ पर दया की जाए।"

"वही करने जा रहा हूँ। तुमको मालामाल कर दूँगा।"

"धर्म से पतित कर ?"

"वह क्या होता है ?"

"पंडित जी ने विवाह करते समय कहा था कि परमात्मा ने हमें पति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167942
Gurukul Kangri (Deemed to be University) Haridwar
R 089.914 GUR-P
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पत्नी बना दिया है। अब हमें एक-दूसरे से प्रेमपूर्वक बरतना चाहिए।''

अकबर ने कुछ विचार किया और कहा, ''वह तुम अब भी रह सकोगी। हम इसमें हारिज नहीं होंगे।''

लड़की संस्कारों से ही जानती थी कि सहवास ही प्रेम का लक्षण है। परंतु कुछ कहने का अवसर नहीं था। बाहर घंटी बजी तो अकबर पलँग से उठा और लड़की को बाँह से पकड़कर बोला, ''चलो, खाना खा लें। खाने के बाद दिमाग ठीक तरह चलने लगेगा।''

उसे पकड़कर खाने के कमरे में ले जाया गया। दस्तरखान बिछा था और दोनों के लिए चौकियों पर चाँदी के थालों में खाना परोसा हुआ था। कई प्रकार की सब्ज़ियाँ, मांस और पुलाव थे और उनमें से धीमी-धीमी सुगंध उठ पूर्ण कमरे में फैल रही थी। सुगंध से ही सुंदरी के मुख में लार टपकने लगी थी। एक गंगा-यमुनी सुराही दोनों थालों के बीच में रखी थी और दो सोने के प्याले थालों के पास रखे थे।

यह सब कुछ सुंदरी के लिए नया और स्वप्नवत्-सा था। अपने पति के साथ बातचीत करने से इतना तो समझ चुकी थी कि उसकी ससुराल में भटियारिन की सराय से बहुत अच्छा खाना और पहरावा मिलेगा, परंतु इस समय के अपने वस्त्रों और खाने के बरतन तथा खाने की भीनी-भीनी सुगंध से वह उस कल्पना को भूल गई थी जो वह अपने पति के घर की बना चुकी थी।

अकबर ने उसे बैठने को कहा तो वह बैठ गई। उसने सुंदरी के प्याले को सुराही में से मदिरा निकालकर भर दिया। स्वयं एक-आध चुस्की लगा उसने कहा, ''सुंदरी! थोड़ा यह शरबत चखो। फिर खाने का स्वाद आ जाएगा।''

सुंदरी ने किंचित् हरे रंग का शरबत चखा। वह उसके स्वाद और सुगंध पर मुग्ध हो गई। पीते ही उसका चित्त प्रफुल्लित होने लगा। दोनों खाना खाने लगे।

सुंदरी तो यह भी नहीं जानती थी कि क्या और किस प्रकार खाया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाता है। लेकिन वह इतनी बुद्धि रखती थी कि शहंशाह को देख-देखकर वैसा ही करे। जो और जैसे वह खाता था वैसे ही वह खाने लगी।

खाना समाप्त होने तक उसे अपना भूत विस्मरण हो चुका था। वर्तमान अति रसयुक्त प्रतीत हो रहा था और भविष्य के वह स्वप्न लेने लगी थी। राजरानी का शब्द उसके कानों में अभी भी गूँज रहा था।

भोजन समाप्त हुआ और अकबर उसकी बाँह को अपनी बाँह में डाल शयनागार में ले गया।

प्रातःकाल अकबर उठ वस्त्रादि पहन आगरा चला गया। सुंदरी अभी भी गहरी नींद सो रही थी। वह पिछले पंद्रह वर्ष के परिश्रम की थकावट उतार रही प्रतीत होती थी।

जब उसकी नींद खुली तो वह अवस्त्र बिस्तर पर चादर में लिपटी पलँग पर अकेली पड़ी थी। कमरे में कोई नहीं था। इस कारण वह रात के सुख और आराम को स्मरण कर रही थी। इस समय उसे समझ आया कि वह सर्वथा नग्न है। इस विचार कें आते ही वह लपककर पलँग से नीचे उतर सामने चौकी पर रखे वही वस्त्र पहनने लगी जो उसे रात पहनाए गए थे।

उसके उठने और हिलने-डोलने से नगर चैन की मुहाफिज़ भीतर आ गई और पूछने लगी, "जाग पड़ी हो?"

"हाँ! मगर....", वह पूछना चाहती थी कि उसके पलँग का साथी कहाँ गया है।

मुहाफिज़ औरत समझ गई और बोली, "शहंशाह तो आगरा अपना राजपाट सँभालने गए हैं। फुरसत मिलने पर आने को कह गए हैं। तब तक तुम्हें यहाँ रखने और सब किस्म का सुख और आराम देने के लिए हुक्म फरमा गए हैं।"

"और अम्मी! तुम्हारा क्या नाम है?"

"बस यही जो तुमने अभी लिया है।"

"क्या लिया है?"

"अम्मी! मैं इस घर में अम्मी ही हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और घर में कौन-कौन है?"

"एक दर्जन से ज्यादा नौकर-चाकर और रक्षक हैं। दो नौकरानियाँ भी हैं।"

"और मैं अपने घर जा सकती हूँ क्या?"

"वह कहाँ है?"

"भटियारिन की सराय में।"

अम्मी हँस पड़ी। हँसते हुए बोली, "तुम अब ससुराल में आ गई हो। ससुराल से मायके में कोई जाना नहीं चाहता।"

"मगर भैया मोहन और भगवती की पत्नियाँ तो अपने मायके जाती हैं।"

"वे हिंदू हैं। मुसमलान की बीवी अपने माँ-बाप के घर नहीं जा सकती।"

"सच?"

"हाँ? और खास तौर पर शहंशाह की बीवी।"

"मगर मेरी उनसे शादी नहीं हुई।"

"हो गई है। रात शादी ही तो हुई है।"

दिन पर दिन व्यतीत होने लगे। न तो उसके घर से राधा, मोहन इत्यादि का कोई समाचार आया और न ही शहंशाह फिर उसके पास आया।

4

सुंदरी को नगर चैन में रहते हुए दो मास व्यतीत हो चुके थे। इन दो महीनों में उसको एकाकी जीवन व्यतीत करते हुए भी सराय के जीवन से अधिक सुखप्रद समझ आ रहा था। यद्यपि भविष्य के विषय में वह अनिश्चित थी, परंतु वर्तमान से सर्वथा संतुष्ट थी। एक दिन उसको वहाँ की अम्मी ने बताया कि वह मुक्ताहार जो उसे मिल चुका है, दस सहस्र रुपए का है। ये कंगन दो-दो सहस्र रुपए के हैं। यह कुर्ता और सलवार का कपड़ा बीस रुपए गज़ का है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस कमरे में वह सोती थी वहाँ शहंशाह की तस्वीर लगी थी। वह उसके साथ एक रात रह गया था। वहाँ खाने-पीने और सोने के अतिरिक्त करने को अन्य कुछ नहीं था। इस स्थान पर यदि कुछ खटकता था तो वह बेकार रहना था।

नगर चैन में एक प्रांगण था। उसमें उद्यान था और घनी छायावाले पेड़ थे। फूलों की क्यारियाँ थीं। जो दो, अम्मी के अतिरिक्त औरतें वहाँ थीं उनमें से एक मालिन थी जो उस उद्यान की देखभाल करती थी। वह वयस् में सुंदरी के अधिक समीप थी और सुंदरी जब बाग में होती तो उससे बात करने आ जाया करती थी। उसका नाम था मीना।

एक दिन वह बाग में टहलने आई तो मालिन उसके पास आ गई और मुस्कराते हुए सुंदरी की ओर देखने लगी। सुंदरी ने उसे मुस्कराते देखा तो पूछ लिया, "मीना! बहुत खुश हो आज?"

"हाँ!"

"क्या बात है?"

मीना ने अंटी से एक अँगूठी निकाल दिखाकर कहा, "देखो बहन, इसे पहचानती हो?"

सुंदरी ने देखा। यह वही अँगूठी थी जो उसका विवाहित पति उसे दे गया था और जिसे वह अपनी माँ भटियारिन राधा के पास रखे हुए थी।

"कहाँ से पा गई हो यह?"

"यह किसकी है?" मीना ने पूछा।

"मेरी है। मेरे पति ने मुझे दी थी और मेरी माँ के पास रखी थी।"

"तो बस उसी ने दी है।"

"किसलिए दी है?"

"सुंदरी को दिखाने के लिए।"

"परंतु मैं इसके योग्य नहीं रही। मैं पतित हो चुकी हूँ।"

"मैंने देनेवाले को बताया था। वह कहता था कि वह तुम्हें पवित्र कर लेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर वह इतने दिन तक कहाँ था?"

"कहता था कि मिलने पर बताएगा।"

"तो मिल ले।"

"यहाँ तुमसे मिलते यदि किसी ने देख लिया तो उसे फाँसी पर लटका दिया जाएगा।"

इस संभावना को सुन सुंदरी काँप उठी। कुछ विचार कर बोली, "तो उसे कह दो, मुझे भूल जाए।"

"वह तुमको यहाँ से ले जाना चाहता है।"

"कैसे ले जाएगा?"

"वह जानना चाहता है कि तुम उसकेसाथ चलने को तैयार हो?"

"चलने को तो तैयार हूँ, मगर मरने के लिए नहीं।"

"तो उसे कह दूँगी।" मीना ने कहा और अँगूठी सुंदरी के सामने रखते हुए बोली, "तो यह ले लो।"

"क्यों?"

"यह तुम्हारी है।"

"मैंने इस पर अपना हक छोड़ दिया है।"

मीना ने न तो हाथ और अँगूठी पीछे की और न ही वह वहाँ से गई। सुंदरी ने पूछा, "अब क्या चाहती हो?"

"सुंदरी बहन! यह ले लो। पंडित ने परमात्मा के सामने तुम्हें दिलवाई है। इसे लेने से इनकार कैसे कर सकती हो?"

"मगर लेने का अर्थ यह है कि मैं उसके साथ जाने को तैयार हूँ।"

"तो तुम तैयार नहीं हो?"

"मुझे उसके साथ जाना चाहिए?"

"वह बहुत ही भला युवक प्रतीत होता है।"

"शहंशाह से भी अधिक?"

"शहंशाह तो कभी भले होते ही नहीं। तुमसे पहले यहाँ बीसियों आ चुकी हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और वे कहाँ हैं ?"

"कुछ तो आगरा के महलों में खिदमतगारिन बन गई हैं। कुछ सैनिकों में बाँट दी गई हैं और दो-चार को उस पेड़ से फाँसी लटका दिया गया था।"

"और राजरानी नहीं बनाया ?"

"शहंशाह की तीन बेगमें पहले हैं। उनमें एक रकिया बेगम है। वह सबसे बड़ी बेगम है, मगर बाँझ है। इस पर भी वह राजमहल में सब बेगमों से अपने जूते साफ करवाया करती है। जो नहीं करती वह किले की बुर्जी पर चढ़ाकर तीस गज नीचे भूमि पर धकेल दी जाती है और इस तरह मार डाली जाती है।"

"तो फिर ?"

"इस भले आदमी के साथ भाग जाओ।"

"कैसे ?"

"जैसे वह कहे।"

सुंदरी इन सब भयानक संभावनाओं को सुन काँप उठी। उसके माथे पर पसीने की बूँदें चकमने लगीं। इस पर मीना ने कहा, "तो यह अँगूठी ले लो। इसका मतलब है कि तुम अभी भी अपने को उसकी बीवी मानती हो। तब वह अपनी बीवी को कैद से छुड़ाने के लिए अपनी जान की बाजी लगा देगा।"

सुंदरी ने अँगूठी उठा दाहिने हाथ की बीच की अँगुली में पहन ली।

मीना ने दीर्घ श्वास लिया और बोली, "कल मिलूँगी। इस विषय में किसी को कुछ मत बताना।"

सुंदरी जो स्वप्न ले रही थी राजरानी बनने के, वे विलीन हो गए। उसे समझ आ गया कि एक भटियारिन की लड़की राजरानी तो नहीं, वरन् राजमहल की नीच दासी बन सकती है। दूसरा विकल्प जो मीना ने बताया था कि किसी सैनिक को तोहफे के तौर पर वह दे दी जाएगी। यह तो पहले से भी अधिक भयंकर था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा विकल्प था, वहाँ से भाग जाए और भागती हुई पकड़ी जाए तो सामने के पेड़ से फाँसी लटका दी जाए। वह मन में विचार करती थी कि यह राज्य है क्या? परमात्मा ने ऐसे व्यक्ति को राजा क्यों बनाया है? वह अपनी बाल-बुद्धि से इस सबका रहस्य समझ नहीं सकी।

इस पर अपने पति की उसे पुनः अपने घर में स्थान देने की बात उसके मन में गुदगुदी उत्पन्न करने लगी थी। दिन-भर और रात-भर वह अपने विचारों में खोई-खोई अनुभव करती रही।

तीसरे प्रहर अम्मी आई और उसे चिंतित देख पूछने लगी, ''सुंदरी! क्या बात है? आज बहुत उदास मालूम होती हो।''

''हाँ, अम्मी! मैं सोने की हथकड़ियों और बेड़ियों से खूँटे से बँधी महसूस करती हूँ।''

''यह तो बीबी, सब औरतों की किस्मत में लिखा है। देखो, आदमी कई-कई बीवियाँ रखता है और औरत यदि खाविंद के अलावा किसी दूसरे की तरफ आँख भी उठाकर देख ले तो उसकी आँखें निकाल दी जाती हैं।''

''सच! अम्मी! तुमने किसी की आँखें निकाली जाती देखी हैं?''

''आँखें निकाली जाती तो नहीं, मगर उस पेड़ से, जो प्रांगण के दक्षिण में है, फाँसी चढ़ाई जाती तो कितनों को ही देखा है।''

''क्यों? किस कसूर पर?''

''नगर चैन के किसी सिपाही से मोहब्बत करते पकड़ी जाने पर।''

''और अगर जो मुझे यहाँ लाया है, वह सालों-साल तक दर्शन न दे तो क्या होगा?''

''वह शहंशाह है। उसको बहुत काम रहते हैं। उसे कोई नहीं कह सकता कि वह इधर जरूर आए।''

''बस यही मेरी उदासी की वजह है।''

''देखो बेटी! औरत के लिए सब्र और इस्तिक्लाल से इंतज़ार करने के अलावा कोई चारा नहीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुंदरी चुप रही। अम्मी ने ही बताया, "एक बार एक सिपाही यहाँ की किसी खूबसूरत शै को चुराकर भागता हुआ पकड़ा गया तो उसको उसी समय उसी पेड़ से लटाकाकर फाँसी दे दी गई।"

"बहुत जालिम हैं यहाँ के लोग।"

"यह यहाँ का कायदा है।"

अगले दिन अम्मी ने बताया, "सुंदरी! मैं एक दिन रात की छुट्टी पर जा रही हूँ और जमादार को कहकर जा रही हूँ। वह तुम्हारी रखवाली करेगा।"

"मेरी क्या रखवाली करेगा? पिछले दो महीने से तो यहाँ किसी प्रकार के भय की बात हुई नहीं। आज ही क्यों होगी?"

"यह यहाँ का कायदा है। जो कुछ मैं करती थी, वही अब एक दिन के लिए जमादार करेगा।"

"ठीक है। करने दो।"

अम्मी के नगर चैन से जाने के दो घड़ी बाद मीना आई। वह पहले कभी कमरे में नहीं आती थी। आज कमरे में आई तो सुंदरी ने उसकी ओर प्रश्न-भरी दृष्टि से देखा। मीना ने कह दिया, "आज सुंदरी बहन बाहर बाग में नहीं आई। इस कारण मुझे यहाँ आना पड़ा है।"

"हाँ, तो क्या खबर लाई हो?"

"आधी रात के एक घड़ी बाद उस टट्टीखाने में चली जाना और जो कोई वहाँ मिले और जो वह कहे, वही करना। भगवान तुम्हारी रक्षा करेगा।"

नगर चैन में घड़ियाल खड़काकर समय का ज्ञान कराया जाता था। प्रति घंटा तो समय के अनुसार घड़ियाल बजता था और प्रति घड़ी के उपरांत एक दूसरा घड़ियाल बजता था जिसकी आवाज घंटोंवाले घड़ियाल से अधिक हल्की और मीठी होती थी। अतः सुंदरी ने मीना की सूचना सून ली, समझ ली।

मीना यह कह कमरे से निकल गई। वह डर रही थी कि कोई उसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमरे में सुंदरी से बात करते देख न ले।

सुंदरी ने इस कैद से निकलने का निश्चय कर लिया था। वह भय की सीमा का ज्ञान होने पर भी वहाँ से भागने के लिए तड़पने लगी थी। उसकी इच्छा माता-पिता से मिलने की प्रबल हो गई थी।

मध्य रात्रि का घंटा बजा और तब वह घड़ी की घंटी बजने की प्रतीक्षा करने लगी। वह बेचैन हो रही थी और उसे भय लग रहा था कि कहीं नींद की झपकी में समय न निकल जाए और उसे लेने के लिए आनेवाला निराश हो लौट न जाए। एक घड़ी का समय व्यतीत होने में ही नहीं आता था।

आखिर वह अपनी बेचैनी को रोक नहीं सकी। उसे समझ आया कि घंटी बजानेवाला कहीं सो गया है। वह समय से पूर्व ही निकल दीवार के साथ-साथ चलती हुई प्रांगण के पिछवाड़े में जा पहुँची। टट्टीखाने का दरवाजा दबाया तो वह खुल गया। इसके पीछे का दरवाजा खुला था और एक व्यक्ति वहाँ अँधेरे में खड़ा था।

अब उसे भय लग गया कि वह कहीं समय से पूर्व ही आ गई है। इस कारण वह वापस लौटनेवाली थी कि घंटी बजी और वह लौटती-लौटती रुक गई। इसी समय पिछले खुले दरवाज़े से किसी ने झाँककर धीरे से कहा, ''बीबी! चली आओ।''

यह उसका पति नहीं था। आवाज से कोई बूढ़ा व्यक्ति मालूम होता था। सुंदरी बाहर निकलने से झिझकती थी। इस पर उस व्यक्ति ने पुनः कहा, ''डरो नहीं। चली आओ। देर मत करो।''

सुंदरी का सिर चक्कर खाने लगा था। परंतु इतनी दूर आने के बाद लौटना न तो उचित प्रतीत हुआ और न ही संभव।

वह टट्टीखाने के पिछले द्वार से, जो भंगी के आने के लिए बना था, निकल गई।

इस पर उस व्यक्ति ने कहा, ''अँधेरा है। मेरे कंधे पर हाथ रख चली आओ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार अँधेरे में एक सौ गज तक चलना पड़ा और एक जानी-पहचानी आवाज ने कहा, "सुंदरी, मैं निरंजन देव हूँ, चली आओ।"

"कौन?" यह नाम उसे विदित नहीं था। इस पर भी वह आवाज पहचान गई थी कि उसका पति है।

वह अब उसकी बाँह पकड़ उसके पीछे-पीछे चलने लगी। पहला व्यक्ति वहीं खड़ा रह गया।

सुंदरी ने पूछा, "और वह कौन था?"

"नगर चैन का एक सफाई करनेवाला दारोगा था।"

"ईश्वर का धन्यवाद है कि आपके मन में दया आ गई है।"

"तनिक ठहरो। सब बताता हूँ।"

लगभग पाँच सौ गज और चलना पड़ा कि ये एक सड़क पर पहुँच गए। वहाँ एक इक्का खड़ा था। इक्के पर कोचवान नहीं था। सुंदरी के साथी ने कहा, "इस पर चलना होगा।"

सुंदरी लपककर इक्के पर चढ़ गई। निरंजन देव कोचवान के स्थान पर बैठ गया और घोड़ों को हाँकने लगा। घोड़े सरपट दौड़ने लगे।

5

जिस दिन सुंदरी का अपहरण हुआ था, सराय में सब प्राणियों में हलचल मची रही। उस समय कुछ यात्री भी वहाँ ठहरे हुए थे। सब सराय के फाटक पर खड़े दूर भागते घोड़ों से उड़ती धूल को देखते रह गए। सब सुंदरी की 'बचाओ-बचाओ' की पुकार सुन वहाँ एकत्रित हुए थे। रामकृष्ण के दोनों लड़के, लोहार और रामकृष्ण स्वयं भी तलवार ले वहाँ आए थे। परंतु घोड़ा किसी के पास नहीं था। यदि होता भी तो शहंशाह के साथ आधा दर्जन लड़ने-मरने के लिए तैयार सिपाही थे।

एक यात्री जो कोई सैनिक राजपूत था, सराय के मालिक से पूछने लगा, "यह तुम्हारी बेटी थी?"

"हाँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''मालूम नहीं होती थी। तुम घर के सब लोग बड़े कुरूप प्रतीत होते हो और वह तो अति सुंदर थी। मैंने उसे आज रात अपने कमरे में आने का निमंत्रण दिया था और उसे एक रुपया देने का वचन दिया था।''

''तो उसने क्या कहा था?'' एक अन्य यात्री ने पूछ लिया।

''कहती थी कि उसका विवाह हो चुका है। किसी दूसरे की सोहबत में जाना पाप है।''

बात लोहार ने चलाई। उसने कहा, ''वह घोड़े को नाल लगवानेवाला बता रहा था कि घोड़ा शहंशाह अकबर का है।''

''तो शहंशाह ने उसका अपहरण किया है?'' वही सिपाही बोला जो सुंदरी को अपनी कोठरी में आने का निमंत्रण देने की बात कह रहा था।

इस सूचना से तो सब निराश भीतर लौट आए। राधा दुकान पर जा पहुँची और मोहन, भगवती अपने-अपने कमरे में जाने लगे तो उसी राजपूत सिपाही ने कहा, ''इस आग को यहाँ इस वीरान सराय में क्यों रख छोड़ा था? कोई भी उसका अपहरण कर सकता था।''

रामकृष्ण ने अपनी सामान्य बुद्धि से बात कह दी, ''यदि राजा ही डाका डालने लगे तो परमात्मा ही हम गरीबों की रक्षा कर सकता है।''

''परमात्मा ने ही तो अकबर को राजा बनाया है।''

''नहीं जी।'' उस यात्री ने कहा जिसने सिपाही से पूछा था कि सुंदरी ने उसके प्रस्ताव का क्या उत्तर दिया था। उसने राजपूत सिपाही की ओर देखकर कहा, ''कभी चोर-डाकू भी कुछ काल के लिए राजा बन जाते हैं। यह तब ही होता है जब गाँव अथवा नगर के लोग डाकुओं का विरोध नहीं कर सकते।''

''यह बेचारा सरायवाला कैसे विरोध करता?'' अभी भी राजपूत ने ही कहा। इस समय सब सराय में एक पेड़ के नीचे आ खड़े हुए थे। मोहन, भगवती, लोहार और तीन-चार यात्री थे। कुछ अंतर पर मोहन और भगवती की पत्नियाँ और सराय की सेविका खड़ी समझने का यत्न कर रही थी कि क्या हो गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरे यात्री ने कहा, ''यह सरायवाले अथवा प्रजा का काम नहीं। यह तो प्रजा पर राजा बनानेवालों का काम था। प्रजा उनको कर देती है और उस कर लेनेवाले को ही प्रजा को इन चोर-डाकुओं से बचाने का प्रबंध करना चाहिए।''

राजपूत सिपाही ने कंधों को झटका दे असंतोष प्रकट किया और अपनी कोठरी की ओर चल दिया।

सायंकाल तक सराय में सब शांत हो गए। दुकान बंद कर राधा भीतर अपने पति के पास आई तो गंभीर विचार में निमग्न अपने पति को देख बोली, ''भगवान का धन्यवाद है कि हम सब कुरूप हैं।''

रामकृष्ण ने विस्मय में कह दिया, ''यही बात तुमने तब कही थी जब वह निरंजन सुंदरी से विवाह का प्रस्ताव करने आया था।

''और जानती हो, मैंने क्या कहा था। मैं भी उस दिन ईश्वर का धन्यवाद कर रहा था जिस दिन मैं अपने गाँव से अकेला यहाँ वीराने में कुएँ की जगत पर रात गहरी नींद सोता रहा था। मैं भी कहता था कि ईश्वर का धन्यवाद है कि मेरे पास एक भी पैसा नहीं जो चोर-डाकू लेने आएगा।

''मगर भाग्यवान! अगले ही दिन मैं यत्न करने लगा था कि मेरे पास धन-दौलत एकत्रित हो। पहले एक वर्ष मैंने अकेले ही घोर परिश्रम किया था।

''तब चोर-डाकू से डर नहीं था। अब हमारे कोष में पाँच सहस्र स्वर्ण मुद्राएँ हैं। अब मैं कभी नहीं कहता कि ईश्वर का धन्यवाद इस कारण है कि मैं निर्धन हूँ और कोई चोर-डाकू इसे लूटनेवाला नहीं आएगा। अब तो मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उसने मुझे बल और बुद्धि दी है कि मैंने यह सब कुछ निर्माण कर लिया है।''

''परंतु सौंदर्य तो परिश्रम से पैदा नहीं हो सकता।''

''उस दिन पुरोहित जी सुंदरी को देखकर ही बता रहे थे कि पुण्यकर्मों के फल से ही वह इतनी सुंदर मुझ कुरूप के घर उत्पन्न हो गई है।

''मैं मन में विचार कर रहा था कि वह हमारे घर में तो पैदा नहीं हुई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस पर भी सुंदर तो है। पूर्वजन्म के कर्मों से ही हैं। मैं भी नित्य परमात्मा से प्रार्थना किया करता हूँ कि मुझे अगले जन्म में अति सुंदर और ओजस्वी शरीर मिले।''

''परंतु अब अकबर जैसा कोई आपका भी अपहरण कर लेगा।''

''इस पर भी मैं सुंदर होना चाहता हूँ जैसे चोर-डाकुओं के भय पर भी धनी होने की इच्छा और प्रयत्न किया था।''

''परंतु परमात्मा को दिए धन की और सौंदर्य की रक्षा भी करनी चाहिए।'' राधा ने निराशा से उद्विग्न होने के कारण कह दिया।

''वही यात्री जो कह रहा था कि हमसे कर लेते हैं, उन्हींको हमारी रक्षा करनी चाहिए थी, पीछे बता रहा था कि उन लोगों ने हमारी सहायता का यत्न किया था, परंतु भूल यह हुई कि समय पर रक्षा की तैयारी नहीं की थी। हम प्रजा के लोगों से धन बटोरते रहे और वह सब धन अपने भोग-विलास में व्यय करते रहे। देश और जाति की रक्षा का उचित प्रबंध नहीं किया था।

''जहाँ बाबर के पास तोपें थीं वहाँ हमारे देश के राजपूतों के पास केवल तलवारें थीं। यहाँ के राजाओं ने युद्ध की तैयारी नहीं की थी। वे भूल गए कि युद्ध जीतने के लिए शांति के काल में तैयारी की जाती है।''

राधा इनती गूढ़ बात को समझ नहीं सकी थी। इससे मौन रही। समय व्यतीत होता गया। एक दिन वही युवक आ पहुँचा जिससे सुंदरी का विवाह किया गया था।

विवाह के दिन भी यह युवक एकाएक ही आया था और रामकृष्ण से बोला, ''बाबा! सुंदरी का विवाह कर दो।''

''किससे?'' रामकृष्ण का प्रश्न था।

''मुझसे?''

''और तुम कौन हो?''

''आगरा के एक जौहरी का लड़का हूँ। तुम्हारी लड़की को आभूषण से लाल-पीली कर दूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकृष्ण को संदेह हुआ तो पूछने लगा, "सुंदरी से भी बात की है?"

"हाँ। आज से दस दिन पूर्व मथुरा से आ रहा था तो कुएँ पर जल पीने ठहरा था। तुम जल पिला रहे थे। जल पीते हुए मेरी दृष्टि तुम्हारी लड़की पर पड़ी तो मैं चने खरीदने उसके पास जा पहुँचा।

"चने लेते हुए मैंने कहा, 'मैं लखपति का बेटा हूँ और तुमसे विवाह करूँगा।'

"उसने मेरे मुख पर देखा और बोली, 'तो मेरे माता-पिता से बात करो। मुझसे क्या कहने आए हो?'

" 'तुम मानो तो उनको राजी कर लूँगा।'

"उसने कहा था, 'जिसके हाथ में वे मेरा हाथ पकड़ा देंगे, मैं उसके साथ चल दूँगी।'

" 'तब ठीक है।' मैं इतना कह उसी दिन आगरा गया और अब उससे विवाह के लिए तैयार होकर आया हूँ।"

"क्या तैयारी कर आए हो?"

"अपनी माँ को राजी कर लिया है। उसने कहा है कि यदि किसी मिट्टी के पुतले को भी बीवी बना ले जाऊँगा तो वह उसे घर पर रख लेंगी। इस कारण अब विवाह करूँगा। फिर आगरा में जाकर पिता को कहूँगा। तब इसे यहाँ से ले जाऊँगा।"

"तो तुम्हारे माता-पिता विवाह पर नहीं आएँगे?"

"बाबा, हम क्षत्रिय हैं। तुम भटियारे हो। परंतु जब एक बार विवाह हो गया तो फिर इनकार नहीं कर सकेंगे। माँ मेरा पक्ष लेगी और मैं अपने पुरोहित को विवाह कराने के लिए साथ लाया हूँ।"

रामकृष्ण मुख देखता रह गया। उसने राधा से सम्मति की। राधा ने मोहन इत्यादि से पूछा। सुंदरी से भी पूछा गया और सायंकाल विवाह हो गया। निरंजन देव अपनी पत्नी के लिए आभूषण और वस्त्र लाया था। विवाह के पूर्व वे उसे पहनाए गए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात में निरंजन सराय में रहा और रात-भर सुंदरी से बातें करता रहा। प्रातः वह दो दिन में लौटने का वचन दे आगरा चला गया।

दो दिन वह नहीं आया तो सुंदरी ने सब कुछ स्वप्नवत् समझ वस्त्र-आभूषण उतार दिए और पुनः दुकान पर भाड़ भुँजने लगी।

निरंजन देव से विवाह हुए दो मास से ऊपर हो चुके थे कि उसका अपहरण हो गया। अब अपहरण हुए भी डेढ़ मास हो चुका था कि एक दिन निरंजन एक इक्के पर सवार भटियारिन की सराय पर पहुँचा और राधा, सुंदरी की माँ, को चनों की दुकान पर बैठे देख वहाँ आ खड़ा हुआ।

राधा ने उसे पहचाना तो पूछ लिया, "किसलिए आए हो?"

"अपनी पत्नी को ले जाने के लिए।"

"तुमने बहुत देर कर दी है। उसका मुल्क के एक बड़े व्यक्ति ने अपहरण कर लिया है।"

निरंजन अवाक् मुख देखता रह गया। इस पर राधा ने अपहरण की पूर्ण कथा सुना दी।

"तो वह अपनी इच्छा से नहीं गई?"

"अपनी इच्छा से जानेवाले का अपहरण किया नहीं कहा जाता। वह शोर मचाती रही। मोहन आदि उसको छुड़ाने के लिए जब तलवारें लिए बाहर निकले तो शहंशाह उसे घोड़े पर लाद अपने साथियों सहित भाग गए।"

"तो मेरे दिए वस्त्र-भूषण भी वह पहने थी?"

"नहीं। जब तुम कहे अनुसार तीन-चार दिन तक नहीं आए तो उसने तुम्हारे दिए वस्त्र-भूषण उतार अपने संदूक में रख दिए थे और भटियारिन के वस्त्र पहन काम करने लगी थी।"

"तो माताजी, वह अँगूठी दे दीजिए जो मैंने उसे दी थी। वह मैंने स्वयं उसकी अँगुली पर पहनाई थी और उसे मैं पहचान के लिए ले जाना चाहता हूँ।"

"किससे पहचान कराओगे?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शहंशाह की हरम में हमारे लोगों की पहुँच है। मैं सुंदरी से संपर्क बनाने का यत्न करूँगा।"

"तो करो। भगवान तुम्हारी सहायता करेगा। हमें भी बताना।"

राधा ने सुंदरी के संदूक से उसकी अँगूठी निकाल निरंजन को दे दी और वह चला गया।

निरंजन ने सुंदरी का पता करना चाहा। उसने हरम की नौकरानियों से मेल-मुलाकात उत्पन्न की। पंद्रह दिन से ऊपर लगे ठीक पता चलने में।

एक खादिमा ने, जो नगर चैन की मुलाज़िमा अम्मी की लड़की थी, निरंजन को बताया कि दो महीने हुए शहंशाह एक मैले-कुचैले कपड़ों में एक भिखारिन को नगर चैन में लाए थे और अभी तक वह वहाँ बंदी के रूप में है।

खादिमा ने यह भी बताया कि एक रात ही शहंशाह उस भिखारिन के पास रहे हैं। फिर यहाँ आने की उनको फुरसत नहीं मिली।

निरंजन देव ने वहाँ की नौकरानियों से संपर्क बनाना आरंभ कर दिया। मीना मिली तो उसे उसने भारी घूस देकर भीतर की सब बात जान ली। तब वहाँ के जमादार और सफाई करनेवाले भंगियों के सरदार से साँठ-गाँठ लड़ाई और सुंदरी को भगाने का सफल प्रयास किया।

6

निरंजन देव जब नगर चैन से कई मील दूर निकल गया तो सुंदरी का भय कम हुआ। जब से वह अपने कमरे से निकली थी वह यही समझ रही थी कि किसी भी समय वह और उसका पति पकड़ लिए जा सकते हैं और फाँसी पर लटका दिए जा सकते हैं। ज्यों-ज्यों नगर चैन पीछे रहता जाता था, उसका भय कम होता जाता था। लगभग एक घंटा-भर इक्के को सरपट दौड़ते हो गया और पीछा करनेवाला कोई नहीं आया तो उसने साहस कर पूछ लिया, "हम किधर जा रहे हैं?"

निरंजन ने घोड़ों को चाबुक लगा भगाते हुए कहा, "अभी मथुरा चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहे हैं। वहाँ घोड़ों को आराम देकर दिल्ली, दिल्ली से मेरठ, सहारनपुर और हरिद्वार।''

''वहाँ किसलिए?''

''तुम्हें गंगा स्नान करा पवित्र कर अपने योग्य बनाने के लिए।''

''तो अब मैं अपवित्र हूँ क्या?''

''न जाने तुमने क्या-क्या खाया है और किस-किससे सहवास किया है?''

''आपके अतिरिक्त केवल अपने अपहर्त्ता से। उसने शराब पिला अर्ध चेतनावस्था में मुझसे व्यवहार किया था।''

''गंगा सब पापों का नाश कर देती है। इसी कारण वहाँ लिए जा रहा हूँ।''

''और मेरे माता-पिता?''

''उनसे भी मिलेंगे। परंतु हरिद्वार से लौटकर।''

नगर चैन में प्रातःकाल जमादार, जो अम्मी के स्थान पर वहाँ का प्रबंध कर रहा था, नगर चैन की सेविका मीना से पूछने लगा, ''हमारा पंछी कैसा है?''

''कौन पंछी?''

''शहंशाह की आखिरी महबूबा।''

''मैं तो अपने घर से आ रही हूँ। आपको मुझसे ज्यादा पता होना चाहिए।''

''मैं तो भीतर जा नहीं सकता। जाओ, पता करो कि उसको कुछ चाहिए?''

मीना भीतर गई तो फौरन ही लौट आई और बोली, ''जमादार! सुंदरी भीतर नहीं है।''

''नहीं है?'' जमादार तमककर उठ खड़ा हुआ और खतरे की घंटी बजा दी। नगर चैन के सब सेवक और सैनिक इकट्ठे हो गए। नगर चैन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का घेरा डाल दिया गया। उसकी तलाशी ली गई और जब सुंदरी का कोई खुर-खोज नहीं मिला तो सूचना आगरा राजमहल में और अम्मी के घर भेजी गई।

मध्याह्नोत्तर अम्मी और करीमखाँ, शहंशाह का निजी अर्दली, आया और सब नौकरों से जिरह होने लगी।

दिन-भर जाँच-पड़ताल से भी जब कुछ पता नहीं चला तो फिर शहंशाह को सूचना भेज दी गई।

अकबर ने कहा, "भटियारिन की सराय का मुहासर: कर लो और उनसे पता करो। उन्होंने ही उसे भगाया है।"

करीमखाँ ने कहा, "जहाँपनाह! मुझे पक्का यकीन है कि नगर चैन के नौकर-चाकरों में से कुछ की यह साजिश है।"

अकबर ने कुछ विचार किया और उसी रात वह नगर चैन में स्वयं पहुँच पूछताछ करने लगा।

जमादार, जो अम्मी के पीछ मुंतजिम था, प्रात:काल फाँसी चढ़ा दिया गया और शेष सब कर्मचारी नौकरी से निकाल दिए गए। करीमखाँ को हुक्म हो गया कि भटियारिन की सराय की तलाशी ली जाए।

सुंदरी के भागने के तीसरे दिन भटियारिन की सराय पर पचास सैनिक पहुँच गए।

पहले तलाशी ली गई और फिर रामकृष्ण तथा राधा इत्यादि से पूछताछ की गई। जब कुछ पता नहीं चला तो करीमखाँ ने सिपाहियों को हुक्म दे दिया, "सराय की जमीन को खोदकर पता करो। कहीं इन्होंने लड़की को किसी तहखाने में न छुपा रखा हो।"

इस आज्ञा का अभिप्राय था कि पूर्ण सराय को बरबाद कर गिरा दिया जाए। नौकर-चाकर वहाँ से भागे। मोहन और भगवती तो अपनी पत्नियों के साथ पहले ही अपनी-अपनी ससुराल को चले गए थे। रामकृष्ण और राधा बंदी के रूप में थे। दोनों के देखते-देखते उनकी सराय की ईंट-से-ईंट बजा दी गई। उनका संचित कोष, सुंदरी की माँ का धन-भूषण और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरंजन देव का दिया सब कुछ लूट लिया गया।

लूट के माल में सुंदरी की माँ का एक गले का हार भी था। उस हार के साथ एक लॉकेट लटक रहा था। उसमें एक नीलम लगा था। करीमखाँ को संदेह हुआ कि उस नीलम के नीचे कुछ रखा है। उसने नीलम उखाड़कर देखा तो एक छोटा-सा कागज का पत्र निकला जिस पर संस्कृत भाषा में कुछ लिखा था।

करीमखाँ वह पढ़ नहीं सका। उसने राधा से पूछा, "यह हार तुम्हारा है?"

"नहीं हजूर। यह सुंदरी की माँ का है।"

"तो तुम उसकी माँ नहीं हो?"

"मेरी सूरत-शक्ल से क्या मालूम होता है?"

करीमखाँ ने ध्यान से राधा को देखा और पूछने लगा, "तो यह लड़की तुम्हारे पास कैसे आई?"

राधा ने पंद्रह वर्ष पूर्व की सब कहानी सुना दी।

करीमखाँ लूट का सामान—रामकृष्ण का संचित कोष, सुंदरी की माँ की वस्तुएँ और निरंजन देव के दिए भूषण लेकर आगरा लौट गया।

आगरा से आए सिपाहियों के चले जाने के उपरांत रामकृष्ण और राधा आँसू बहाते हुए भग्न सराय की ईंट-पत्थरों पर बैठ गए।

जब सब कुछ वहाँ शांत हो गया तो राधा ने पूछा, "अब क्या होगा?"

"पुनः नया जन्म आरंभ होगा। कल से पुनः कुएँ पर बैठ जल पिलाऊँगा और चने बेच-बेचकर जीविका चलाऊँगा।"

"मुझमें तो अब हिम्मत नहीं रही। मैं तो यहाँ से चली जाना चाहती हूँ।"

"कहाँ जाना चाहती हो?"

"जहाँ इतना अन्याय और अत्याचार न हो।"

"वह स्थान भारतभूमि पर तो है नहीं। देखो राधा! तुम्हें कुछ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करना। मुझे रोटी पकाकर खिला दिया करना। मैं कल से ही नया मकान बनाना आरंभ कर दूँगा।''

राधा निराश थी। टूटे खंडहरों की ईंटें पकड़ तकिया बना भूमि पर ही लेट गई। रात हो चुकी थी। यात्री तो सबसे पहले भाग गए थे।

मोहन और भगवती की ससुराल तो समीप गाँव में ही थी। मोहन रात को माता-पिता का समाचार लेने आया।

राधा को किसी के अँधेरे में वहाँ आने का शब्द सुनाई दिया तो वह लपककर उठकर बैठ गई। रामकृष्ण तो गहरी नींद में सो रहा था। राधा ने पूछा, ''कौन?''

''माँ, मैं मोहन हूँ।''

''पत्नी कहाँ है?''

''अपनी माँ के घर में है। उसका बच्चा उसके साथ ही है। भगवती और लक्ष्मी भी गाँव में लक्ष्मी की माँ के घर में हैं। माँ! तुम भी वहाँ चलो।''

''मैंने तुम लोगों को सराय में ठहरे यात्रियों के साथ भागते देखा था। सिपाहियों ने समझा होगा कि तुम लोग भी यात्री हो।''

''माँ! यहाँ तो अब कुछ भी नहीं। यहाँ किसलिए पड़ी हो?''

''अपने पिता से पूछो।''

''परंतु वह तो गहरी नींद सो रहे हैं। उन्हें जगाऊँ?''

''मैं जगाती हूँ।''

राधा ने पति को हिला-डुलाकर कहा, ''ए जी! ए जी! मोहन आया है।''

रामकृष्ण आँखें मलता हुआ उठा, ''मोहन! तुम कहाँ थे?''

''बाबा! मेरी पत्नी अपने बच्चे को लेकर भागी तो मैं भी उसके पीछे चल पड़ा। हमें जाता देख भगवती भी लक्ष्मी के साथ चला आया। हम गाँव में हैं। मैं आपको भी वहाँ ले चलने के लिए आया हूँ।''

''माँ को ले जाओ। मैं तो यहाँ पर प्रातः देखूँगा कि क्या कुछ बिन लुटे रह गया है। जो कुछ भी मिल गया वह मेरे भावी जीवन की पूँजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होगी। यदि दिन चढ़ने पर यहाँ कोई नहीं होगा तो जो कुछ भी बचा-खुचा है, सड़क पर चलते लोग उठा ले जाएँगे।''

''गाँव का चौधरी कह रहा है कि आगरा जाकर फरियाद करनी चाहिए।''

''तो वह मूर्ख यह समझता है कि शहंशाह के अर्दली ने अपनी मर्जी से यह सब कुछ किया है।

''नहीं मोहन! वहाँ जाने का कुछ लाभ नहीं। बचे हुए जीवन के पाँच-दस दिन व्यर्थ गँवाना नहीं चाहता। मैं कल से पुनः निर्माण करूँगा। यदि हिम्मत है तो तुम दोनों भाई आ जाना। फिर सराय खड़ी कर दूँगा।''

मोहन और राधा ने कहा, ''यहाँ खुले में सोने से तो जीवन का भय है।''

''देखो राधा! तुम्हारे विवाह से पहले मैं एक दिन अकेला गाँव से चला था। आगरा जाते हुए इस कुएँ की जगत पर आराम करने लगा तो भाग्य से प्रेरित यहाँ ही अपना घर बनाने का संकल्प कर बैठा। रात यहीं वीराने में रह गया। अगले दिन खेत में काम करनेवालों से फावड़ा माँग लाया और गाँव के भटियारे से चने उधार ले आया। बस, जीवन आरंभ हो गया।

''इसी प्रकार कल प्रातः से करूँगा। यद्यपि अब तीस वर्ष बूढ़ा हो गया हूँ। इस पर भी भगवान की कृपा से मन में साहस और शरीर में जान मालूम होती है।

''तब से अब बहुत अच्छी अवस्था में हूँ। अब राधा है, तुम दोनों भी हो। कभी कल्याण भी आएगा तो सहायता कर देगा। इन टूटे खंडहरों में भी व्यतीत जीवन का कुछ-न-कुछ बचा मिल जाएगा।''

मोहन माँ को चलने के लिए कहने लगा। परंतु वह नहीं गई और तीनों रात-भर वहाँ ही रहे।

दिन चढ़ने से पूर्व रामकृष्ण जागा और स्नानादि से निवृत्त हो दुकान की ईंट, चूना उठाकर उसे साफ करने लगा। उसने रात ही यह विचार कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया था कि वह उसके नए जीवन के आरंभ का बिंदु होगा।

आधा प्रहर काम करने पर उसे समझ आया कि दुकान का सब सामान मौजूद है। इसी समय भगवती भी आ गया। राधा भी पति के साथ लगी हुई थी।

वहाँ पर यात्री मध्याह्न के समय आने लगते थे। राधा ने टूटे-फूटे घर में से बरतन एकत्रित किए और चूल्हा-चौका ठीक कर पति और पुत्रों के लिए खाना तैयार किया।

मध्याह्न के समय चारों वहाँ बैठ भोजन कर रहे थे तो यात्री आने लगे। सब, जो पहले कभी उस मार्ग पर यात्रा कर चुके थे, सराय की वर्तमान दुर्दशा देख पूछते थे कि क्या हुआ और क्यों हुआ है।

रामकृष्ण अपनी दु:ख की कथा संक्षेप में सुना देता था। भोजन कर कुएँ से जल निकाल पी ही रहे थे कि एक यात्री दरी-चादर लपेट बंडल बना कंधे से लटकाए वहाँ आया तो सब कुछ ध्वस्त देख खड़ा रह गया। सरायवाले को अपने बेटों के साथ कुएँ की जगत पर बैठ जल पीते देख वहाँ आ गया। यात्री ने पूछा, ''रामकृष्ण! यह क्या हो गया है?''

रामकृष्ण ने नाम से पुकारे जाने पर ध्यान से यात्री की ओर देखा तो पहचान गया। वह पहले भी आगरा जाता हुआ तथा वहाँ से लौटता हुआ सराय पर एक रात आराम करने के लिए ठहरा करता था। रामकृष्ण ने कहा, ''पंडित जी! भगवान के कोप से ही यह हुआ है।''

''तो रात यह आँधी में उड़ गया है अथवा यहाँ भूचाल आया है?''

रामकृष्ण ने लड़की के अपहरण की कहानी बताई और फिर पिछले दिन सैनिकों के आकर वह सब कुछ तोड़-फोड़ करने की कहानी बता दी।

यात्री ने कहा, ''दुबारा अपहरण के समय मैं वहाँ आगरा में ही ठहरा हुआ था। मालूम होता है कि चोर को मोर पड़ गए हैं। कोई उस लड़की को शहंशाह के हरम से ले भागा है। शहंशाह को तुम पर संदेह हुआ है और उसने तुम्हारी तलाशी ली है।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कहते-कहते यात्री ने मुस्कराते हुए कहा, ''देखो रामकृष्ण! इस जीवन के बचपन, यौवन और बुढ़ापे में तथा इस और भावी अनेकानेक जीवनों में एक वस्तु निरंतर उपस्थित रहती है। वह जीवात्मा है। वह न कभी पैदा होता है, न बालक, न युवा तथा न बूढ़ा होता है। सदा जवान रहता है और वह अपने कर्मों से धकेला जाता हुआ ऊँच-नीच पर चलता जाता है। इस कारण पुनः आरंभ करो। प्रत्येक नए जन्म पर यही होता है। प्रारब्ध साथ आता है और प्रत्येक बार टूटे मकान पर नया मकान बन जाता है।''

रामकृष्ण इस सहानुभूति और साहस की बातों से उत्साहित हो बोला, ''पंडित जी! भगवान ने चाहा तो छः मास में पुनः आप लोगों की सेवा करने के लिए यह सराय खड़ी कर दूँगा। जो बात पहले तीस वर्ष में कर सका था अब छः मास में कर सकूँगा।''

''और मैं आगरा जाया करता हूँ। इस अपहरणकर्ता से मुझे काम रहता है। अवसर मिला तो तुम्हारी बात वहाँ कहूँगा। शेष तो भगवान और तुम्हारे कर्मफल के अधीन है।''

यात्री ने जल पिया। वह वहाँ भोजन कर रात-विश्राम किया करता था। आज तो वहाँ आराम करने का स्थान नहीं था इस कारण वह चल पड़ा। वह मथुरा की ओर से आया था और आगरा जा रहा था।

7

पाँच दिन के निरंतर परिश्रम से दुकान पर फूस का छप्पर डाल भट्टी पर चने, मक्की, मुरमुरे इत्यादि भुँजने लगे थे। एक अन्य छप्पर डालकर वहाँ रात-आराम का स्थान बन गया था।

प्रातः आधा प्रहर निर्माण-कार्य करते हुए, रामकृष्ण, उसके दोनों लड़के और गाँव के दो मजदूर सब कुएँ की जगत पर बैठे भोजन की प्रतीक्ष कर रहे थे। राधा सबके लिए मक्की की रोटियाँ सेंक रही थी। इस समय आगरे की ओर से चार घुड़सवार आए और कुएँ की जगत के समीप आ घोड़ों से उतर पड़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकृष्ण डरा कि पुनः कोई मुसीबत आई है। वह काँप उठा और परेशानी में अपने लड़कों का मुख देखने लगा।

घुड़सवारों में से एक ने अपने घोड़े की लगाम एक अन्य के हाथ में दे सबको कहा, "यहाँ से सौ कदम दूर चले जाओ।"

रामकृष्ण इत्यादि सब कुएँ की जगत से उठ इन घुड़सवारों की ओर भयभीत देख रहे थे।

जब एक के अतिरिक्त अन्य सब घुड़सवार अपने घोड़ों की लगामें और आज्ञा देनेवाले व्यक्ति के घोड़े की लगाम पकड़ दूर सड़क पर चले गए तो वह घुड़सवार कुएँ की जगत पर आया और पूछने लगा, "रामकृष्ण कौन है?"

रामकृष्ण ने भयभीत दृष्टि से अपने पाँच दिन के निर्माण-कार्य की ओर लालसा-भरी दृष्टि से देखा और काँपते हुए हाथों को जोड़ बोला, "हुजूर! मैं रामकृष्ण हूँ।"

"मैं, अकबर, इस मुल्क का बादशाह हूँ।"

"हुक्म कीजिए।"

"मुझे तुम्हारे साथ राज्य कर्मचारियों से किए सुलूक पर बहुत अफसोस है।"

रामकृष्ण ने अभी भी काँपते हुए पूछा, "तो जहाँपनाह! यह सब आपकी आज्ञा के बिना हुआ है?"

अकबर ने उत्तर नहीं दिया। पूछने लगा, "कितना नुकसान हुआ होगा?"

"अंदाज नहीं लगा सकता हुजूर! मेरे तीस वर्ष के खून-पसीने को एक करने से बना रैन बसेरा था। वह अब यह है।"

रामकृष्ण ने लालासा-भरी दृष्टि से टूटी-फूटी सराय और गिरी हुई दीवारों की ओर देखकर कहा, "किसी पूर्व जन्म के कर्म का फल है। मैं किसी पर दोष नहीं लगाता। अपने को ही कोसता हूँ।"

"अच्छा, यह रखो। अभी यह रखो। मैं आगरा से मजदूर और राजगीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भेजूँगा और वे तुम्हारी सराय कुछ ही दिनों में बना देंगे। और तुम एक हफ्ते के बाद आगरा में हमसे मिलने आना।''

इसमें उत्तर देने को कुछ भी नहीं था। रामकृष्ण अभी भी पाँव से सिर तक काँप रहा था। वह दयनीय दृष्टि से शहंशाह की ओर देखता रहा।

अकबर ने अपने उत्तरीय के नीचे से एक थैली, जो पर्याप्त भारी प्रतीत होती थी, निकाली और रामकृष्ण की ओर बढ़ा दी। इस समय राधा एक बड़ी-सी थाली में बीस-पच्चीस रोटियाँ और उनके साथ गुड़ लिए हुए वहाँ आ पहुँची और अपने पति को हाथ में एक थैली पकड़े हुए एक रईसी ठाट के व्यक्ति के सामने खड़ा देख स्तब्ध रह गई।

अकबर ने कहा, ''हम सुंदरी और उसकी माँ की बाबत कुछ जानना चाहते हैं। देखो, एक हफ्ते के बाद आना और हमसे मिलना और यह परवाना है जिसे दिखाकर तुम हमारे पास पहुँच सकोगे।''

मोहन आदि सब अवाक् शहंशाह की ओर देखते रह गए। शहंशाह अकबर बिना किसी उत्तर की प्रतीक्षा किए कुएँ की जगत से नीचे उतरा और सड़क पर खड़े अपने सिपाहियों की ओर चला गया।

शहंशाह के वहाँ पहुँचते ही सब सावधान होकर खड़े हो गए और शहंशाह के घोड़े पर सवार होते ही वे सब भी अपने-अपने घोड़े पर सवार हो शहंशाह के पीछे चल पड़े।

रामकृष्ण ने देखा कि वह अर्दली, जो सराय को मलबे का ढेर बना गया था, शहंशाह के साथ नहीं था।

जब शहंशाह चला गया तो सब लोग राधा, मोहन, भगवती और गाँव से आए मजदूर, राजगीर रामकृष्ण को घेरकर खड़े हो गए।

राधा ने पूछा, ''यह क्या हो रहा है?''

''राधा! समझ नहीं आ रहा। ऐसा मालूम होता है कि सुंदरी की माँ को यह बदमाश का बच्चा जानता था और अब इतने वर्ष के उपरांत इसे उसकी याद आई है।''

''मगर इसे पता कैसे चला कि सुंदरी किसकी लड़की है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"दो बातें विशेष हुई हैं। एक तो सुंदरी की माँ के गले के हार के नीचे लटक रहे नीलम के पीछे एक कागज निकला था। वह उस समय पढ़ा नहीं गया था। इसने पढ़ाया प्रतीत होता है और उसमें उसका पता लिखा मालूम होता है।

"एक दूसरी बात भी हो सकती है। वह पंडित जी आए थे, वह कह रहे थे कि वह शहंशाह से मिलते रहते हैं। वह उसे यहाँ की बात बताएँगे।"

रामकृष्ण के दोनों ही विचार ठीक थे। करीमखाँ ने जब अकबर के सामने सराय की तलाशी की घटना वर्णन की तो बताया, "हुज़ूर! वह लड़की सरायवाले की नहीं थी। उसको तो सराय में आगरा से भागी जाती हुई एक हामला औरत ने जन्म दिया था। वह औरत सुंदरी के लिए भूषण और धन छोड़ गई थी। भूषणों में एक हार पर लगे एक नीलम के पीछे से यह कागज का टुकड़ा निकला है। यह हिंदुआनी जबान में लिखा है।"

अकबर ने वह टुकड़ा ले लिया।

पंडित विभूतिचरण मथुरा के एक गाँव के रहनेवाले थे। वह ज्योतिष के विद्वान् थे और उनकी ख्याति अकबर के पास पहुँची तो अकबर ने उन्हें बुला भेजा।

कथा-काल से तीन वर्ष पूर्व वह अकबर से मिला था और पहली ही भेंट में पंडित ने अकबर के मन पर एक स्थाई प्रभाव उत्पन्न किया था।

पंडित ने शहंशाह के जन्मकाल और स्थान को जानकर शहंशाह की जन्मकुंडली बनाई थी और तब ही यह भविष्यवाणी की थी कि उसकी शादी एक हिंदू राजा की लड़की से होगी जो उसके राज्य का उत्तराधिकारी उसे देगी।

उस समय जयपुर वालों से किसी प्रकार के संबंध का विचार तक भी नहीं था। इस पर भी यह अकबर के मन की बात थी कि हिंदू प्रजा में मिल-जुलकर राज्य करे।

पंडित विभूतिचरण ने अकबर को बताया था कि यह उसके भाग्य में लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो क्या मैं इसके खिलाफ अमल नहीं कर सकता?" अकबर ने पूछा था।

"कर सकते हैं। इनसान की रूह अमल करने में आजाद है। इस पर भी यदि इनसान किस्मत में लिखे विधि के विधान के खिलाफ कुछ करता है तो उसके भले-बुरे का जिम्मेदार वह होता है। किस्मत मानने में तो उसकी जिम्मेदारी नहीं होती।"

"मगर क्या हमें वही कुछ करना चाहिए जो आप कह रहे हैं?"

"नहीं जहाँपनाह! किस्मत आपसे वह कुछ कराना चाहेगी जो उसे कराना है। हाँ, आप उसका विरोध किसी दुनियावी और इनसान की बनाई बातों की वजह से करेंगे तो आप उसके भले-बुरे नतीजों के जिम्मेदार होंगे।

"शायद खुदा परवरदिगार की इस मुल्क में आपको हिंदू समाज का पैगम्बर बनाने की तजवीज है। मगर आप मसनूई इनसान की बनाई बातों के असर कुछ ऐसा कर सकते हैं जो खुद की आपके पुण्यकर्मों के फल की योजना में नहीं है। तब आप पैगम्बर की हैसियत नहीं पा सकेंगे। आप अपनी किस्मत का फल तो पाएँगे, मगर सिर्फ सुख-आराम और जाओ-हशमत जो आपके पुण्यकर्मों का नतीजा है, ईश्वरीय योजना से मिलनेवाले फल को आप नहीं पा सकेंगे।"

अकबर इस सबको नहीं समझा। मगर वह दिल से चाहता था कि मुल्क के कोटि-कोटि जन-मानस का वह पूज्य बन जाए। लोग उसे मसीहा मान पूजा करें।

पहली भेंट में शहंशाह ने मोदी को हुक्म दिया कि पंडित को एक सौ अशरफी दे दो। मोदी ने एक रेशमी थैली पंडित जी के सामने रख दी। बात होती रही और जाते समय पंडित जी ने थैली नहीं उठाई।

पीछे अकबर ने वह थैली पंडित जी के पास नगर सराय में भेज दी। परंतु पंडित जी ने शहंशाह का शुक्रिया अदा किया और थैली को छुए बिना वापस कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहंशाह को समझ नहीं आया। इस पर उसने पंडित जी पर जासूस लगा दिए कि पता करें कि वह कितना धनी व्यक्ति है।

जासूस दो मास की छानबीन के उपरांत लौट आए और इत्तला की कि पंडित विभूतिचरण, उसकी पत्नी और दो बच्चे हैं। बहुत निर्धन होने पर भी गाँव में पूजे जाते हैं। लोग बिना कहे उसके घर में अन्न-अनाज, वस्त्रादि दे जाते हैं। वह किसी के घर से उठाकर कुछ नहीं लाता।

इस पर अकबर को विस्मय हुआ। दो मास की जाँच-पड़ताल के उपरांत शहंशाह ने पंडित जी को पुनः बुलाया।

शहंशाह ने बताया कि उसकी शादी का प्रबंध जयपुर-नरेश की लड़की से हो रहा है।

पंडित ने इस पर हर्ष-शोक प्रकट किए बिना कह दिया, "आपका मन क्या कहता है?"

"हमारे मजहबी रहनुमा इस रिश्ते से मना कर रहे हैं।"

"मजहब क्या होता है?"

"जो हजरत मुहम्मद साहब ने इसलाम के नाम से चलाया है।"

"लेकिन आपका मन क्या कहता है?"

"वह इस शादी के हक में कहता है।"

"वहाँ पर परमात्मा बैठा है और वह आपको ऐसा करने को कह रहा है। ये मुल्ला-मौलाना आपकी और परमात्मा की बात को नहीं जानते। इस वजह से दोनों में इख्तिलाफ राय है।"

"तो मन की बात कर लूँ?"

"मेरी विद्या कहती है कि इससे आपको सुख मिलेगा।"

अकबर ने बात बदल दी। उसने कहा, "मगर पंडित जी! मेरे मोदी ने आपके लिए कुछ नज़र-न्याज़ रखी थी।"

"मैं अपनी विद्या को बेचता नहीं हूँ। उसका कुछ भी दाम नहीं।"

"मगर और सब लोग तो हमसे माँग-माँग कर लेते हैं।"

"तो उनको दीजिए। मैं आपको मना नहीं कर रहा। लोग मुझे भी देते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। परंतु वे मेरी आवश्यकताओं को स्वयं देखते हैं और उनके पूरा करने का यत्न करते हैं। आप भी कर सकते हैं।''

अकबर इस पंडित के मंतक (मीमांसा) को समझ नहीं सका। वह मुख देखता रहा गया। इस पर विभूतिचरण ने कहा, ''हुजूर! यह हाथ देने के लिए बना है। जब भी इसके पास देने के लिए होता है तो यह देता है; वहाँ जहाँ मेरे मन को देना उचित समझ आता है। परंतु यह हाथ लेने के लिए कभी फैलाया नहीं गया। यदि किसी को समझ आता है कि मुझे कुछ देना चाहिए तो जहाँ कमी देखता है वहाँ दे जाता है।''

पंडित जब भी बुलाया जाता था, पैदल आता था और पैदल लौटता था। यही कारण था कि आगरा से दस मील के अंतर पर भटियारिन की सराय उसका एक पड़ाव बन गया था।

अकबर ने नगर सरायवाले को हुक्म दे रखा था कि पंडित जी से सराय का भाड़ा नहीं लेना। उनकी सेवा इत्यादि का मूल्य भी नहीं लेना। पंडित जी ने इसमें न आपत्ति की और न इसकी माँग की।

अकबर इन दिनों अपने राज्य को विस्तार देने के लिए पड़ोसी राज्यों पर आक्रमण कर रहा था। प्रत्येक आक्रमण से पूर्व पंडित जी से नजूम लगवाया जाता था और आक्रमण की योजना पंडित जी के मुहूर्त्त निकालने पर बनती थी।

इसी प्रकार के एक काम पर विभूतिचरण आया था तो भटियारिन की सराय पर अपहरण की घटना हो गई थी। इसके दो-ढाई मास उपरांत जब पंडित आया तो वहाँ पर उजाड़ स्थान देख विस्मय करता हुआ पहुँचा। उस दिन वह रात देर से पहुँचा और अगले दिन नियमानुसार मध्याह्नोत्तर उसने राजमहल के बाहर पहुँच नाम लिखकर भीतर भेजा। उसे तुरंत बुला लिया गया।

अकबर ने उस दिन पहला ही प्रश्न किया, ''पंडित जी! यह देखिए, कौन-सी भाषा है?''

अकबर ने वही कागज का पुर्ज़ा सामने कर दिया जो सुंदरी की माँ के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हार में नीलम के पीछे छुपाकर रखा हुआ था।

पंडित जी ने देखा और पढ़कर कहा, "यह संस्कृत भाषा है। किसी विदुषी स्त्री का यह लिखा हुआ है। उसने लिखा है कि मैंने अपने जीवन के कुछ क्षण वासनाभिभूत हो रसमय बनाए थे और उस पाप का फल भोगने जा रही हूँ। मैं किसी वीरान स्थान पर बच्चा पैदा करूँगी और उसे उसके भाग्य पर छोड़ विदा हो जाऊँगी।

—कल्याणी

विधवा-पंडित शशिकुमार वात्स्यायन

बरौठा।"

अकबर सुनकर स्तब्ध बैठा रह गया। विभूतिचरण ने मुस्कराते हुए कहा, "तो हुज़ूर नहीं समझे?"

"समझने की कोशिश कर रहा हूँ।" वास्तव में अकबर सब समझ गया था और वह पंडित जी को बताना नहीं चाहता था। विभूतिचरण, जो इस पुर्जे की बात रामकृष्ण सरायवाले से सुन चुका था, समझ रहा था कि यह अपहृत लड़की की माँ की कथा है। इस पर भी वह जानता नहीं था कि वह कौन औरत थी और किसके साथ उसने वासनामय कुछ क्षण व्यतीत किए थे।

एक बात स्पष्ट थी कि लिखनेवाली कोई विदुषी स्त्री है। भाषा शुद्ध और सुंदर अक्षर में लिखी थी।

विभूतिचरण ने कहा, "आज्ञा हो तो इसके विषय में अपनी विद्या का प्रयोग करूँ?"

"नहीं। इसकी जरूरत नहीं है।" अकबर अपने रहस्य को पंडित के सम्मुख खोलना नहीं चाहता था।

इस पर भी पंडित ने आँखें मूँद चिंतन किया और अपने थैले से कागज, कलम, दवात निकाल कुंडली बनाने लगा।

अकबर काँप उठा। वह पंडित की विद्या का चमत्कार देख चुका था,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस कारण उसने कहा दिया, ''पंडित जी! जाने दीजिए। यह एक नाचीज़ के लिए अपने जीवन का अमूल्य समय खराब न करिए।''

बात बदलने के लिए अकबर ने कह दिया, ''मेरे जंगी मशीर बीरबल कह रहे हैं कि मालवा पर आक्रमण करना चाहिए।''

पंडित जी सुंदरी की कुंडली को छोड़ मालवा पर आक्रमण के विषय में गिनती-मिनती करने लगे।

पंडित जी ने घड़ी-भर गणना करने में लगा दिया और तदनंतर सिर ऊँचा कर कह दिया, ''मालवा दो वर्ष तक विजय नहीं हो सकता। शक्ति का अपव्यय होगा।''

अकबर उठने लगा तो पंडित जी ने अपने मन की बात कह दी। उसने कहा, ''जहाँपनाह! यहाँ से पाँच कोस के अंतर पर एक भटियारिन की सराय थी। यहाँ आने-जाने पर वह मेरा एक पड़ाव होता था। सराय का मालिक एक सज्जन व्यक्ति है। कल रात मैं वहाँ विश्राम करने के लिए ठहरना चाहता था, परंतु वहाँ जा पता चला कि सरकारी कर्मचारियों ने सराय को गिराकर तबाह कर दिया है। इस कारण मुझे पाँच-पाँच कोस की यात्रा रोज़ करने के स्थान पर एक दिन में दस कोस की यात्रा करनी पड़ी है। इससे तो आगरा आनेवालों को बहुत कष्ट होगा।''

''और आप जानते हैं कि सराय का मालिक भला आदमी है?''

''मेरी विद्या ने यही बताया है।''

''और उस भले आदमी का घोंसला बरबाद करनेवाले का क्या हशर होगा?''

''यह तो पता नहीं किया। कहें तो पता करूँ। मगर मेरी राय है कि यात्रियों की सुविधा के लिए सराय तो रहनी चाहिए।''

''तो वहाँ सरकारी खर्च पर सराय बनाव दी जाए?''

''मगर इंतज़ाम सरकारी नहीं होना चाहिए।''

''क्यों?''

''तब वह भी एक दूसरी नगर चैन बन जाएगी और वहाँ मेरे जैसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरीब आदमी के रहने के लिए जगह नहीं होगी।''

अकबर गंभीर विचार में पंडित का मुख देखता रह गया।

8

पंडित अगले दिन आगरा से लौटा और जल पीने के लिए तथा कुछ विश्राम करने के लिए सरायवाले कुएँ की जगत पर पहुँचा तो रामकृष्ण आधे दिन के परिश्रम करने के उपरांत विश्राम कर रहा था। मोहन और भगवती अपनी ससुराल अपनी पत्नियों के पास गए हुए थे। राधा दुकान पर बैठी यात्रियों को चने बेच रही थी। पंडित जी के आने पर रामकृष्ण ने हाथ जोड़ प्रणाम किया और पंडित जी को कुएँ से निकालकर जल पिलाने लगा।

जल पीते हुए पंडित जी ने पूछा, ''रामकृष्ण! बहुत प्रसन्न प्रतीत होते हो?''

''हाँ महाराज! कल शहंशाह यहाँ आए थे। पाँच सौ अशरफियाँ मेरी हानि के एवज़ में दे गए हैं और यह कह गए हैं कि वह सराय अपने खर्च पर बनवा देंगे।''

''तो तुम प्रसन्न हो?''

''प्रसन्नता का कारण यही है कि पुनः आप जैसे सज्जनों की सेवा का अवसर मिलने लगेगा।''

''परंतु रामकृष्ण! यह स्वर्ण एक आततायी की लूट का भाग है।''

''लूट?'' रामकृष्ण ने विस्मय में पूछ लिया।

''हाँ। जानते हो लूट क्या होती है? जब कोई बलशाली व्यक्ति कहीं पड़े पराए धन को जबरदस्ती उठा ले जाए तो वह लूट कही जाती है।

''यह शहंशाह यही कर रहा है। पूर्व जन्म के कर्मफल के कारण यह लुटेरा पकड़ा नहीं जा रहा। परंतु परमात्मा देख रहा है कि यह उस बल और प्रभुता का प्रतिकार जनता को नहीं दे रहा, जो इसे लूट के प्रतिकार में देना चाहिए। इस कारण यह माल पाप से लथपथ है। इसे अपने निजी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाभ के लिए प्रयोग में मत लाना।"

"तो किस प्रयोग में लाऊँ?"

"लोकसेवा के। यह लोगों का रुपया है जो अकारण यह चोर उठा-उठा अपनी जेब में डाल रहा है। इस कारण लोगों की सेवा में ही इसे प्रयोग में लाना।"

"और सत्य ही यदि सराय सरकारी खर्चे पर बनवा दी गई तो?"

"तो उसमें से अपने परिश्रम का मूल्य निकाल शेष जन-जन की सेवा में व्यय कर देना।"

"यह मुझ जैसा अनपढ़ कैसे जान सकेगा कि मेरी मेहनत का भाग क्या है और लोगों का भाग कितना है?"

"मैं दस कोस की यात्रा एक ही दिन में करना नहीं चाहता। रात इसी कुएँ पर सोऊँगा और बताऊँगा कि इस पाप की कमाई के दोष से कैसे बचना चाहिए।"

रामकृष्ण तो एक घंटा-भर विश्राम कर सफाई और मरम्मत के काम में लग गया और विभूतिचरण सराय की इमारत का एक नक्शा बनाने लगा। अगले दिन जाते समय पंडित ने यह कागज, जिस पर सराय के स्थान पर निर्माण का मानचित्र बनाया था, रामकृष्ण को देते हुए कहा, "यदि सरकारी कर्मचारी निर्माण के लिए आएँ तो उनको यह कागज देकर कह देना कि तुम इस प्रकार की इमारत चाहते हो।

"कह नहीं सकता कि यह दुष्ट व्यक्ति यह बनवाएगा अथवा नहीं। हाँ, यदि यह इमारत बन गई तब मैं बताऊँगा कि इसका प्रयोग कैसे करना है।"

"और उसको जानने के लिए आपको कहाँ पाऊँगा?"

"मुझे ढूँढ़ने की आवश्यकता नहीं है। समय पर मैं स्वयं आऊँगा और इस प्रकार के बने मकान का उपयोग बताऊँगा।"

दो दिन उपरांत कारीगर और उनसे काम लेनेवाला एक उच्चाधिकारी सराय की इमारत बनाने के लिए आए। उस सरकारी अधिकारी ने जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमि को नापना आरंभ किया तो रामकृष्ण ने उसके पास जाकर पता किया कि वह क्या कर रहा है ?

"सरकारी हुक्म से यहाँ एक सराय बनवा रहा हूँ।"

"मगर मैं इस स्थान पर ऐसी इमारत बनवाना चाहता हूँ जिसका नक्शा यह है।"

"कैसा नक्शा है ? दिखाओ।"

रामकृष्ण ने वही कागज दिखा दिया जो पंडित विभूतिचरण उसे दे गया था। सरकारी अधिकारी ने पूछा, "यह किसने बनाया है ?"

"मेरे पुरोहित जी ने।"

"वह कहाँ है ?"

रामकृष्ण जानता नहीं था कि पंडित कहाँ रहता है। इस कारण उसने कह दिया, "वह तीर्थयात्रा पर गए हुए हैं। तीन महीने में लौटेंगे।"

"मगर यह तो हम शहंशाह के हुक्म के बिना नहीं बना सकते।"

"तो हुक्म ले लो। अन्यथा मैं चाहूँगा कि यहाँ पर मुझे खुद बनाने की इजाज़त होनी चाहिए।"

सरकारी अधिकारी अपने साथ पचास से अधिक राजगीर, मजदूर इत्यादि लेकर आया था। साथ ईंट, चूना और अन्य इमारती सामान बैलगाड़ियों पर लदा हुआ भी पहुँच चुका था। उसे यह हुक्म था कि रामकृष्ण सरायवाले से पूछकर जहाँ वह कहे पचास यात्रियों के रहने योग्य सराय बना दी जाए।

सरकारी सराय बनाने का एक नियत नक्शा था और उसके अनुसार ही भटियारिन की सराय बननेवाली थी।

रामकृष्ण की सम्मति सुन अधिकारी आगरा वापस लौट गया और शहंशाह के सामने उपस्थित हो वह नक्शा दिखाने लगा जो रामकृष्ण ने उसे दिया था।

अकबर कागज देखते ही पहचान गया कि यह वैसा ही कागज है जो विभूतिचरण कुंडलियाँ बनाने के लिए प्रयोग करता है। वह इसका अर्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समझने का यत्न कर रहा था।

उसे समझ आया कि पंडित आगरा से जाते हुए सराय के मालिक से मिला है और उसे यह नक्शा बनाकर दे गया है।

इस कारण इसमें पंडित का कुछ स्वार्थ का अनुमान लगा अधिकारी को कहने लगा, "जैसा सराय का मालिक कहे, बना दो।"

अधिकारी ने निवेदन कर दिया, "हुज़ूर! इस पर पचास हजार रुपया खर्च बैठ जाएगा।"

"ठीक है। बनवा दो।"

"मगर यह सराय नहीं होगी।"

"तो और क्या होगा?"

"कह नहीं सकता। मुझे तो इस इमारत का सिर-पैर समझ नहीं आया।"

अकबर ने मुस्कराते हुए कहा, "इसका सिर-पैर नक्शा बनानेवाले से पता करेंगे।"

"मगर वह तो तीर्थयात्रा पर चला गया है और सराय का मालिक बता रहा था कि तीन महीने में लौटेगा। और हुज़ूर का हुक्म है कि इमारत पंद्रह दिन में बन जानी चाहिए।"

"इमारत तो बन जानी चाहिए। इसका मतलब हम उससे पता करेंगे।"

करीमखाँ नहीं जानता था कि शहंशाह के मन में क्या है। वह मुख लगा कर्मचारी अवश्य था, मगर वह इस कारण कि शहंशाह की निजी ख्वाहिशात को पूरा करने के लिए वह एक योग्य सहायक था; लेकिन राज्य-कार्य में उससे सम्मति नहीं ली जाती थी। कभी वह सम्मति देता भी था तो शहंशाह उसकी सम्मति को हँसी-मज़ाक में उड़ा देता था।

करीमखाँ सराय की तामीर में सम्मति दे रहा था। उसने कहा, "हुज़ूर! इस काफिर पर इतनी मेहर किसलिए की जा रही है?"

"यह इस कारण कि तुमने हमारे हुक्म से बहुत ज्यादा नुकसान इसे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुँचाया था। तुम हमारे दिली दोस्त हो इसलिये तुम्हारे गुनाहों का बदला मैं दे रहा हूँ।''

करीमखाँ चुप रहा। वस्तुस्थिति यह थी कि सराय की तलाशी लेने का मतलब यही था कि इमारत में यदि कोई तहखाना हो तो उसको भी देखा जाए। तहखानों के विषय में बिना खुदाई किए पता नहीं चल सकता था।

इस पर भी वह चुप था। अकबर का हुक्म हुआ और पचास के स्थान पर दो सौ काम करनेवाले भटियारिन की सराय को बनाने लगे।

पंडित विभूतिचरण को आगरा से लौटे अभी तीन दिन ही हुए थे कि अकबर का खास खिदमतगार फिर द्वार पर आ पहुँचा और बताने लगा कि शहंशाह ने याद फरमाया है।

इस बार पंडित को यह बुलावा भला प्रतीत नहीं हुआ। उसे संदेह हो रहा था कि भटियारिन की सराय के व्रिषय में किसी प्रकार की पूछताछ करने के लिए बुलाया जा रहा है।

इस बार पंडित जी ने फारसी में लिखकर उत्तर भेजा। उसने लिखा, ''मैं एक पूजा पर बैठ गया हूँ जो तीन मास में समाप्त होनेवाली है और बीच में मैं उठ नहीं सकता। इस काल में मैं मकान से बाहर नहीं जा सकता। यदि हुज़ूर प्रश्न लिखकर भेज दें तो उत्तर भेज दूँगा।''

सरकारी अर्दली गया और पाँच दिन में लौट आया। इस बार वह एक पत्र लाया जिसमें लिखा था, ''हम यह जानना चाहते हैं कि आपका भटियारिन की सराय के मालिक से क्या संबंध है? मैंने आपकी तजवीज़शुदा इमारत के बनाने का हुक्म जारी कर दिया है। मगर उसका मतलब नहीं समझा। यही जानने के लिए आपको बुलाया था। इस पर रोशनी डालें।''

पंडित ने उत्तर में लिख भेजा, ''हुज़ूर! शहंशाह-ए-हिंद की बचपन की किसी शरारत का नतीजा भोगनेवाले इश्खास की मदद कर मैं शहंशाह को उस गुनाहे-अज़ीम से बचाने की कोशिश कर रहा हूँ जिसके वह मुरतकिब हो रहे हैं। उसी के लिए मैं पूजा के आसन पर बैठा उठ नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा। तीन महीने के बाद खिदमत में हाज़िर हो जाऊँगा।''

शहंशाह का अगला सवाल आया, ''सुंदरी कहाँ है? हम उसकी भी मदद करना चाहते हैं।''

''वह बहुत मुसीबत में फँसी हुई भटक रही है। यह उसके अपने अमालों का नतीजा है। इसमें आप उसकी मदद नहीं कर सकते। उसे अपना मुस्तकबिल खुद सुधारना चाहिए।''

शहंशाह को कुछ यह समझ आया कि पंडित सीमा से अधिक जान गया है। कैसे? वह समझ नहीं सका। अकबर इस रहस्य को जानने के लिए परेशान था। वह समझ रहा था कि विधवा कल्याणी से पंडित का किसी प्रकार का संबंध रहा है और कल्याणी के उस कागज के पुर्जे से वह सब समझ गया है।

इस समय उसके मन में फितूर समा गया कि इस पंडित का खुर-खोज मिटा देना चाहिए जिससे यह बात विख्यात न हो जाए कि उसने अपनी ही लड़की से गुनाह किया है।

पंडित का खुर-खोज मिटाने की बात पर विचार करते हुए उसे उस समय की बात याद आ गई जब उसने कल्याणी से संबंध बनाया था।

जब अकबर का पिता हुमायूँ हिंदुस्तान में अपने पिता से विजय किए राज्यों को पुनः जीतने के लिए काबुल से चला था तो अकबर अपने पीरमुर्शिद बहरामखाँ के साथ हिंदुस्तान में भेस बदलकर घूम रहा था। बहरामखाँ का इसमें अपना प्रयोजन था। वह अकबर के स्थान पर स्वयं शासन करना चाहता था। अकबर तो उस वसीह सल्तनत को देखना चाहता था जिसके विषय में एक नजूमी ने नजूम लगाया हुआ था कि वह शहंशाह बनेगा।

दोनों हिंदुओं के पहरावे में घूम रहे थे। जब हुमायूँ अपनी सेनाओं के साथ रावी नदी पार कर दिल्ली की ओर बढ़ रहा था तो अकबर अपने मुर्शिद के साथ दिल्ली और आगरा के आसपास के क्षेत्र को देख रहा था।

एक रात वे एक गाँव में देर से पहुँचे तो एक ब्राह्मण के घर में ठहर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए। कल्याणी उस ब्राह्मण की विधवा पतोहू थी। घर में मेहमान आए थे जो अपने को कश्मीरी ब्राह्मण प्रकट कर रहे थे। बहरामखाँ अकबर का पिता होने का अभिनय कर रहा था। लड़का चौदह-पंद्रह वर्ष की आयु का प्रतीत होता था। सुंदर-सुकुमार, ओजस्वी रूपरेखावाला था। कल्याणी देखते ही मुग्ध हो गई। वह अट्ठारह-उन्नीस वर्ष की स्त्री थी। उसके पति का देहांत हुए तीन वर्ष हो चुके थे। अकबर को भी ब्राह्मण की पतोहू आकर्षक लगी। दोनों रात के समय मकान के बाहर खेत में मिले और अपने कर्म के होनेवाले परिणाम को भूल गए।

यद्यपि बहरामखाँ तो केवल रात-भर रहने का विचार रखता था और अगले दिन चला जाना चाहता था, परंतु अकबर ने रुग्ण हो जाने का बहाना कर दिया। उसने कहा कि उसे विशूचिका लग रही है।

विवश गुरु-शिष्य को उस ब्राह्मण की मेहमानदारी में कई दिन रहना पड़ा और जब तक वे वहाँ रहे, रात के समय कल्याणी अकबर को अपने शयनागार में स्थान देती रही।

कल्याणी विदुषी स्त्री थी, परंतु मन के वासनाभिभूत होने पर अकबर से संबंध बना बैठी। अकबर चला गया और अपना नाम-धाम कल्याणी को बताए बिना अपना बीज उसमें डाल गया।

कल्याणी के गर्भ ठहर गया और जब उसके श्वसुर को पता चला तो उसने पतोहू को घर से निकाल दिया। कल्याणी गाँव से चल आगरा शहर में एक भाड़े के मकान में रहने लगी। इस समय तक उसे अपने कर्म की हीनता का भास हो चुका था। वह पाश्चात्ताप की आग में जलने लगी थी। उसके मन में कई बार यह विचार आया था कि यमुना जी के प्रवाह में शरीर त्याग दे, परंतु शरीर में बन रहे नए प्राणी की हत्या कर पाप सिर पर न लेने के विचार से वह बच्चे को जन्म देने तक जीवन चलाने का यत्न करती रही।

जैसे-जैसे प्रसव-काल समीप आता गया, वह इस चिंता में थी कि बच्चे को किसी देहात में जन्म दे और अपनी थोड़ी-सी जमा पूँजी बच्चे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क़ो दे जाए। उस थोड़ी-सी पूँजी से देहात में ही बच्चे के पालन-पोषण का प्रबंध हो सकेगा। इस कारण वह चाहती थी कि किसी ऐसे गाँव में, जहाँ उसे कोई न जानता हो, ठीक प्रसव के दिन पहुँचे, प्रसव करे और संभव हो तो वहीं प्राण दे दे।

ऐसा विचार कर उसने एक बारीक कागज पर अपनी इच्छा लिख दी और अपने गले के हार के नीचे लटक रहे नीलम के पीछे छुपाकर रख प्रसव-काल की प्रतीक्षा करने लगी।

जब उसे समझ आया कि प्रसव समीप है तो उसने एक टट्टू भाड़े पर किया और आगरा से चल पड़ी। प्रातः की चली वह मध्याह्नोत्तर ही भटियारिन की सराय के बाहर पहुँच सकी। इस समय उसे प्रसव-पीड़ा होने लगी थी।

उसने सराय देखी और वहीं प्रसव करने का निश्चय कर सराय के बाहर जा खड़ी हुई।

जब करीमखाँ ने नीलम के पीछे रखा पुर्जा अकबर को दिया और बताया कि सराय की भटियारिन सुंदरी की माँ नहीं है तो अकबर पुर्ज़े को पढ़ने का यत्न करने लगा। वह पर्चे को पढ़ नहीं सका और विभूतिचरण के आने की प्रतीक्षा करने लगा। विभूतिचरण ने जब पर्चे का अभिप्राय बताया तो अकबर को चार-पाँच रात कल्याणी के साथ व्यतीत करने की बात स्मरण आ गई। उसने आँखें मूँद उस समय की कल्याणी की सूरत-शक्ल याद की तो उसे समझ आया कि वह सुंदरी की प्रतिलिपि ही है। सुंदरीकी रूप-राशि का ध्यान कर उसके मन में संदेह नहीं रहा कि उसने अपनी लड़की से ज़िना कर गुनाहे-अज़ीम किया है।

अब वह अपने गुनाह का बदला चुका कर गुनाह से बरी होने की बात पर विचार करने लगा।

जब उसने भटियारिन की सराय के स्थान पर एक विस्तृत इमारत का नक्शा एक ऐसे कागज पर बना देखा जो विभूतिचरण के थैले में पड़े रहते थे तब अकबर को समझ आया कि पंडित को सुंदरी के जन्म के इतिहास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का ज्ञान है और वह उसके छुपने के स्थान को जानता है। इसी विचार से उसने अब पंडित को बुलाया था। परंतु विभूतिचरण ने पूजा पर बैठने का बहाना कर दिया। पंडित ने कहला भेजा कि वह तीन महीने तक पूजा पर बैठेगा। यह एक अन्य बात थी जिससे अकबर को संदेह हुआ कि पंडित का रामकृष्ण से गहरा संबंध है। इस पर जब विभूतिचरण का अंतिम उत्तर आया कि सुंदरी मुसीबत में फँसी हुई भटक रही है तो उसे विश्वास हो गया कि पंडित सब कुछ जानता है।

9

अकबर ने करीमखाँ को बताया, ''वह नजूमी बदज़न हो गया है। उसे बुलाया था, मगर वह नहीं आया।''

करीमखाँ ने कहा, ''जहाँपनाह! हुक्म हो तो बाँधकर यहाँ हाजिर कर दूँ।''

''हाँ। मगर उसे या उसके घरवालों को तंग नहीं करना। हम भटियारिन की सरायवाली बात यहाँ दोहराई जाना पसंद नहीं करते।''

''हुजूर के हुक्म की अदूली नहीं होगी।''

परिणाम यह हुआ कि करीमखाँ ने पाँच दिन में विभूतिचरण को हथकड़ियों और बेड़ियों में जकड़े हुए सामने उपस्थित कर दिया।

विभूतिचरण हथकड़ी तथा बेड़ियों से बँधा जब अकबर के सामने उपस्थित कर दिया गया तो अकबर ने पंडित की ओर मुस्कराते हुए देख पूछ लिया, ''पंडित जी महाराज! यह क्या सूरत बनाई है?''

विभूतिचरण ने दो दिन से भोजन, स्नान इत्यादि कुछ नहीं किया था। वह उन्हीं वस्त्रों के साथ पकड़ लाया गया था जो वह पूजा के समय पहने हुए था। वह अपनी अवस्था पर ग्लानि अनुभव कर रहा था। ग्लानि में जलते हुए उसने अकबर के प्रश्न का उत्तर नहीं दिया।

अकबर ने पंडित की दयनीय अवस्था देखी तो हुक्म दिया, ''पंडित जी की हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ उतार दी जाएँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अर्दली आया और हथकड़ियाँ और बेड़ियाँ खोल उठाकर ले गया। विभूतिचरण भोजन इत्यादि न करने के कारण दुर्बलता अनुभव करने लगा था। अत: अकबर से पूछे बिना वह उसके सामने भूमि पर बैठ गया।

"क्यों पंडित जी!" अकबर ने पूछ लिया, "कैसा महसूस करते हैं?"

विभूतिचरण ने उत्तर नहीं दिया। वह अभी भी चुपचाप सामने बैठा रहा। इस पर अकबर ने ताली बजा एक सेवक को बुलाया और हुक्म दिया, "पंडित जी को गुसल वगैरा कराओ और इनको ब्राह्मण के हाथ का बना खाना खिलाकर हाजिर करो।"

इस समय दिन का दूसरा प्रहर समाप्त होनेवाला था। करीमखाँ ने शहंशाह को बता रखा था कि पंडित ने दो दिन से कुछ खाया-पीया नहीं है।

तीसरे प्रहर जब अकबर अपनी जयपुर वाली रानी जोधाबाई से पंडित की सब कथा बता रहा था तो महारानी ने कहा, "और किस कसूर पर जहाँपनाह ने उसे यहाँ बुलाया है?"

"वह एक औरत का पता जानता है और बताता नहीं।"

"और वह औरत आपकी क्या है जो आपको पता बताया ही जाए?"

अकबर सब बात अपनी इस हिंदू बेगम को बताना नहीं चाहता था। उसने केवल यह कहा, "किसी वजह से हमारी उस औरत में दिलचस्पी है। पंडित उसके मुतअल्लिक जानता है। इसने अपने एक पत्र में लिखा है कि वह मुसीबत में फँसी भटक रही है। हम उसकी मदद करना चाहते हैं और यह उसका पता बताता नहीं।"

"मगर आपने एक विद्वान् ब्राह्मण को हथकड़ी और बेड़ी लगा यहाँ मँगवाया है। यह तो आपने उसका घोर अपमान किया है। मैं समझती हूँ कि वह आपके दर पर बैठा भूख से मर जाएगा।"

"मैं नहीं जानता कि क्या करूँ। मैं उस औरत का पता जानना चाहता हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"उसे मेरे सामने लाइए। मैं उसके साथ हुए अपमान का बदला देना चाहती हूँ।"

"वह धन-दौलत तो पहले ही नहीं लेता। उसे कई बार दक्षिणा देने की कोशिश की गई है, मगर उसने आने-जाने का भाड़ा तक नहीं लिया। वह जब भी यहाँ आता है, पैदल ही आता और पैदल ही जाता है। इस पर भी उसने अपनी विद्या से मेरी बहुत मदद की है।"

"मगर यह कोई वजह नहीं कि उसे कैद किया जाए। विद्वान् व्यक्ति की सेवा-सुश्रूषा से उसे प्रसन्न कर ही कुछ काम लिया जा सकता है।"

"मैं परेशान हूँ कि क्या करूँ।"

"उसे मेरे सामने हाजिर करिए। मैं जाली के पीछे बैठ उसके इस दुराग्रह का कारण जानना चाहूँगी।"

अकबर को बात समझ आ गई और वह अपनी इस हिंदू बेगम के साथ जाली के पीछे बैठ गया और पंडित को जाली के बाहर लाकर खड़ा कर देने का हुक्म दे दिया।

पंडित को घेरे हुए दो सिपाही जाली के बाहर ले आए। पंडित को वहाँ खड़ा कर सब सिपाही चले गए तो बिना एक भी शब्द बोले विभूतिचरण घूमा और दीवानखाने से बाहर जाने लगा इस पर जाली के पीछे से जोधाबाई ने आवाज दे दी, "पंडित जी! मैंने आपसे एक प्रार्थना करने के लिए यहाँ बुलाया है।"

विभूतिचरण एक औरत की आवाज सुनकर रुका और पुनः जाली की ओर मुख कर पूछने लगा, "मैं नहीं जानता कि कौन बोल रहा है। मैं हवा में उत्तर देने का स्वभाव नहीं रखता।"

"तो इन सिपाहियों ने बताया नहीं कि आपको कहाँ लाया गया है?"

"नहीं, जी।"

"तो सुनिए! जयपुर-नरेश की एक लड़की इस महल में मलिका बनाकर लाई गई है। मैं वही औरत हूँ। शहंशाह-ए-हिंद की बेगम।"

"ओह!" विभूतिचरण अब जाली की ओर मुख कर खड़ा हो गया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था और जाली की ओर हाथ जोड़ नमस्कार कर बोला, "यह बेअदबी कि हिंद की मलिका का मुनासिब मान नहीं किया, अनजाने में हो गई है। माफी चाहता हूँ।"

"पंडित जी! बैठिए।"

विभूतिचरण बैठ गया। जाली के पीछे से आवाज आई, "आपने भोजन कर लिया है?"

"हुजूर! स्नान और पूजा तो की है, मगर भोजन नहीं किया।"

"किसलिए?"

"जब तक इस अत्याचार की, जो मुझ पर किया गया है, वजह नहीं बताई जाती, अन्न का दाना पेट में नहीं जा सकता।"

"क्या अत्याचार हुआ है?"

"बिना अपराध बताए पूजा के आसन से उठा हथकड़ी और बेड़ी लगा इक्के में डाल यहाँ लाया गया है। मैं यह बिना वजह समझता हूँ। इसी कारण इसे अत्याचार कह रहा हूँ।"

"सत्य! यह तो कदाचित् इस कारण किया गया है कि आपने यहाँ आने से इनकार किया होगा।"

"मैं किसी का सेवक नहीं हूँ। कहीं आने-जाने पर मुझे कोई विवश नहीं कर सकता। मैं पूजा पर बैठा था कि मुझे बाँहों से पकड़ खींचकर पूजा के आसन से उठा दिया गया। पीछे हथकड़ी और बेड़ी लगा इक्के में लाद यहाँ ले आया गया हूँ।"

"मगर एक शहंशाह का हुक्म तो मानना ही चाहिए। यदि उसके हुक्म की अदूली की जाएगी तो उसकी हकूमत नहीं चल सकती।"

"यह ठीक है। मगर मैं शहंशाह से भी बड़े शहंशाह की अर्दली में उपस्थित था। उसकी आज्ञा के बिना वहाँ से मैं आ नहीं सकता था।"

"तो यह उस शहंशाहों के शहंशाह की बेअदबी हुई है। आप उनके बीच में क्यों आते हैं? वे दोनों आपस में ले-दे कर लेंगे। जहाँ तक आपका संबंध है आपको अपने शहंशाह का हुक्म मानना चाहिए था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"महारानी जी! आप ठीक कहती हैं और मैं उस शाह अजीम के दरबार में ही फरियाद कर रहा हूँ। मेरी फरियाद करने का यही तरीका है। जब तक फरियाद सुनी नहीं जाती तब तक अन्न नहीं लूँगा।"

"क्या फरियाद कर रहे हैं?"

"मैं एक आजाद इनसान हूँ और किसी की गुलामी मैंने अभी तक मंजूर नहीं की। इसलिए मुझे अपना गुलाम समझनेवाले को मना कर दिया जाए। वह अपना काम करे और मुझे अपना काम करने दिया जाए।"

"आपका क्या काम है?"

"जब मुझे पकड़ा गया था, मैं अपने बनानेवाले को स्मरण कर रहा था। उसी के दरबार में अर्ज़ी कर रहा हूँ कि मुझे अपने काम करने में कोई बाधा न डाले।"

"मैं समझती हूँ कि जिससे आप अर्जी कर रहे हैं, उसने आपकी अर्जी मंजूर कर ली है और मैं उसी की यह बात कह रही हूँ कि वह आपको प्रेरणा दे कि मेरे प्रश्नों का उत्तर आप देते जाएँ।"

पंडित जी मुस्कराए। वह समझ गए कि पुरुष से स्त्री अधिक युक्ति-युक्त बात कर सकती है। इस पर भी उसने कहा, "बेगम बहन! मुझे अनुभव यह होने दें कि मेरी अर्जी उस बड़े दरबार में मंजूर हो गई है। जब मुझे यह अनुभव होगा तो फिर मैं बेगम बहन की बात सुन उसके प्रश्नों के उत्तर दे सकूँगा।"

"कैसे अनुभव होगा कि आप एक पक्षी की भाँति उड़ जाने के लिए आजाद हैं?"

"मैं यहाँ से उड़कर सीधा अपने घर वहीं पूजा के आसन पर जाकर बैठूँगा तो मैं अनुभव कर सकूँगा कि मेरी अर्जी मंजूर हो चुकी है। तब बहन के प्रश्नों का उत्तर दे सकूँगा।"

"परंतु वहाँ जाने में तो बहुत देर लग जाएगी। इतने में तो अनजाने में किसी प्रकार का अनर्थ भी हो सकता है।"

पंडित समझ गया था कि महारानी सुंदरी का पता जानना चाहती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदाचित् वह उसकी किसी प्रकार से सहायता करना चाहती हैं। यद्यपि वह समझ रहा था कि उसकी वर्तमान मुसीबत में शहंशाह तथा महारानी सहायता करेंगे तो उसका अधिक अनिष्ट कर देंगे। परंतु वह सहायता स्वीकार करना अथवा न करना सुंदरी का काम है, वह उसमें हस्तक्षेप क्यों करे? इस कारण उसने कहा, ''बेगम बहन की बात मैं मान लेता हूँ। इस पर भी जिस विद्या के आश्रय से आपके प्रश्नों का उत्तर देने की सामर्थ्य प्राप्त कर सकता हूँ, वह सामर्थ्य भी तो पेट में अन्न जाने पर ही आएगी। इसलिए मुझे यहाँ की सराय में जाने की इजाजत मिले। मैं वहाँ ही अपनी दैनिक पूजा समाप्त कर अन्त ले लूँ। तब ही मुझे समझ आ सकेगा कि मैं अब स्वतंत्र हूँ।''

जोधाबाई ने बात सुगमता से बनती देख कह दिया, ''इतनी देर तो हमारे प्रश्नों के उत्तर में सहन की जा सकती है और मैं समझती हूँ कि सर्वशक्तिमान् परमात्मा भी इसकी इजाज़त दे रहा है।

''इसलिए एक प्रहर तक हम शाही सवारी पंडित जी के लिए सराय में भेजेंगे और दुनियावी शहंशाह यह उम्मीद करेंगे कि तब तक पंडित जी को विश्वास हो जाएगा कि परमात्मा ने उनकी अर्जी को मंजूर कर यहाँ हुक्म भेज दिया है कि हम पंडित जी का पहले जैसा ही मान करें।''

पंडित जी ने झुककर जाली को सलाम किया और दीवानखाने से बाहर चला आया। वहाँ खड़े दरबान ने हाथ जोड़ पंडित जी से कहा, ''हुजूर! इधर आइए।''

वह पंडित जी को राजमहल से बाहर ले गया और वहाँ खड़े एक शाही इक्के पर बैठा नगर सराय में ले गया। सरायवाले को पहले ही यह हुक्म था कि पंडित जी की सेवा-सुश्रूषा निःशुल्क करनी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय परिच्छेद

निरंजन देव और सुंदरी नगर चैन से भागे तो दिन चढ़ने के उपरांत ही मथुरा पहुँच सके। एक बात निरंजन देव को दिन चढ़ने पर पता चली कि सुंदरी शाही बेगमों की-सी पोशाक पहने हुए थी। परमात्मा ने सूरत-शक्ल भी ऐसी दी थी कि किसी को भी यह समझ आ जाता कि कोई हिंदू युवक किसी शाही महल की स्त्री को भगाए लिए जा रहा है।

मथुरा नगर में प्रवेश करते ही नगर के चौकीदारों को संदेह हुआ तो उन्होंने नगर-कोतवाल को सूचना दे दी और कोतवाल ने उसी समय यह आज्ञा जारी कर दी कि इस इक्केवाले को पकड़कर उसके सामने उपस्थित किया जाए।

निरंजन देव भी इस भय को समझ गया था। इस कारण उसने धर्मशाला में जाकर सबसे पहले सुंदरी के लिए सामान्य स्त्रियों के पहनने योग्य कपड़ों का प्रबंध किया। उसने धर्मशाला में इक्का खड़ा किया और धर्मशालावाले को कहा, ''एक पृथक् कमरा चाहिए।''

धर्मशालावाले ने विस्मय में दोनों को सिर से पाँव तक देखा और कहा, ''अपने निवास-स्थान का पता लिखवाओ।''

निरंजन देव ने अपने पिता का नाम इत्यादि लिखा दिया और सुंदरी को अपनी पत्नी लिखाया। धर्मशाला के मुंशी ने सब कुछ धर्मशाला के रजिस्टर में लिखकर सेवक को कमरा खोलकर देने की आज्ञा दे दी।

निरंजन देव समझ रहा था कि वह किसी समय भी पकड़ा जा सकता है। इस कारण वह सुंदरी को कमरे में छोड़ बाजार की ओर लपका। वहाँ से सामान्य साड़ियाँ और चोलियाँ खरीद लाया। साथ ही सिंदूर और हाथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पहनने की चूड़ियाँ ले आया।

धर्मशाला में आ उसने सुंदरी के वस्त्र बदलवाए और फिर चुपचाप दोनों धर्मशाला से निकल यमुना घाट पर पहुँच नौका पर चढ़कर यमुना पार चले गए। वहाँ से वे वृंदावन पैदल ही जा पहुँचे। वृंदावन में उसने नया घोड़ा-इक्का खरीदा और पुनः सवार हो वे दिल्ली की ओर चल पड़े।

निरंजन देव और सुंदरी के धर्मशाला से जाने के एक घड़ी उपरांत कोतवाल के आदमी पता करते हुए धर्मशाला में आए। नगर के द्वार पर खड़े चौकीदारों ने धर्मशाला के अस्तबल में खड़ा इक्का और घोड़ा पहचाना तो मुंशी से पूछने लगे। मुंशी ने बताया, "दो घंटे पहले एक आदमी और मुसलमानी पहरावे और कीमती जेवर पहने एक औरत आए थे और अपना नाम-पता बताकर दो नंबर के कमरे में गए हैं।"

कमरे का दरवाजा बंद था, परंतु उसे ताला नहीं लगा था। दरवाजा खोलकर देखा गया तो वे वस्त्र जिनको पहने नगर-चौकीदार और सराय के मुंशी ने देखा था, एक चौकी पर रखे थे। भूषण वहाँ नहीं थे और न ही वह युवक और स्त्री थे।

यह अनुमान लगाया गया कि वे यमुना-स्नान पर गए होंगे। इस कारण वहीं धर्मशाला पर पहरा बैठा दिया गया कि जब वे आएँ तो उनसे पूछताछ की जाए।

साथ ही एक पत्र आगरा के कोतवाल को लिख दिया गया कि निरंजन देव के पिता शंकर देव जौहरी से पता किया जाए कि उसका लड़का कहाँ है और उसके साथ कौन है।

सायंकाल तक मथुरा के कोतवाल के सिपाही धर्मशाला में ठहरे युवक-युवती की प्रतीक्षा करते रहे, परंतु वे दोनों मथुरा पार से नहीं लौटे। अगले दिन मथुरा के यमुना पार से पता किया गया और पता चला कि एक युवक और युवती यमुना पार से आए थे, परंतु वापस नहीं गये। तब वृंदावन में खोज आरंभ हुई।

आगरे में भी शंकर देव की दुकान पर सरकारी सिपाही पहुँचे तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनको वहाँ से पता चला कि निरंजन देव ने पिता की इच्छा के विरुद्ध एक भटियारिन की लड़की से विवाह कर लिया है और जब पिता ने उसे घर से निकल जाने की आज्ञा दी तो वह एक सप्ताह से घर से लापता है।

यह पूछे जाने पर कि वह घर से कुछ लेकर गया है, पिता ने बता दिया कि लड़के के पास एक सहस्र से ऊपर तो सोने की मुहरें हैं और भूषादि भी हैं जो वह भटियारिन की लड़की को देने के लिए ले गया था।

इससे एक भटियारिन की लड़की के अगवाह का मामल दर्ज कर जाँच बंद कर दी गई। इस पर भी मथुरा के कोतवाल ने अपनी खोज जारी रखी। मथुरा के चौकीदारों का कहना था कि लड़की मुसलमान थी। वह उसके उन कपड़ों से भी सिद्ध होता था जो धर्मशाला के कमरे में पड़े मिले थे और मुसलमान कोतवाल की दृष्टि में एक मुसलमान लड़की का एक हिंदू द्वारा भगाकर ले जाना इतना बड़ा अपराध था कि उसे फाँसी तक का दंड दिया जा सकता था।

वृंदावन में उस इक्के और घोड़े का हुलिया लिख लिया गया जो निरंजन देव ने वहाँ बीस स्वर्ण मुहर में खरीदा था और खोज जारी रही।

निरंजन देव और सुंदरी अपने भय का कारण देख नगर-नगर में भटकते हुए हरिद्वार जा रहे थे। मथुरा कोतवाल के सिपाही उनका पीछा करते हुए चले जा रहे थे। सहारनपुर में उनको एक मकान में रात सोते देखा गया, परंतु प्रातःकाल जब मकान से बाहर कोई नहीं निकला तो मकान का द्वार तोड़कर भीतर घुसा गया। जाँच-पड़ताल पर पता चला कि दोनों वहाँ से भी फरार हो गए हैं। वहाँ से भी वे मकान के पीछे की खिड़की से कूदकर भागे मालूम होते थे।

इस सब समय अकबर और पंडित विभूतिचरण में बातचीत होती रही। यदि आगरा का कोतवाल वहाँ के उच्च अधिकारियों को सूचित करता और वह सूचना अकबर तक पहुँचती तब शाही फरमान से पूर्ण देश में छानबीन आरंभ हो जाती। परंतु आगरा के कोतवाल ने इसे एक भटियारिन की लड़की के अगवाह की बात समझ दाखिल दफ्तर कर दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। मथुरा का कोतवाल तो इसलाम की रक्षा के विचार से निरंजन देव का पीछा कर रहा था। उसके मस्तिष्क में यह भूत सवार था कि एक मुसलमान औरत किसी काफिर के अधिकार में नहीं जा सकती। उसे सुन्नत करा पहले इसलाम मंजूर करना चाहिए तब ही वह मुसलमान औरत का खाविंद बन सकता है।

जिस दिन विभूतिचरण महारानी जोधाबाई के हुक्म से सराय में लाया गया और वह पूजा-पाठ तथा भोजन कर दो घड़ी आराम कर चुका तो फिर शाही सवारी आई और पंडित को महल में ले गई।

यह बात सराय के मालिक के लिए नवीन नहीं थी। जब-जब भी विभूतिचरण सराय में आकर ठहरता था, उसे ले जाने तथा छोड़ने के लिए शाही सवारी आया करती थी। विभूतिचरण को पुनः महल के अंतःपुर में जालीवाले दीवानखाने में लाकर खड़ा किया गया तो एक खादिमा उसके समीप आ झुककर सलाम कर बोली, ''आप इस चौकी पर तशरीफ रखें। महारानी आधी घड़ी में आनेवाली हैं।''

पंडित चौकी पर बैठ जाली के पीछे से आवाज आने की प्रतीक्षा करने लगा। खादिमा पंडित को वहाँ छोड़ चली गई। विभूतिचरण विचार कर रहा था कि यह जयपुर-नरेश की लड़की बहुत ही समझदार औरत है। उसने अपने पति शहंशाह के रोष को भी शांत किया होगा, तभी तो वह उसे महल के बाहर स्वतंत्र घूमने की छूट दिलवा सकी है।

इसी प्रकार के विचारों के प्रवहन से वह यह विचार करने लगा था कि क्या महारानी सुंदरी और भटियारिन के परिवार की बात पूछेगी अथवा अपने विषय में कोई प्रश्न करेगी।

विभूतिचरण को बहुत देर तक प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ी। जाली के पीछे से आवाज आई, ''पंडित जी! नमस्कार करती हूँ।''

हिंदू ढंग से एक-एक विद्वान ब्राह्मण का अभिवादन सुन विभूतिचरण के मन का रहा-सहा रोष भी मिट गया। उसने भी आशीर्वाद दे दिया, ''बेगम बहन! सौभाग्यवती रहो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आपको विश्वास हो गया है या नहीं कि परमात्मा के दरबार में आपकी अर्जी सुनी जा चुकी है और उस पर हुक्म सादर हो चुका है?"

"हाँ, बेगम बहन! अब मैं पूरे इत्मीनान से आपके सवालों का जवाब दे सकूँगा।"

"पहले तो आप यह बताइए कि सुंदरी भटियारिन के विषय में आप क्या जानते हैं?"

"उसके विषय में मैंने अपनी विद्या का प्रयोग किया है और जो कुछ जान पाया हूँ, वह एक मुल्क की एक आलातरीन हस्ती से संबंध रखता है।"

"पंडित जी! यही तो पूछ रही हूँ कि क्या संबंध है?"

"बता सकता हूँ। परंतु यह उस हस्ती की इजाज़त के बिना नहीं बता सकता।"

"इस मुल्क में आलातरीन हस्ती आप किसको मानते हैं?"

विभूतिचरण धीमी हँसी हँसता हुआ बोला, "बेगम बहन, यह मैं नहीं बताऊँगा। एक विचार से मैं अपने को किसी से कम आलातरीन नहीं मानता। मेरा मतलब ज्योतिष विद्या से है। इस प्रकार हमारे गाँव का एक जूता गाँठनेवाला अपने फन में आलातरीन है। जूते का चमड़ा घिस सकता है, मगर उसका लगाया जोड़ नहीं टूटता। इस कारण मैं यह नहीं बताऊँगा कि मेरा किस आलातरीन से मतलब है।"

"तब तो कुछ बात नहीं बनी। आपको इतना कष्ट देने का कुछ लाभ नहीं हुआ।"

"लाभ तो हो सकता है। यदि आप नाम नहीं पूछें।"

"अच्छा। नहीं पूछूँगी।"

"और जो कुछ बताऊँगा उससे अधिक नहीं पूछेंगी। मेरा मतलब है कि मेरे कहे पर प्रश्न नहीं करेंगी।"

"ठीक है। नहीं करूँगी।"

"तो सुनिए। चौदह-पंद्रह साल का एक लड़का अपने उस्ताद के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ हिंदुस्तान में आया था। उसका वालिद एक जान जोखिम की मुहिम पर घर से बाहर था। लड़का अपने मुर्शिद के साथ घूमता हुआ गुमनाम एक ब्राह्मण के भेस में एक विद्वान् ब्राह्मण के घर मेहमान बनकर ठहर गया। वहाँ उसकी संगत में ब्राह्मण की विधवा पतोहू आ गई और उसने भटियारिन की सराय में जाकर एक बच्ची प्रसव की।''

महारानी जोधाबाई ने पूछ लिया, ''यदि आज्ञा हो तो यह जानना चाहूँगी कि वह विधवा ब्राह्मणी बच्ची कहाँ है?''

''इस विषय में इतना ही जान सका हूँ कि वह भटक रही है। उसके खाविंद के संबंधी उसे एक मुसलमान की रखैल जान मुसलमान समझते हैं और आज इस मुल्क में मुसलमान हिंदू नहीं बन सकता। कम-से-कम वह अपने को ऐसा प्रकट नहीं कर सकता।''

''ऐसी बात नहीं है। कम-से-कम इस महल में तो यह नहीं है।''

''यह बात मेरी ज्योतिष विद्या से संबंध नहीं रखती। मेरे अपने देखने और अनुभव करने की बात है। यह गलत भी हो सकती है।

''इसमें गलती का कारण यह हो सकता है कि मैं समाज के एक गड्ढे में खड़ा बहुत दूर की वस्तुओं को नहीं देख सकता। बेगम बहन एक बुलंद जगह पर बैठी बहुत दूर तक और बहुत अच्छी तरह देख सकती हैं। मैं उनकी बात को गलत नहीं कह सकता।''

''तो अब आप अपने घर जाएँगे?''

''मैं समझता हूँ कि महारानी जी ने फरमाया था कि मेरी अर्जी परमात्मा के दरबार में मंजूर हो गई है। उस अर्जी में यह माँगा गया था कि मुझे उनके दरबार में बैठ अपना पूजन जारी रखने की इजाजत मिलनी चाहिए।''

''आपके लिए गाँव तक जाने की सवारी का प्रबंध हो गया है। इस बार आप स्वयं पैदल चलकर यहाँ नहीं आए थे, आपको बाँधकर लाया गया था, इसलिए आपको वहाँ पहुँचाने का उनका कर्त्तव्य हो गया है जो आपको बाँधकर लाए थे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं सल्तनत का और उसकी मलिका का शुक्रिया अदा करता हूँ।"

घर को शाही सवारी में जाते हुए विभूतिचरण भटियारिन की सराय में ठहरा और यह देख संतोष प्रकट करता रहा कि उनके लिए इमारत बनवाई जा रही है। इस पर रामकृष्ण ने कहा, "पंडित जी! शहंशाह का एक कारिंदा करीमखाँ है। वह सुंदरी के अपहरण के दिन शहंशाह के साथ था। वह उस दिन भी यहाँ आया था जिस दिन शाही सैनिकों ने इस सबको तबाह कर दिया था। इसके उपरांत वह अब तीन दिन हुए तो यहाँ आया था और आपके विषय में मुझसे कुछ पूछ रहा था। मैं न तो आपका नाम जानता हूँ और न ही आपका पता। इस कारण कुछ बता नहीं सका।

"परंतु वह करीमखाँ कहता था कि सुंदरी एक मुसलमान की लड़की है। इस कारण उसने हम सबको भ्रष्ट कर दिया है और हम अब हिंदू नहीं रहे।"

पंडित इस सूचना से विस्मय में रामकृष्ण का मुख देखता रह गया। कुछ विचार कर उसने पूछ लिया, "तो यह लड़की, मेरा मतलब है कि सुंदरी, कलमा पढ़ती हुई माँ के पेट से निकली थी?"

रामकृष्ण इस व्यंग्य को समझा नहीं। पंडित ने ही अपनी बात को आगे चलाया और कहा, "मैं समझता हूँ कि कलमा पढ़ने से ही एक इंसान मुसलमान होता है। तो क्या यह लड़की कलमा पढ़ती हुई पैदा हुई थी जो यह कहा जाता है कि वह जन्म से मुसलमान है?"

"परंतु पंडित जी! क्या सुंदरी किसी मुसलमान की लड़की है? उसकी माँ तो हिंदुआनी प्रतीत होती थी।"

विभूतिचरण ने वह सब कुछ बताने की आवश्यकता नहीं समझी जो उसने महारानी जोधाबाई को बताया था। उसने केवल यह कहा, "यह तो तुमको मालूम है कि वह अवैध संतान थी। उसकी माँ विधवा थी। उसका गर्भ किससे था? यह उसने नहीं बताया। करीमखाँ की बात ठीक भी हो सकती है। मगर मैं तो यह मानता हूँ कि यह हिंदू माँ की लड़की थी और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक हिंदू के घर में पली थी। इस कारण वह हिंदू ही थी।''

परंतु पंडित की इस युक्ति ने रामकृष्ण और उसकी पत्नी को प्रसन्न एवं संतुष्ट नहीं किया। उसने कुछ कहा नहीं, परंतु पति-पत्नी दोनों पंडित का मुख देखते रह गए।

विभूतिचरण ने उनको गंभीर मुख मौन देख कहा, ''परंतु मैं इतने मात्र से तुम्हें मुसलमान हो गया नहीं मानता।''

पंडित जी के विदा होने के उपरांत राधा ने पति से कहा, ''मैं समझती हूँ कि हमें अपने इस पाप-कर्म का प्रायश्चित्त करना चाहिए।''

''क्या प्राचश्चित्त करना चाहिए और क्यों?''

''हमने एक मुसलमान की संतान को अपने रसोई घर में बैठने और खाने-पीने दिया है और उसके हाथ का बना खाया-पीया है। हमें अपने पुरोहित जी से पता करना चाहिए कि किस प्रकार प्रायश्चित्त होगा।''

2

संयोगवश निरंजन देव और मथुरा के जासूस इकट्ठे हरिद्वार पहुँचे। उन दिनों हिंदुओं को अपने तीर्थस्थानों पर जाने का कर देना पड़ता था। निरंजन देव नगर चौकी पर कर दे रहा था कि मथुरा के जासूस भी वहाँ जा पहुँचे। उन्होंने अपने-आपको हिंदू लिखाया और निरंजन देव कर देकर उसकी रसीद ले रहा था कि एक जासूस निरंजन देव से बोला, ''मगर यह लड़की तो मुसलमान है। इसका कर किसलिए दे रहे हो?''

निरंजन देव ने तुरंत कह दिया, ''नहीं खाँ साहब! यह गलत है। किसी और के मुतअल्लिक कह रहे मालूम होते हैं।''

चौकीवाला इस झगड़े का अर्थ नहीं समझा। उसने कहा, ''ठीक है। अगर दोनों हिंदू हैं तो यह लो रसीद और रास्ता खाली करो। और लोग भी तो हैं।''

निरंजन देव ने इसे सुअवसर समझ अपना सामान उठाया और चुंगी के कठघरे से निकल सड़क पर पहुँचा और पंडों से वहाँ निवासादि के विषय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में पूछताछ करने लगा।

जब पंडों को पता चला कि यात्री को अपने पुरोहित पंडों का ज्ञान नहीं तो दो पंडे परस्पर झगड़ने लगे। निरंजन देव वहाँ से शीघ्र दूर निकल जाना चाहता था और पंडे निरंजन देव की बाँह पकड़ अपनी-अपनी ओर खींचने लगे थे। इस खींचातानी में वही मथुरा का जासूस अब चुंगी के एक सिपाही को साथ लेकर आ गया और पंडों को डाँटने लगा, "यह क्या कर रहे हो ?"

पंडे इसका अर्थ समझने के लिए चुंगी के मुंशी की ओर देखने लगे। चुंगी के मुंशी ने कह दिया, "ये दोनों मुसलमान हैं। तुम इनको कहाँ लिए जा रहे हो ?"

मुसलमान की बात सुनते ही पंडे निरंजन देव को छोड़ विस्मय से इन पति-पत्नी का और मुंशी का मुख देखने लगे। इस पर मुंशी ने निरंजन देव से कहा, "तुम दोनों चुंगी में चलो। तुम मुसलमान हो।"

निरंजन देव ने अब दावे से कहा, "कौन कहता है ?"

"यह मथुरा के कोतवाल का आदमी है। यह कहता है।"

"इसके पास परवाना है कोई मेरे पकड़ने का ?"

इस पर मुंशी मथुरा के जासूस की ओर देखने लगा। जासूस ने कहा, "मेरा नाम जफ़रखाँ है। इनको मत जाने दो और मथुरा के कोतवाल से पूछ लिया जाए।"

मुंशी ने अब जासूस जफ़रखाँ को कहा, "यह तुम्हारा काम है कि साबित करो कि यह मुसलमान है या यह औरत मुसलमान है। मैं रोक रखने का अखत्यार नहीं रखता।"

"अगर तुम इन्हें एक हफ्ते के लिए रोक लेते तो मैं इनके पकड़ने का परवाना ले आता।"

"यह मैं नहीं कर सकता। तुम यहाँ के कोतवाल के पास जाओ।"

हरिद्वार का कोतवाल एक हिंदू कायस्थ था। यह बात वह जासूस जानता था कि वह तो इतना भी नहीं करेगा जितना मुंशी ने किया है। इस कारण वह बिना कुछ कहे निरंजन देव के पीछे-पीछे चल पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस थोड़े-से झगड़े का एक परिणाम यह हुआ कि पंडे उनको अपने किसी मकान में रखने के लिए तैयार नहीं हुए।

ये दोनों गंगा घाट पर जा बैठे। मथुरा का जासूस उनके समीप ही बैठा था। पंडे उनसे कुछ अंतर पर खड़े हो इनको देख रहे थे। वे अनिश्चित मन थे कि इन यात्रियों को गंगास्नान ब्रह्म कुंड पर कराएँ अथवा उनका पीछा छोड़ें।

एक पंडे ने दूसरे पंडे से कहा, "इस बात की जाँच तो हो सकती है कि यह युवक मुसलमान है अथवा नहीं। इसकी सुन्नत देखी जा सकती है।"

दूसरे ने कहा, "इस मियाँ ने चुंगी पर कहा था कि युवक तो हिंदू है, परंतु एक मुसलमान लड़की को भगा लाया है। यह बहुत बड़ा जुर्म है।"

एक पंडे ने साहस किया और निरंजन देव के पास आकर बैठ गया। उसने समीप बैठ कहा, "लाला जी! तो यह मियाँ झूठ कहता है न?"

"हाँ! यह गुंडा है। मेरी पत्नी पर मुग्ध हो इसे भगा ले जाना चाहता है। यह कह रहा है कि वह मुसलमानिन है और मैं इसे भगा लाया हूँ। यह बात गलत है। यह एक भटियारे रामकृष्ण की लड़की है। मेरा इससे वेदमंत्रों से विवाह हुआ है।"

"तो लाला! तुम चलो, यहाँ के कोतवाल से बात करें। वह दयावान हिंदू है। वह आपकी सहायता करेगा।"

निरंजन देव को बात समझ आई तो उठकर पंडे के साथ कोतवाली की ओर चल पड़ा। मथुरा का जासूस भी साथ था।

निरंजन देव और सुंदरी पंडे के साथ कोतवाली जा पहुँचे। कोतवाल मिला तो पंडे ने ही निरंजन देव की कठिनाई का वर्णन किया।

कोतवाल ने मथुरा के जफ़रखाँ से पूछा, "तुम इसके पीछे क्यों लगे हो?"

जफ़रखाँ ने अपना नाम और पता बताकर कहा, "मैं इस आदमी के पीछे-पीछे मथुरा से आ रहा हूँ। यह किसी-न-किसी तरह मुझको चकमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देता हुआ चला आ रहा है। यह आदमी इस औरत के साथ, जो मुसलमानी पहरावे में थी, मथुरा में दाखिल हुआ तो कोतवाल ने इसे पकड़ना चाहा। मगर यह वहाँ से चकमा देकर चला आया।''

''क्यों लाला जी!'' कोतवाल ने पूछा, ''यह ठीक कहता है?''

''मैं नहीं जानता कि यह मेरा पीछा कर रहा है और क्यों कर रहा है। मैं कहता हूँ कि मैं आगरा का रहनेवाला वहाँ के एक जौहरी का लड़का हूँ। नाम निरंजन देव है। यह औरत मेरी बीवी है। यह आगरा से दस मील के अंतर पर स्थित एक भटियारे की लड़की है। इससे शादी करने पर मेरे पिता मुझसे झगड़ पड़े थे और मैं उनसे पृथक् में एक परिवार चलाना चाहता हूँ। मैं हरिद्वार में स्नान, पूजा-पाठ कर यहाँ से किसी नगर में जा जौहरी का काम करूँगा।''

कोतवाल ने पूछा, ''तुम मुसलमान हो?''

''नहीं साहब! मैं हिंदू हूँ और मेरा नाम निरंजन देव है। मेरे पिता का नाम शंकर देव है।''

इस पर कोतवाल ने सुंदरी से पूछा, ''तुम किसकी लड़की हो?''

''मैं सुंदरी हूँ। मेरे पिता का नाम रामकृष्ण भटियारा है और माता का राधा देवी है। मेरा इनसे विवाह हो चुका है।''

कोतवाल ने मथुरा के जफ़रखाँ से कह दिया, ''देखो खाँ साहब! यहाँ से भाग जाओ। नहीं तो मैं तुम्हें कैदखाने में डाल दूँगा। जाओ, इसकी गिरफ्तारी का परवाना लेकर आओ। नहीं तो मैं तुमको गिरफ्तार कर लूँगा।''

जफ़रखाँ गया तो पंडे ने अपने परिश्रम का फल पाने के लिए कहा, ''आप मेरे यजमान बन जाइए। मैं आपको स्नान इत्यादि कराऊँगा।''

निरंजन देव मान गया। पंडे का एक मकान था। वह इनको लेकर स्नानादि के लिए ब्रह्म कुंड गंगा घाट पर जा पहुँचा।

तब तक मथुरा के जासूस ने दूसरे पंडे को भड़का दिया था कि वह तुम्हारे घर को अपवित्र कर देगा। वह लड़की मुसलमान की बेटी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका परिणाम यह हुआ कि नगर-भर के पंडे पंक्ति बाँध घाट का मार्ग रोककर खड़े हो गए और कहने लगे, ''यह लड़की इस स्थान पर स्नान नहीं कर सकती। युवक कर सकता है।''

वह पंडा जो इनको कोतवाल के पास ले गया था, बहुत समझाता रहा परंतु पंडे नहीं माने।

पंडे आनंद प्रिय ने निरंजन देव से कहा, ''यह बहन तो नीचे गंगा पर स्नान कर सकती है और लाला जी, आप ब्रह्म कुंड पर स्नान कर सकते हैं।''

यह बात निरंजन देव को पसंद नहीं आई। वह नीचे आ गंगा घाट पर स्नान करने लगा। सुंदरी उसके साथ ही थी।

सुन्दरी विचार कर रही थी कि यहाँ के हिंदू विचित्र हैं जो एक सामान्य-से विधर्मी के कहने पर उसके स्नान करने पर भी बाधा खड़ी कर रहे हैं। उसने स्नान नहीं किया और क्रोध में बैठी रही।

निरंजन देव ने जल्दी-जल्दी स्नान किया और बाजार से खाने के लिए पूरी-साग और मिठाई ला पंडे के मकान पर चला गया।

पंडे को निरंजन देव ने दस रुपए दिए। यह राशि वह पूजा करने पर ब्रह्म कुंड में स्नान करने के उपरांत देना चाहता था। अब बिना पूजा के ही उसने दे दिए।

पंडा बहुत प्रसन्न था, परंतु निरंजन देव उसे भी चकमा दे वहाँ से भाग जाना चाहता था। पंडा दक्षिणा ले चला गया तो पूरी, मिठाई खाते हुए निरंजन देव ने सुंदरी से कहा, ''हमें यहाँ से भी भाग जाना चाहिए।''

''किसलिए?''

''मुझे जफ़रखाँ से डर लग रहा है। मैंने इसे सहारनपुर में भी देखा था और इसी कारण मकान की पिछली खिड़की से भाग आया था। अब यहाँ इसे पुनः देख मैं समझा हूँ कि यह सत्य ही मथुरा से हमारे पीछे लगा है। यह संभव है कि हमारे पकड़ने का परवाना यह मथुरा से मँगवाए। तब हम बंदी बना मथुरा भेज दिए जाएँगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं तो एक बात का विचार कर रही हूँ।"

"क्या?"

"मैं मुसलमान होना स्वीकार कर लूँ और आप मुसलमान बन जाइए। बस, काम बन जाएगा।"

"मगर मेरी सुन्नत करवा देंगे।"

"तो इससे आप मर नहीं जाएँगे। लाखों लोग करवा रहे हैं। आप भी करवा लीजिएगा।"

"इस पर भी जब हम पकड़े गए तो शहंशाह की चहेती रखैल को भगा ले जाने के जुर्म में मैं तो फाँसी पर चढ़ा दिया जाऊँगा।"

इस पर सुंदरी ने कहा, "तो हमें शहंशाह की सल्तनत से कहीं बाहर चले जाना चाहिए।"

"यही तो कह रहा हूँ। हम उत्तराखंड की पहाड़ियों में जाकर कहीं नाम बदलकर बस जाएँगे।"

"तो रात को यहाँ से चुपचाप चल देना चाहिए।"

"हाँ। यही तो कह रहा हूँ।"

इस निश्चय के उपरांत दोनों ने पेट भर खाया और विश्राम करने के लिए सो गए।

बाहर जफ़रखाँ सहारनपुर वाली घटना होने से रोकने का प्रबंध कर रहा था। उन पंडों को जिन्हें दान-दक्षिणा नहीं मिली थी, वह भड़काने लगा था।

वह कह रहा था, "मैं साबित कर दूँगा कि यह औरत मुसलमान है और यहाँ हिंदुओं को भ्रष्ट करने के लिए आई है।"

एक ने, जो निराश हो चुका था, कहा, "मगर जफ़रखाँ साहब! आपने या किसी ने भी इनको किसी तरह से तंग किया तो यहाँ का कोतवाल आपको पकड़कर कैद कर लेगा। यह किसी का लिहाज नहीं करता।"

"मैं यह कह रहा हूँ," जफ़रखाँ ने कहा, "तुम किसी-न-किसी प्रकार इसको यहाँ रोको। मैं तुममें से ही किसी को एक चिट्ठी देकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहारनपुर के कोतवाल के पास भेज देता हूँ और वह वहाँ से इनकी गिरफ्तारी का परवाना तैयार करा ले आएगा और तब मैं जानेवाले को इनाम दिलवाऊँगा। उसकी इस सेवा के लिए शहंशाह से सिफारिश कर दूँगा जिससे वहाँ से इनाम मिलेगा।''

सहारनपुर से सहायता आने में तीन दिन लग जाने की आशा थी और तीन दिन तक यात्रियों को रोकने की बात होने लगी। जफर ने एक पंडे युवक को, जिसके पास अपना टट्टू था, सहारनपुर के कोतवाल के नाम पत्र देकर भेज दिया। सब पंडों ने आनंद प्रिय के मकान को घेरने का प्रबंध कर दिया। पहरेदार नियुक्त कर दिए गए।

सहारनपुर का कोतवाल एक मुत्तअस्सिब मुसलमान था। जफ़रखाँ उससे आशा करता था कि वह एक गिरफ्तारी का परवाना तैयार कर भेज देगा और फिर निरंजन देव और उसकी बीवी को मुसलमान मान लिया जाएगा। वह समझता था कि एक बार ये लोग मथुरा पहुँचे तो दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा।

जफ़रखाँ जब इनका पीछा करता हुआ मथुरा से चला था, तब तक आगरा से किसी प्रकार की सूचना नहीं आई थी। इस कारण वह विचार कर रहा था कि अगर निरंजन देव का कहना ठीक भी हुआ तब भी कुछ हानि नहीं होगी। वह मथुरा में जाकर छूट जाएगा। इससे अधिक तो कुछ हो नहीं सकता। इस्लाम की इस खिदमत के लिए उसे इनाम नहीं मिलेगा तो दंड भी नहीं दिया जाएगा।

आधी रात को जब निरंजन देव और सुंदरी मकान से निकलकर भागने लगे तो वहाँ के पंडों ने, जो मकान को चारों ओर से घेरे हुए थे, उनको भागने नहीं दिया। पंडों ने कह दिया, ''हमने आपको यहाँ चार दिन तक रोककर रखने का वचन दिया है। आप जा नहीं सकते।''

''किसको वचन दिया है ?''

''जफ़रखाँ को। वह कहता है कि आपकी गिरफ्तारी का परवाना इन तीन-चार दिनों में आ जाएगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरंजन देव ने कहा, ''निर्दोष व्यक्तियों को रोककर रखने का आप पाप कर रहे हैं।''

''देखो लाला! रात को चोरी-चोरी भागने का यत्न ही यह प्रकट करता है कि तुम चोर हो। हम तुम्हें नहीं जाने देंगे।''

विवश निरंजन देव दिन निकलने की प्रतीक्षा करने लगा। उसने विचार किया था कि प्रातः वह कोतवाल से कहकर छुट्टी पा लेगा। परंतु दिन के समय भी उसे मकान से निकलने नहीं दिया गया। तब तक हरिद्वार के पूर्ण नगर में यह विख्यात हो चुका था कि एक मुसलमान औरत को एक हिंदू भगाकर लाया है और उसकी गिरफ्तारी के परवाने की प्रतीक्षा की जा रही है।

तीसरं दिन निरंजन देव और उसके साथ भागी औरत को पकड़कर सहारनपुर भेजने का हुक्म आ गया। अब हरिद्वार का कोतवाल भी विवश हो गया और उसने दोनों को पकड़कर सहारनपुर भेज दिया।

सुंदरी के मन में हिंदुओं के प्रति घृणा उत्पन्न हो रही थी। वह समझती थी कि एक हिंदू को हिंदू की बात का विश्वास करना चाहिए था। हुआ इसके विपरीत। हरिद्वार के पंडों ने एक मुसलमान की बात को सत्य माना और उनको पकड़वाने में सहायता की।

परंतु यह तो हिंदुओं की विकृत मनोवृत्ति के दर्शन का अभी आरंभ ही था। उनको सहारनपुर से पहरे में मथुरा भेज दिया गया। मथुरा में आगरे से यह सूचना आ चुकी थी कि लड़की तो हिंदू ही है। एक हिंदू युवक अपने परिवारवालों से चोरी-चोरी एक छोटी जाति की लड़की से विवाह कर भागा है। अतः मथुरा के कोतवाल ने दोनों को पहरे में आगरा भेज दिया। आगरे के कोतवाल ने निरंजन देव और सुंदरी के बयान लिए। अब तक सुंदरी हिंदुओं और सरकारी अहलकारों के अन्याययुक्त व्यवहार से तंग आ चुकी थी। वह सब सत्य-सत्य बक गई। जब कोतवाल को पता चला कि निरंजन देव ने शहंशाह के अंतःपुर की एक औरत को भगाया है तो मामला आगरे के मीरे-अदल के पास भेज दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम यह हुआ कि मामला शहंशाह के इल्म में लाया गया। अकबर सुंदरी को पा जाने पर प्रसन्न तो हुआ, परंतु वह सुंदरी से अपने संबंध की बात को गुप्त रखना चाहता था। उसने एक योजना बनाई और निरंजन देव तथा सुंदरी को पृथक्-पृथक् अपने सामने हाजिर करने का हुक्म दे दिया।

निरंजन देव आया तो उससे एकांत में भेंट कर अकबर ने बताया, "देखो निरंजन देव! तुम्हारे बाप ने तुम्हें बेदखल कर दिया है। साथ ही तुम हमारे हरम से हमारी एक प्यारी औरत को भगाने के मुजरिम हो। इस पर भी हम तुम्हें छोड़ सुंदरी के साथ रहने की इजाजत दे सकते हैं अगर तुम मुसलमान हो जाओ।"

"मगर जहाँपनाह! मैंने जुर्म किया है तो दंड भोग लूँगा। यह मुसलमान होने की शर्त किसलिए लगाई जा रही है?"

"यह इसलिए कि हमें मोतबिर जरिए से पता चला है कि सुंदरी रामकृष्ण भटियारे की लड़की नहीं है। यह उनसे पाली जा रही एक मुसलमान की लड़की है।"

"हुज़ूर! मुझे इस बात का यकीन नहीं आता। आपकी इत्तला गलत भी हो सकती है।"

"हमने यह बात रामकृष्ण से ही पता की है। यदि तुम कहो तो हम उसे बुलवाकर तुम्हारे सामने कर सकते हैं। उसने और उसके सब घरवालों ने सात दिन का व्रत रखकर प्रायश्चित्त कर लिया है।"

निरंजन देव ने विचार किया कि यदि कहने मात्र से कि वह मुसलमान होने को तैयार है, उसकी जान बख्शी जाती है और सुंदरी भी मिलती है तो उसे मान जाना चाहिए।

उसने कहा, "मुझे सुंदरी से राय करने की इजाजत दी जाए। अगर यह जानकर भी कि वह एक मुसलमान की बेटी है, वह मेरे साथ रहना चाहती है तो मैं मुसलमान हो जाऊँगा।"

सुंदरी तो पहले ही हिंदुओं के व्यवहार से क्रोध में भर रही थी। जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहंशाह ने उसे बताया कि उसका जन्म कैसे रामकृष्ण की सराय में हुआ था तो वह अपने को मुसलमान स्वीकार करने पर तैयार हो गई। निरंजन देव से उसने कहा, "मैं समझती हूँ कि यदि हरिद्वार में पंडे हमें नहीं रोकते तो हम हिंदू बने रहते हुए जीवन चला सकते थे। इसलिए मेरा मन तो इस कौम से संबंध रखने को करता ही नहीं। शेष रही मुसलमान होने की बात। अगर मैं आपकी बीवी बनकर रह सकूँ तो नाममात्र की मुसलमान भी बन सकती हूँ। वैसे मैं नहीं जानती कि मुसलमान और हिंदू में क्या अंतर है।"

"मुझे भी यह बताया गया है कि भटियारिन और उसके परिवार ने इस कारण प्रायश्चित्त किया है कि वह तुमको एक मुसलमान की लड़की समझते हैं। मुसलमान की बेटी को अपने रसोईघर से खिलाने-पिलाने के पाप का वे प्रायश्चित्त कर चुके हैं। इससे तुम तो मुसलमान ही समझी जा रही हो और मैं तुम्हारे साथ रहने के लिए मुसलमान होने को तैयार हूँ।"

इस प्रकार दोनों ने अपने मुसलमान बन जाने की स्वीकृति दी तो अकबर ने इनके लिए भी भटियारिन की सराय के समीप ही मकान बनवाने की योजना कर दी और निरंजन देव को मुसलमान बनकर रहने के लिए एक गाँव का मालिक मान लिया गया।

वही गाँव जिसमें मोहन और भगवती की ससुराल थी, पति-पत्नी को शहंशाह की ओर से भेंट में दे दिया गया।

3

विभूतिचरण तीन मास तक अपनी पूजा में व्यस्त रहा। इन दिनों कई बार शहंशाह का बुलावा आया, परंतु वह पूजाकाल में अपने गाँव से बाहर जाने से इंकार करता रहा। अब शहंशाह उसे पकड़कर तथा बाँधकर आगरा लाने की आज्ञा नहीं दे सका। वह उसके पुनः अनशन कर बैठ जाने से डरता था।

यही नहीं कि वह एक हिंदू के मर जाने से भयभीत था। शहंशाह की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar 167342
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छापूर्ति में कितने मरते हैं अथवा कितने जीवित रहते हैं, विचारणीय कभी भी नहीं हुआ था। दो बातें थीं जिनसे वह बचना चाहता था। एक तो भूखे रहकर मरनेवाले को लोग सत्य समझेंगे और युद्ध में सहस्रों को मार डालनेवाले की इस प्रकार एक के मारने से अधिक बदनामी होने की संभावना थी। युद्ध में अधिक-से-अधिक हत्याएँ करनेवाला बड़ा योद्धा माना जाता है, परंतु द्वार पर भूखे रहकर मर जाने वाले से अपमान ही हो सकता है।

इसके अतिरिक्त भी विभूतिचरण अपनी ज्योतिष विद्या से सब जान जोखिम के कार्यों में पथ-प्रदर्शक होता था। शहंशाह उसको किंचिन्मात्र अधीरता से खो देना नहीं चाहता था।

तीन माह के उपरांत वह पूजा से उठा तो सबसे पहले उसे अकबर का ही संदेश मिला। संदेश था कि शहंशाह तीन मास से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इस कारण पूजा समाप्त होने के अगले दिन विभूतिचरण आगरा के लिए चल पड़ा। उसे दो दिन आगरा पहुँचने में और दो दिन वहाँ से लौटने में लगा करते थे। मार्ग में वह भटियारिन की सराय में ठहरा करता था। इस बार अकबर ने शाही रथ सवारी के लिए भेजा था। रथ और इक्के में अंतर यह था कि इक्का एक घोड़े से चलाया जाता था और रथ दो घोड़ों से। पंडित ने भी बिना माँगे मिलनेवाले रथ का प्रयोग करना अनुचित नहीं समझा। उसका विचार था कि आगरा जाते समय वह भटियारिन की सराय में नहीं ठहरेगा। उनकी सुध वह घर लौटते समय लेगा। आगरा जाते समय जब वह सराय के स्थान से गुजरा तो वह एक के स्थान पर दो इमारतें लगभग पूर्ण हुई देख चकित रह गया। दोनों इमारतें एक-दूसरे से आधा फर्लांग के अंतर पर थीं। इस पर भी दोनों थीं आगरा की सड़क के किनारे पर। वह विस्मय करता हुआ निकल गया।

शहंशाह के सामने पहुँचा तो पहला ही प्रश्न शहंशाह ने यह किया, "पंडित जी! इतनी लंबी पूजा का क्या मतलब होता है? क्या आपके परमात्मा इतने बहरे या अंधे हैं कि वह घड़ी दो घड़ी की पूजा को सुन या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख नहीं सकते?''

विभूतिचरण हँस पड़ा। हँसते हुए बोला, ''जहाँपनाह! आप पूजा के मायने नहीं समझे, तभी इस तरह की बात करते हैं।''

''पूजा का मतलब परस्तिश नहीं है क्या? हम भी नमाज पड़ते हैं। हमारे मुल्ला-मौलाना और आम लोग जो बहुत बड़े गुनाहगार होते हैं, वे दिन में पाँच बार नमाज पढ़ते हैं। मगर मैं तो दिन में एक ही बार नमाज पढ़ता हूँ खुदा मेरी बात इतने में सुन लेता है। मगर आप तो दिन-रात तीन महीने तक पत्थर के साथ पत्थर हो गए मालूम होते हैं।''

विभूतिचरण ने कहा, ''नहीं, जहाँपनाह! मैं परमात्मा को सुनाने के लिए पूजा नहीं करता। यह तो मैं अपने को सुनाने के लिए कुछ करता और कुछ कहता रहा हूँ।''

''क्या मतलब?''

''मतलब यह कि हमारी पूजा, जिसे हम स्तुति भी कहते हैं, परमात्मा की स्तुति नहीं होती, वरन् परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव की स्तुति होती है। स्तुति का अभिप्राय है वर्णन करना। मैं परमात्मा के गुण, कर्म और स्वभाव का चिंतन करता हूँ और उस पर गौर करता हूँ। परमात्मा के कर्म पर गौर करता हूँ तो उससे चल रहे संसार की गतिविधि का पता चलता है। इसी के आधार पर मैं नजूम लगाता हूँ। इस तरह मेरी पूजा मेरे अपने ज्ञान के लिए होती है। ''

अकबर इसका अर्थ नहीं समझा। उसने पूछा, ''परमात्मा के कामों को जानने से मेरी किस्मत का कैसे पता चल जाता है?''

''आपका क्या, दुनिया के किसी भी बशर के नेक और बुरे आमालों का पता चल जाता है।''

''अच्छा बताओ, भटियारिन की सराय का क्या हो गया है?''

''हुजूर! उसका नक्शा तो मैंने ही बनाकर दिया था। इमारत अभी मुकम्मल नहीं हुई। जब होगी तो उनको मैं बताऊँगा कि वह उस इमारत का क्या करें।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो वहाँ सराय नहीं होगी?"

"सराय तो होगी मगर वह तो बहुत ही छोटी-सी जगह पर होगी। शेष जो कुछ होगा, वह तो मैं इमारत को देखकर बताऊँगा।"

"वह इमारत किस मतलब से बनवाई है? हमें तो उसका कुछ सिर-पैर समझ नहीं आया।"

"हुज़ूर! उसका तो पैर ही अभी बना है। जैसे कोई व्यक्ति पाँव देखकर पहचाना नहीं जा सकता, वैसे ही इमारत के पाँव देखकर इसे कोई पहचान नहीं सकता।"

"तो सिर इस इमारत का कब बनेगा?"

"यह मैं किसी अन्य मोदी से बनवाने वाला हूँ।"

"तो हमसे ही क्यों नहीं बनवाया?"

"यह मेरा एक राज़ है।"

"हमसे भी छुपाव है आपका राज?"

"अपनी बीवी और बच्चों से भी छुपाव है। जब बन जाएगा तो सारी दुनिया को पता लग जाएगा।"

अकबर ने बात बदल दी। वह अपनी सल्तनत की बात पूछने लगा। उसने कहा, "पंडित जी! हमारी मह़ारानी के बच्चा होनेवाला है।"

"मुझे मालूम है।"

"कैसे पता चला? यह राज तो मैंने महल के वाशिंदों से भी छुपा कर रखा है।"

"जहाँपनाह! मैं आपके महल का बाशिंदा नहीं हूँ। मैं इस पूरी दुनिया का बाशिंदा हूँ। मैंने अभी हुज़ूर, बताया है कि मैं पूजा से इस दुनिया के राज जान जाता हूँ।"

"अच्छा बताओ, महारानी के लड़का होगा या लड़की?"

"लड़का होगा।"

"और वह हमारी सल्तनत का वारिस होगा?"

"हाँ, हुज़ूर! मगर उसे खून की नदी पार करनी पड़ेगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह!" जहाँपनाह ने गंभीर हो पूछा, "इससे बचा नहीं जा सकता क्या?"

"बचने का एक तरीका है। मगर यह शहज़ादे के करने की ही बात है। इसलिए वह करेगा या नहीं, अभी नहीं बताया जा सकता। बहुत कुछ तालीम और तरबीयत पर मुनहसिर है।"

अकबर उसका मुख देखता रह गया। कुछ विचार कर बोला, "अगर हम उसे आपका शार्गिद बना दें तो क्या ठीक रहेगा?"

"आप बनाएँगे नहीं। वजह यह है कि आप अपने घर में खुदमुखत्यार नहीं हैं। अभी तो आपकी अम्मी जिंदा हैं, आपकी फूफी हैं और दूसरे रिश्तेदार भी हैं। इनके अलावा आपके फौजी सिपहसालार सबके सब मुतअस्सिब मुसलमान हैं। अगर आप शहजादे को मेरी तालीम में डाल देंगे तो ये सब जाल जो आपने अपने चारों ओर बिछा रखे हैं, आपको आजादी से कुछ भी करने नहीं देंगे।"

"हम समझते हैं कि आपका खयाल गलत है।"

"हो सकता है। मगर यकीन से तो तब ही कह सकता हूँ जब बच्चा पैदा होगा और आपसे तथा उसकी माँ से उसे अलहदा कर दिया जाएगा।"

"लाहौल विलाह! पंडित, तुम हमें नहीं जानते। हमारी मर्जी की मुखालिफत करनेवाले को हम तहतेग करने की तौफीक रखते हैं।"

"परमात्मा आपको ऐसा करने की जुर्रत और अक्ल दे।"

"आप देखेंगे कि हम ऐसा कर सकेंगे।"

"ईश्वर आपकी सहायता करे!"

"मगर हम आपकी मदद चाहते हैं।"

"मैं तो उसका ही बंदा हूँ। बिना उसकी मंजूरी के मैं एक तिनका भी नहीं तोड़ सकता।"

"देखिए पंडित जी! मैं यह चाहता हूँ कि आप इस शहजादे की तालीम अपने हाथ में लें। इसके लिए महारानी जी इसरार कर रही हैं।"

"मैं आपका और बेगम बहन का हुक्म मानने से इंकार नहीं कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकता। मगर यह आप कर नहीं सकेंगे।''

''तो कैसे हम कर सकेंगे?''

''इसके लिए आपको अपने अमल में बुनियादी तबदीली लानी होगी।''

''क्या?''

''एक तो यह कि आपको महल की नौकरानियाँ बदलनी होंगी। उन सबको वजीफा दे वापस काबुल भेजना होगा जो वहाँ से आपके साथ आई हैं। दूसरे, आपको अपनी फौज के सालारे जंग और सालारे अज़ीम बदलने होंगे। तीसरे, आपको अपने दरबारियों में भी तबदीली करनी होगी। ये सब बड़े-से-बड़े शहंशाह के पाँव में बेड़ियाँ हैं। आपने ये सब ऐसे मुकर्रिर कर रखे हैं जिनसे आप इसलाम से बँधे हुए हैं। आपके हाथ बँधे होने से शहजादे की तरबीयत भी इन्हीं लोगों के हाथ में देनी होगी।''

अकबर इस गुफ्तगू से परेशानी अनुभव करता रहा। वह पंडित की बात का कुछ भी उत्तर नहीं दे सका।

अकबर के मस्तिष्क में यह बैठा हुआ था कि उसकी हुकूमत की उन्नति अफगान और पठान सिपहसालारों के हाथ में है। उनको हटाकर वह अपनी खैर नहीं समझता था।

यह ठीक था कि अब उसकी सेना में राजपूतों की संख्या पर्याप्त हो गई थी। परंतु एक राजपूत सेना के साथ दो पठान या मुगलों की सेनाएँ होने से वह अपनी सल्तनत को काफिरों से महफूज समझता था। इस कारण वह पंडित की बात को मान सकता ही नहीं था। इस पर भी वह अपने मन की बात पंडित जी को बता नहीं सका।

जब बहुत देर तक वह मौन बैठ रहा तो पंडित ने जाने की स्वीकृति माँगी। अकबर का उत्तर था, ''आप शहर की सराय में ठहरें। मुझे आपसे अभी और काम है।''

''मैं दो दिन आगरा में रहने के लिए आया हूँ। हुजूर जब भी हुक्म भेजेंगे, मैं हाजिर हो जाऊँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकबर पंडित के जाने पर सीधा महारानी जोधाबाई के कमरों में जा पहुँचा। महारानी पंडित से मिलकर शहंशाह के लौटने की प्रतीक्षा कर रही थीं।

जब अकबर आया तो स्वभाववश जोधाबाई ने उठकर उनका सत्कार किया। यह नियम था।

अकबर ने स्वयं बैठ महारानी को बैठने के लिए कहकर पंडित की सब बात बता दी। महारानी ने सुनकर कहा, "तो वह सत्य कहता है क्या?"

"मैं अपने पठान और मुगल सिपहसालारों को निकाल नहीं सकता। वे बागी हो जाएँगे और मेरे किसी रिश्तेदार को मेरे ही खिलाफ खड़ा कर मुझे मरवा देंगे अथवा किले में कैद कर रखेंगे।"

"यहाँ के हिंदू किसी हिंदू राजा की भी हिमायत नहीं कर सकते तो एक मुगल की कैसे करेंगे? देखो, महारानी! हम मुसलमान इस मुल्क में कितने हैं? एक बार बीरबल के कहने पर मैंने मर्दुमशुमारी कराई थी और पता लगा था कि कुछ लाख ही मुसलमान हैं। इनमें आधे से ज्यादा तो हिंदुओं से तंग आकर मुसलमान बने हैं। यह निरंजन देव की बात ही देख लो। उसके घरवालों ने ही उसे एक छोटी जाति की लड़की से विवाह करने पर घर से बेदखल कर दिया था। भला ये लोग मेरी मदद कैसे और क्यों करेंगे? मैं इनके भरोसे यहाँ का बादशाह नहीं बन सकता। दूसरी ओर ये मुगल-पठान सिपाही ही हैं जिनके भरोसे मैं यहाँ का शहंशाह हूँ और अपनी सल्तनत बढ़ा रहा हूँ।

"एक बात तुम्हें और बताता हूँ। निरंजन देव जब से नूरुद्दीन बना है, उसके भाई-बंधु उससे अच्छा सलूक करने लगे हैं। अब तो उसके भाई भी उसके लिए और उसकी भटियारिन बीवी सुंदरी के लिए तोहफे ले जाते हैं।

"बताओ, ऐसी कौम से मैं क्या उम्मीद कर सकता हूँ?"

जोधाबाई बात को समझती थी। उसके चाचा की एक लड़की थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह उदयपुर के राणा के परिवार में ब्याही गई थी। उसका पूर्ण परिवार ने बहिष्कार कर रखा था। वह स्वयं एक मुसलमान से ब्याह दी गई थी और उसको उसके माता-पिता और अन्य सब घर के लोग मिलने आते हैं, नज़र-न्याज़ भेजते हैं। उसका एक भतीजा तो आगरा में आकर ही रहने लगा था। इतना विचार कर वह चुप कर रही।

अगले दिन अकबर ने पण्डित विभूतिचरण को बुलाया और पैदा होनेवाले शहज़ादे की तालीम की बात न कर सल्तनत की अन्य बातों के विषय में पूछताछ करता रहा। विभूतिचरण अकबर की मजबूरियों को देखता था। उसे विदित था कि कुछ वर्ष पहले राजस्थान के सब नरेशों का एक संघ बनाने का विचार किया गया था। राजाओं के प्रतिनिधियों का उदयपुर में सम्मेलन हुआ था और वे प्रतिनिधि वहाँ लड़ पड़े थे। उस सम्मेलन में अकबर की रुचि थी। वह राजस्थान संघ के साथ संधि करता तो देश का एक बहुत बड़ा भाग उसका मित्र और सहायक हो जाता। जब वे लड़ पड़े तो वह एक-एक के साथ संधि करने की नीति पर कार्य करने लगा। परिणामस्वरूप राजस्थान का एक भाग सदा दिल्ली-आगरा से लड़ता रहा। हिन्दुओं के विचार से वह संघ दिल्ली के शहंशाह को मुसलमानों के विपरीत रख सकता था पर यह नहीं हो सका।

अकबर के मस्तिष्क में यह बात बैठी हुई थी कि वह हिन्दुस्तान का काश्मीर से कन्याकुमारी तक निर्विवाद रूप में सम्राट् बन जाए। राजपूतों से उलझा रहने के कारण वह दक्षिण की ओर ध्यान नहीं दे सका था।

मेवाड़ और चित्तौड़ की विजय के विषय में विभूतिचरण से सम्मति की जा रही थी। विभूतिचरण ने अपनी गणना के अनुसार यह भविष्यवाणी की थी कि मेवाड विजय नहीं हो सकेगा। मेवाड़ बरबाद हो जाएगा, परन्तु वह पराजित नहीं हो सकेगा। अकबर समझ रहा था कि उसने जयपुर, मालवा, जैसलसेर इत्यादि अनेक राजस्थानी राजाओं से संधि कर मेवाड़ को दुर्बल कर दिया है और वह उसकी शक्ति का विरोध नहीं कर सकेगा।

"पण्डित जी! हमारे सैनिकों का कहना है कि राणाओं का मान मर्दन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने का यह सबसे उचित समय है। इस समय उदयपुर का द्वेष जयपुर से चरम सीमा तक पहुँचा हुआ है।''

''जहाँपनाह! यह ठीक है परन्तु राणा आपकी अतायत कबूल नहीं करेगा और उसके भाग्यफल में अभी उसकी मौत नहीं लिखी।''

''इसके लिए कुछ अनुष्ठान नहीं किया जा सकता? मैं उसकी मौत नहीं चाहता। मैं तो उस सिंह की अतायत की ख्वाहिश करता हूँ।''

''अनुष्ठान किया जा सकता है। पर वह अनुष्ठान आपकी कामयाबी को शीघ्र कर सकेगा, परन्तु उसकी पराजय नहीं कर सकेगा।''

''हम इस बरसात के बाद समर शुरू करेंगे। तब तक आप हमारे लिए जो कुछ भी कर सकते हैं, करें।''

''मैं आपके कल्याण की कामना करूँगा।''

''यह ठीक है।'' इतना कह अकबर ने इस बार पुनः पाँच सौ अशरफियों की एक थैली उस रथ में रखवा दी जिसमें पण्डित जी को उसके गाँव भेजनेवाला था।

विभूतिचरण जब अपनी चादर और वस्त्रों का जोड़ा थैले में रखे हुए सराय से रथ में बैठने के लिए आया तो उस स्थान पर, जो रथ में उसके बैठने के लिए था, थैली पड़ी देखी। उसने पूछ लिया, ''यह क्या है?''

रथवाहक ने समीप खड़े करीमखाँ की ओर संकेत कर दिया। करीमखाँ जानता था कि पण्डित शहंशाह से धन नहीं लेता। इस कारण उसने कह दिया, ''पण्डित जी! शहंशाह यह आपको निर्धनों और ज़रूरतमंदों में बाँटने के लिए दे रहे हैं। वह समझते हैं कि निर्धनों की दुआ उन्हें ज़िन्दगी में कामयाब बनाएगी।''

विभूतिचरण इसका यह अर्थ समझा कि शहंशाह ने यह धन उसके नाम पर पुण्य के कामों के लिए दिया है और पुण्य-पाप का निर्णय उस पर छोड़ा है। इस कारण वह चुप रहा।

वह अपने कपड़ों का थैला मुहरों की थैली के ऊपर रखकर रथ पर बैठा तो रथ चल पड़ा। घर वापस जाते हुए उसका विचार था कि रामकृष्ण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से बात करेगा कि वह इमारत का क्या करे। उस इमारत के एक ओर सराय बनवाई गई थी। उस भाग में कमरे और दालान थे। टट्टी, पेशाब, रसोईघर इत्यादि बने थे। मगर दूसरी ओर अधिकांश भाग में एक खुला प्रांगण था। उसमें एक ओर एक आगार बना था जिसके चारों ओर घूमने के लिए बरामदा था। उस कमरे के अगले भाग में छत डलवाई गई थी और पिछला भाग बिना छत के था।

विभूतिचरण का विचार उस कमरे में शिव की मूर्ति स्थापित करने का था। वहाँ बहुत उँचा मन्दिर का गोपुर और कलश बनवाने का विचार था। यह स्थान वह अकबर के धन से नहीं बनवाना चाहता था। इसके लिए उसने आगरा के कुछ धनी लोगों से बात की थी और उनका विचार था कि सरकारी इमारत बनानेवाले जब अपना काम समाप्त कर चले जाएँगे तो वे लोग उसे मन्दिर का रूप दे देंगे। इसके लिए उसने तीन नगर सेठों की एक समिति बना दी थी और इसी दिन समिति विभूतिचरण की प्रतीक्षा भटियारिन की सराय में कर रही थी।

4

विभूतिचरण सराय में ठहरा तो नई बनी दुकान पर राधा बैठी चने भून रही थी और रामकृष्ण अभी कुएँ की जगत पर बैठा जल पिला रहा था।

विभूतिचरण को रथ से उतर राधा की ओर आते देख रामकृष्ण आगे बढ़कर चरण स्पर्श करने लगा। विभूतिचरण ने आशीर्वाद दिया और पूछा, "आगरे से कोई लोग आए हैं।"

"हाँ। वे उस बड़े दालान में बैठे हैं।"

विभूतिचरण के आने पर तुरन्त विचार विनिमय होने लगा। विभूतिचरण ने रामकृष्ण से कहा, "देखो रामकृष्ण! तुम्हारी सराय इस ओर बनेगी।"

"वह तो पण्डित जी, चालू भी हो गई है। बीस-पच्चीस दिन पहले उसका मुहूर्त कर चुका हूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है। वह तुम्हारी हानि के प्रतिकार में था। यह इधर का भवन हिन्दू समाज की हानि के प्रतिकार में है। इमारत का यह भाग तुम इन सेठों को दे दो। यह यहाँ पर एक बहुत बढ़िया शिवालय बनवाना चाहते हैं। इस पर एक लाख रुपए के लगभग व्यय करेंगे।

"शिवालय बन जाने से तुम्हारी सराय भी उन्नति करेगी। परन्तु यह शिवालय इन सेठ जी की देख-रेख में बनेगा।"

रामकृष्ण कुछ देर तक आँखें मूँद विचार करता रहा। फिर प्रसन्नवदन हाथ जोड़कर बोला, "पण्डित जी! यह सब आपकी कृपा का फल ही है। आप जैसा चाहें इसका प्रयोग करवाएँ।

"आपकी कृपा से मेरा काम पहले से अधिक उन्नति पर है और मैं भी इस पुण्य-कार्य में कुछ न कुछ योगदान दूँगा।"

"लिखकर दान-पत्र इनको दे दो।"

"पण्डित जी! मैं तो कुछ पढ़ा नहीं। आप ही लिख दीजिए। मैं उस पर हस्ताक्षर कर दूँगा।"

"इस प्रकार नहीं। कल आगरा चले जाओ और वहाँ मीरे-अदल की अदालत में मीर के सामने लिखा दो।"

"ठीक है। चला जाऊँगा और कर दूँगा।"

अब विभूतिचरण ने उन सेठों के मुखिया सेठ लक्ष्मीचन्द को अकबर से दी अशरफियों की थैली देते हुए कहा, "शहंशाह का गुप्तदान है इस कार्य के लिए।"

सेठ लक्ष्मीचन्द ने थैली खोलकर अशरफियों को गिना। वह पाँच सौ थीं।

इस प्रकार मन्दिर के लिए नींव अकबर के धन से रखी गई। वह सरकारी तामीर करनेवालों ने बनाई थी और ऊपर का भाग बनाने के लिए सबसे पहला दान भी शहंशाह का था। इतना विभूतिचरण ने बता दिया, "शहंशाह इसे गुप्त रखना चाहते हैं।"

"वह कुछ भी रखें। उनके धन से लिखा-पढ़ी होते ही काम आरम्भ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर देंगे।''

शहंशाह के दस सहस्र के साथ इससे दुगुना-दुगुना तीनों सेठों ने दिया। इस प्रकार अपनी योजना आरम्भ कर विभूतिचरण ने पूछ लिया, ''यह दूसरा भव्य भवन किसका बन गया है?''

रामकृष्ण ने मुस्कराते हुए कहा, ''शहंशाह ने अपनी रखैल सुन्दरी के रहने के लिए महल बनवाया है। उसके पति को उसके साथ रखकर खरैड़ा गाँव उसके नाम कर दिया है।''

''ओह!'' पण्डित जी अवाक् बैठे रह गए। रामकृष्ण ने ही आगे बताया, ''सुन्दरी का घरवाला आगरा के जौहरी शंकरदेव का लड़का है जो सुन्दरी के साथ विवाह करने के कारण मुसलमान हो गया है। उसका नाम मिर्ज़ा नूरूद्दीन रखा गया है।''

''और सुन्दरी का क्या नाम हो गया है?''

''उसका नाम तो सुन्दरी ही रहने दिया गया है। अब वह गर्भ से है। उसके बच्चे के नाम के लिए एक मुल्ला कभी-कभी आता देखा जाता है।''

विभूतिचरण सुन्दरी के इतिहास को जानता था और वह समझ गया कि अकबर ने अपनी औलाद से मुहम्मद साहब की उम्मत बढ़ाने की योजना बनाई है। वह मौन रहा।

इस पर रामकृष्ण ने कहा, ''मिर्ज़ा साहब आकर आपके विषय में पूछा करते हैं।''

''सत्य? वह मेरे विषय में क्या जानता है और कैसे जानता है?''

''यह तो वह स्वयं ही बता सकता है। हमारा उससे मेलजोल तो है, परन्तु लेन-देन नहीं।''

''लेन-देन का क्या मतलब?''

''सुन्दरी हमारी लड़की की भाँति हमारे पास पन्द्रह वर्ष तक रही है। मगर हमने प्रायश्चित्त कर लिया है और अब उसे अपने घर में आने नहीं देते। वह भी अब हमसे अधिक धनवान हो गई है। उनके गाँव की आय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ हज़ार रुपये हैं। उसमें से आधा उनको बच जाता है। आधा ही राज्य को देना पड़ता है।''

''मैं नूरुद्दीन से मिलना चाहूँगा।''

''मैं भगवती को अभी भेज उसे बुलवा लेता हूँ।''

विभूतिचरण का विचार रात सराय में ही रहने का हो गया। यद्यपि रथ तो उसी दिन गाँव तक जाने के लिए तैयार था, परन्तु पण्डित ने कहा, ''मैं यहाँ से कल आगे जाऊँगा? अगर तुमको आगरे लौट जाना हो तो यहाँ से ही लौट सकते हो। मैं पैदल ही आगे चला जाऊँगा।''

रथवान ने कह दिया, ''मुझे यह हुक्म है कि आपको गाँव तक पहुँचाना है।''

''तो तुम भी रात यहीं रहो। घोड़ों को खोल दो और आराम करो।''

सेठ लक्ष्मीचन्द और उसके साथी यह कहकर कि वे सब कागज़ात तैयार करा रखेंगे, रामकृष्ण को शीघ्रातिशीघ्र वहाँ पहुँचना चाहिए, आगरे को चल दिए। वे सब अपनी-अपनी सवारी में आए थे।

रामकृष्ण ने भगवती को नूरुद्दीन मिर्ज़ा को बुलाने भेज दिया। विभूतिचरण रामकृष्ण के प्रायश्चित्त की बात से प्रसन्न नहीं था। परन्तु प्रायश्चित्त का जो प्रयोजन था उसे सिद्ध हो रहा देख चुप रहा।

पण्डित समझता था कि रामकृष्ण और उसके परिवारवालों ने कोई पाप नहीं किया था। इस कारण प्रायश्चित्त और उपवास की आवश्यकता नहीं थी। इस पर भी वह समझ पा रहा था कि उस उपवासादि से इनकी आत्मा पर से किसी काल्पनिक पाप का बोझा हल्का हो रहा है। इस कारण उसने इस विषय में रामकृष्ण से कुछ नहीं कहा, परन्तु बात हुए बिना नहीं रही।

सायंकाल के समय सुन्दरी एक इक्के पर पर्दा डलवा उसमें बैठी हुई आई। निरंजन देव, इक्के के आगे कोचवान के पास बैठा हुआ था। विभूतिचरण इस युवक को जानता नहीं था। उसने इसे कभी देखा नहीं था। परन्तु इक्के को सराय के भीतर आते देख राधा दुकान से उठ साथ-साथ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई तो पण्डित, जो सराय के प्रांगण में खाट डाले बैठा था, समझ गया कि इक्के में कौन आया है।

राधा सुन्दरी को उतारकर एक दालान में ले गई और नूरुद्दीन पण्डित जी के समीप आ चरण छूकर हाथ जोड़ बोला, ''पण्डितजी! मैं निरंजन देव हूँ।''

''ओह! और यह बुर्के में तुम्हारी पत्नी सुन्दरी है?''

''जी। उसी के द्वारा मुझे आपके विषय में पता चला था और यह भी पता मिला था कि आपने हमारी जान बख्शी कराई है। अन्यथा मुझे यह बताया गया है कि यह जुर्म तो मैंने फाँसी पर लटकाए जाने योग्य किया था।''

पण्डित मुस्कराता हुआ निरंजन देव की ओर देखता रहा। नूरुद्दीन ने आगे कहा, ''मेरी बीवी सुन्दरी आपके दर्शन कर अपने भविष्य के विषय में कुछ जानना चाहती है।''

''मगर उसको किसने यह बताया है कि मैंने तुम्हारी जानबख्शी करवाई है?''

''जब हम पकड़कर आगरा शहंशाह के सामने उपस्थित किए गए थे तो सुन्दरी से महारानी मिली थीं। वहीं पता चला कि आपने उसके जन्म की बात शहंशाह से कही थी और यह भी कि सुन्दरी ने कुछ भी गुनाह नहीं किया। इसी आधार पर हमारी जान बख्शी गई है।''

''देखो निरंजन! यह बात इस तरह नहीं जैसी तुम कह रहे हो।'' इस समय निरंजन भी एक खाट पर सामने बैठ गया था। राधा भूमि पर बैठ गई थी। सुन्दरी तो भीतर भगवती और मोहन की पत्नियों से मिलने गई हुई थी।

विभूतिचरण ने बताया, ''मैंने अपनी विद्या से सुन्दरी के जन्म, उसके माता-पिता का पता किया था और शहंशाह को बताया था। इससे शहंशाह यह समझा था कि सुन्दरी एक मुसलमान लड़की है। उस मुसलमान का एक हिन्दू विधवा ब्राह्मणी से सम्बन्ध बना था और सुन्दरी पैदा हो गई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोक-लाज से डरते हुए वह विधवा यहाँ सराय में छुपकर प्रसव करने आई थी और लड़की को जन्म देकर मर गई थी।

"शहंशाह यह समझता है कि मुसलमान की औलाद से मुसलमान ही पैदा होता है। इस कारण वह सुन्दरी को मुसलमान खातून समझता है और तुम एक मुसलमान खातून के खाविन्द होने से मुसलमान हो। यह मुसलमानों की शरा है।"

"और पण्डित जी! आप क्या समझते हैं?" राधा ने पूछ लिया।

"देखो राधा! बीज न मुसलमान होता है और न हिन्दू। यह तो इनसान का बीज है। इससे पैदा होते समय जब इनसान ऐसे एक समान होते हैं जैसे गेहूँ के दाने।

"यदि मुसलमान के बीज से मुसलमान ही होना हो तो वह एक हिन्दू औरत के पेट में अंकुरित न हो सकता। जैसे एक कुत्ते का बीज बिल्ली के पेट में फल नहीं सकता। कुत्ता और बिल्ली भिन्न-भिन्न जातियाँ हैं। मगर मुसलमान और हिन्दू तो एक ही जाति हैं। यदि ऐसा न होता तो एक मुसलमान से हिन्दू औरत के अथवा एक हिन्दू पुरुष से मुसलमान औरत के सन्तान न हो सकती।"

"तो हिन्दू मुसलमान कैसे होते हैं?" नूरुद्दीन ने पूछा।

"अपने अमालों से। सुन्दरी हिन्दू लड़की ही थी, परन्तु अब तुम उसे मुसलमान बना रहे हो।"

"कैसे?"

"उसके अमालों को बदलकर।"

"क्या बदला है?"

"तुमने उसको बुर्के में बन्द कर दिया है। इससे उसकी दृष्टि सीमित और उसका अनुभव न्यून हो जाएगा। वह मुसलमान हो जाएगी। अभी हुई है अथवा नहीं, कहा नहीं जा सकता। मगर तुमने उसे मुसलमान बनने की राह पर डाल दिया है।"

"हमारे गाँव में एक मुल्ला रहता है। वह हर शुक्रवार आता है और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमें नमाज़ सिखाता है। नमाज़ पढ़ने का ढंग बताता है। यह बुर्का और पर्दा भी उसने ही बताया है। मुझे तो यह पसन्द नहीं।''

विभूतिचरण हँस पड़ा। वह अपने मुख से कुछ नहीं कहना चाहता था। किसी मुसलमान को इस्लाम से बदज़न करना एक अपराध था। इस कारण उसने केवल इतना ही कहा, ''तो वह मुल्ला इसको मुसलमान बनाने की कोशिश कर रहा है?''

''मगर पण्डित जी! वह तो कहता है कि मुसलमान की औलाद मुसलमान के अलावा और कुछ हो ही नहीं सकती।''

''यह बात अक्ल नहीं मान सकती। अगर एक मुसलमान की औलाद मुसलमान ही हो सकती है तो एक हिन्दू की औलाद हिन्दू ही होनी चाहिए। तो नूरुद्दीन एक हिन्दू के अलावा और कुछ नहीं हो सकता।''

निरंजन तो भौंचक्का मुख देखता रह गया। राधा ने पूछ लिया, ''तो नाम बदलने से यह मुसलमान नहीं हुआ?''

''नाम तो यह कुछ भी रख सकता है। यदि भगवान राम और कृष्ण को अपना पूज्य मानता है तो यह मिर्ज़ा नूरुद्दीन नहीं, पण्डित नूरुद्दीन ही होगा। हमारा धर्म तो उसके सिद्धांत मानने से ही होता है। बुर्का पहनने से अथवा सुन्नत करने से न होता है और न मिटता है।''

''पण्डित जी! आपको भगवान सौ वर्ष तक जीवित रखे। यही तो मैं मोहन के पिता को कहती थी, मगर उसकी समझ में बात आती ही नहीं।''

विभूतिचरण ने मुस्कराते हुए पूछ लिया, ''और क्या निरंजन की समझ में आ गई है यह बात?''

निरंजन ने कहा, ''पण्डित जी! मैं तो अपने को अभी भी हिन्दू ही मानता हूँ। मगर सुन्दरी कहती है कि नगर चैन में रहते हुए वह कई बार गोमांस खा चुकी है।''

''इससे पेट खराब होता है। मगर कोई हिन्दू से मुसलमान नहीं होता।''

''पेट में क्या खराबी हो जाती है?''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जैसे कटहल खाने से पेट में वायु बनती है वैसे ही गोमांस खाने से पेट में रक्त अशुद्ध बनता है। उसके लिए रक्त शोधक औषधि खानी चाहिए।"

इसी समय सुन्दरी उठकर पण्डित जी के सामने आ हाथ जोड़ खड़ी हो गई।

पण्डित जी ने कहा, "सुन्दरी! यह क्या पहन रखा है?"

"एक आलम कहता है कि हर मुसलमान औरत के यह लक्षण हैं।"

"मगर तुम मुसलमान हो क्या?"

"मैं क्या हूँ—यह तो मैं जानती नहीं। हाँ, अब जो भी वहाँ आता है, मुझे मुसलमान कहता है। इससे मैं समझती हूँ कि मैं भी वही हूँ।"

विभूतिचरण हँस पड़ा और बोला, "तुम ठीक कहती हो। जो भी माथे पर इस प्रकार तिलक लगाए वह पण्डित है तो फिर जो बुर्का पहने वह मुसलमान है।"

"लोग ऐसा ही कहते हैं।" सुन्दरी ने राधा के समीप भूमि पर बैठते हुए कहा, "पण्डित जी! शहंशाह की जो महारानी हैं उन्होंने मुझे अपने पास बिठा कर प्यार देते हुए कहा था कि आपने शहंशाह से मेरी सिफारिश की है और मैं अपने पति के साथ रहने के लिए छोड़ दी गई हूँ। वरना, वह कहती थीं और मुझे नगर चैन में भी बताया गया था कि वहाँ से भागनेवाली औरतों को पेड़ से फाँसी लटका दिया जाता है।"

"परन्तु ऐसे कोई मरता नहीं है। यह तो पुराने कपड़े उतार नये पहनने के समान होता है। नये वस्त्र पहनने पर तो प्रसन्नता होती है। इसलिए मरने का भय और शक करना व्यर्थ है।"

"इस पर भी मरने को जी नहीं चाहता।"

"मतलब यह कि तुम बहुत प्रसन्न हो?"

सुन्दरी ने सिर उठाया और निरंजन को ओर देखा। बात राधा ने ही कही, "पण्डित जी! सब हिन्दू और मुसलमान इसे मुसलमान ही कहते हैं। मुझे तो जब यह बुर्का उतारकर मेरे पास बैठती है तो वही सुन्दरी समझ में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आती है जो पहले थी। यह लड़की मुझे अपने लड़कों से भी अधिक प्यारी थी। अब भी वैसी ही है।"

"तो तुमने व्रत और प्रायश्चित्त किसलिए किया था?"

"मोहन के पिता ने कहा कि करने में कुछ हानि भी नहीं है। लोगों का भ्रम दूर हो जाएगा।"

"सुन्दरी भी क्या लोगों का भ्रम दूर कर रही है?"

"हाँ, पण्डित जी।"

"और मन से तुम अपने को हिन्दू कहती हो?"

"अनायास ही मेरे मुख से 'राम-राम' निकलता है। प्रत्येक शुक्रवार को गाँव का एक मुल्ला आता है और मुझे तथा इनको नमाज़ पढ़ना सिखाता है। मुझे वह बोलनी आती ही नहीं।"

"देखो सुन्दरी बेटी! तुम अभी भी हिन्दू ही हो। हिन्दू होने से पहले तुम एक मनुष्य थीं। अब सब लोग तुमको कह-कहकर मुसलमान बनाना चाहते हैं। मगर यह तुमको विचार करना है कि तुम्हें हिन्दू बने रहना है अथवा मुसलमान। मुसलमान बनने से कुछ लाभ और स्वाद तो है। इस पर भी यदि तुम चाहो तो हिन्दू बनी रह सकती हो।"

निरंजन देव ने बातों में हस्तक्षेप करते हुए कहा, "कैसे?"

"जैसे यह कि तुम धोती पहनो या तम्बा पहनो, तुम्हारे विचार करने की बात है। तुम आम खाओ अथवा खरबूजा खाओ, यह तुम्हारे सोचने की बात है। तुम बुर्का पहनो अथवा माथे पर तिलक लगाओ, यह किसी के कहने से नहीं, अपनी मर्ज़ी से है। इसी से हिन्दू या मुसलमान तुम्हारी मर्ज़ी से होगा।"

"मगर मेरे पिता ने, जब मैं हिन्दू था तो सुन्दरी को भटियारिन की लड़की समझ मेरे इससे विवाह करने पर मुझे घर से निकाल दिया था। जब से मैं मिर्ज़ा नूरुद्दीन हुआ हूँ, उन्होंने मुझसे सुलह कर ली है। अभी दो दिन हुए मेरे घरवाले सब लोग आए थे और दिन-भर हमारे यहाँ रह गए।

"वैसे वे अपने खाने-पीने के लिए सामान घर से ही लाए थे और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमसे पृथक् बैठकर खाना-पीना करते रहे। पिताजी तो मुझसे यह भी कहते थे कि वह मुझे अपनी जायदाद में से हिस्सा भी देंगे।''

विभूतिचरण यह सब सुन-सुन उदास-सा हो रहा था। वह समझ रहा था कि यहाँ प्रश्न एक नूरुद्दीन तथा सुन्दरी का नहीं है। इनको तो समझाना सहज ही है। मगर सारी की सारी कौम को कैसे समझाया जाये? उसके लिए तो भगवान ही अवतार लेकर आएँ तो समझाया जा सकता है।

विभूतिचरण को गम्भीर विचार में मग्न देख रामकृष्ण, जो खड़ा-खड़ा सबकी बातें सुन रहा था, कहने लगा, ''पण्डित जी! यह तो नाम रखने की बात है। जिसे सब जो कुछ कहें वैसा ही अपने को समझना चाहिए। आपको सब पण्डित जी कहते हैं। मुझे भटियारा कहते हैं। जैसा सबको भाए वैसा ही तो होना है। मैं रामकृष्ण हूँ, आप विभूतिचरण हैं। यह क्यों? यह इसलिए ही न, क्योंकि सब आपको और मुझको ऐसा कहकर बुलाते हैं। हमें इन नामों पर बोलना पड़ता है।''

विभूतिचरण इनको हिन्दू और मुसलमान दोनों समाजों से पृथक् होकर रहने को नहीं कह सका। उसने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, ''रामकृष्ण! काम-धन्धा कैसा चल रहा है?''

''पण्डित जी! आपकी कृपा से बहुत अच्छा है।''

''अच्छा। कल आगरा लिखत-पढ़त करने चले जाना। इस सराय के साथ यदि एक सुन्दर मन्दिर बन गया तो तुम्हारी सराय का काम और भी उन्नत होगा।

5

अगले दिन पण्डित सरकारी रथ पर सवार हो गाँव को जा रहा था तो रथवान ने पूछ लिया, ''पण्डित जी! आपको शहंशाह बहुत मानते हैं। मैंने आगरे की सरायवाले से पूछा था कि आप कौन हैं? सरायवाले ने बताया था कि आप बहुत बड़े नजूमी हैं। कुछ मुझे भी बता दीजिए। जीवन-भर आपको याद रखूँगा।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभूतिचरण ने ध्यान से रथवान के मुख पर देख पूछ लिया, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"रहीम।" रथवान ने उत्तर दिया।

"मगर यह नाम असली नहीं है।"

"जी। मेरे माता-पिता ने मेरा नाम रामू रखा था।"

"देखो रामू! जब कोई मर जाता है तो रहीम अथवा रामू कहाँ होता है? एक लाश रह जाती है जिसे हिन्दू जला देते हैं और मुसलमान दफना देते हैं। लोग कहते हैं रामू को जला दिया गया अथवा रहीम को दफना दिया गया। मगर जो इसमें बोल रहा है, काम कर रहा है, वह न तो रहीम है और न रामू है। वह दफनाया नहीं गया और न ही जलाया जा सकता है। वह तो पहले ही चला जाता है।"

"हाँ, पण्डित जी! लोग कहते हैं कि वह रूह है। वह शरीर छोड़ जाती है।"

"हाँ। तुम रूह हो। मैंने तुममें उसे देखा है। वह इस जिस्म में आने से पहले एक मथुरा के चौबे के शरीर में थी। तब उसने एक ब्राह्मणी विधवा को, जो तीर्थयात्रा करती हुई मथुरा आई थी, अपने घर में रख लिया था और उसे पत्नी बना लिया था। पहले उस औरत से चौबे ने बलात्कार किया था। पीछे उस औरत को नौकरानी के रूप में रखा। जब उसके बच्चा होने लगा तो उस औरत को घर से निकाल दिया था और वह वृन्दावन में वेश्यावृत्ति करने लगी। उस पाप-कर्म के फलस्वरूप तुम जब ग्यारह-बारह साल के थे तो तुम्हें एक राज्य के फीलवान ने पकड़ तुमसे अनाचार किया। तुमसे अपनी पत्नी की तरह व्यवहार किया। पीछे तुमको मुसलमान बना तुम्हें रथ हाँकने पर नौकर करवा दिया। अब तुम कठिनाई से सूखी रोटी खा पाते हो। तुम्हें पाँच रुपये महीना तनख्वाह मिलती है जिसमें तुम्हारा निर्वाह बहुत कठिनाई से होता है और अगले जन्म में भी तुम ऐसा कुछ बनोगे क्योंकि तुम्हारे कर्म ऐसे हैं।"

रहीम रथवान काँप उठा। उसे फीलवान के साथ औरत का अभिनय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने के समय की बात स्मरण आ गई। अब वह शादीशुदा था और तब की और अब की अवस्था में अन्तर समझ ही वह काँप उठा था।

उसने परेशानी में पूछ लिया, "तो क्या यह मेरे मुख पर लिखा है?"

"नहीं। मुख पर तो मूँछें, दाढ़ी और सिर पर केश भरे पड़े हैं। मैं अपनी विद्या से तुम्हारी रूह को देख रहा हूँ। उस पर तुम्हारा भूत और भविष्य लिखा है।

"वह ब्राह्मणी जो पीछे वृन्दावन में वेश्यावृत्ति करती रही थी, जीवन-भर तुम्हें बद्दुआएँ देती रही थी और उसकी बद्दुआ ही तुम्हें इस जीवन में ले आई है। उस ब्राह्मणी की रूह अभी भी तुम्हारे सिर पर मँडरा रही है और तुम्हें इस कष्ट में धकेलती ले जा रही है।"

"महाराज!" रथवान ने साहस कर कहा, "मुझे इस ज़िन्दगी में कष्ट तो बहुत है, मगर यह उस बात का फल है जिसे आप कह रहे हैं, मुझे स्मरण नहीं। न ही उस पर यकीन आ रहा है।"

"इस पर यकीन इस बात से आएगा कि मैंने तुम्हारे इस जीवन की भी बात तुम्हें बताई है। यह सत्य है तो पूर्व जन्म की बात भी सत्य होगी।"

"यह तो आपको किसी ने बता दिया होगा। कई लोग जानते हैं कि मैं फीलवान के साथ रहता था और वह मुझे मिठाई खिलाया करता था।"

"मगर मैं तुम्हारे इसी जीवन में होनेवाली एक घटना बताता हूँ। तुम्हारे घर में तीन सन्तान हैं। दो लड़के और एक लड़की है। दोनों लड़के अपनी माँ से नाराज़ हैं। वे एक दिन उसकी हत्या कर देंगे और तुम्हारी भी हत्या करने का भय दिखाकर तुम्हें चुप रखेंगे। तुम डर के मारे बताओगे नहीं कि वे माँ के हत्यारे हैं। इस पर भी तुम अत्यन्त दुःखी होगे और अपनी पत्नी की हत्या की बात किसी से नहीं बताओगे।"

रथवान की आँखों में आँसू भर गए थे। उसने पण्डित जी की ओर दयनीय दृष्टि से देखकर कहा, "मुझे भी कुछ ऐसा ही समझ आ रहा है। मगर वह मेरी हत्या करने को कहते हैं।"

"नहीं। वह तुम्हारी हत्या नहीं करेंगे। वह अपनी माँ की ही हत्या

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करेंगे।''

रथवान ने शेष मार्ग-भर और प्रश्न नहीं किया। वह अपने भूत और भविष्य के विषय में विचार करता रहा।

पण्डित विभूतिचरण रामकृष्ण और निरंजन देव के वृत्तान्त पर विचार कर रहा था कि यह इन बेचारों का दोष नहीं है। वह तो पूर्ण जाति में प्रथा प्रचलित करनेवाले विद्वानों का दोष है।

भारत के मूल निवासी हिन्दू माने जाते थे। उनकी संख्या पूर्ण देश में तीस करोड़ के लगभग थी और मुसलमान आक्रमण करनेवाले कुछ ही सहस्र यहाँ आए थे। यदि हिन्दू समाज में विवेक होता तो आक्रमण करनेवालों का राज्य रहते हुए भी वे हिन्दू समाज में खप जाते।

वह नहीं जानता था कि जयपुर-नरेश की लड़की से विवाह की बात किसने चलाई थी। इस पर भी जब उसने अकबर के भाग्य में इस सम्बन्ध की सम्भावना देखी तो वह प्रसन्न था। वह समझ रहा था कि इस सम्बन्ध से जयपुर वाले आगरा के दरबार में प्रतिष्ठित हो सकेंगे और वह उसे हिन्दू राज्य में परिणत करने का यत्न करेंगे।

वह यह भी जानता था कि अकबर के मन में हिन्दू-मुसलमान का प्रश्न नहीं था। वह तो स्वयं शहंशाह अज़ीम बनना चाहता था और यदि राजपूत एक संघ बनाकर अकबर का पक्ष लेते तो निस्सन्देह अकबर का राज्य हिन्दू राज्य हो जाता। परन्तु यह नहीं हो सका। राजस्थान के नरेशों का संघ नहीं बन सका और कुछ रजवाड़े पृथक्-पृथक् अकबर को अपनी लड़कियाँ दे अपने मूल्य को कम कर रहे थे।

विभूतिचरण विचार कर रहा था कि यह सब पतन किस कारण हुआ है? उसको समझ आया कि देश, राष्ट्र और धर्म में सम्बन्ध-विच्छेद हो चुका है। धर्म का अर्थ तिलक छाप, धोती, कुर्ता, पूजा-पाठ रह गया है। इसके अर्थ वे सनातन धर्म नहीं रहे जिसमें धीः और विद्या भी आते हैं। बुद्धि से वे विचार ही नहीं कर सकते कि सत्य क्या है और असत्य क्या है।

किसी ने कह दिया कि वे मुसलमान हैं। बस वे मान गए कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसलमान हैं। वह जानता था कि सुन्दरी और निरंजन देव को मृत्यु का भय था और यह भय निर्मूल था। इस पर भी यह था। परन्तु निरंजन देव के भाई-बन्धुओं को तो इनके मुसलमान हो जाने पर प्रसन्नता ही हुई प्रतीत होती थी। उसके मुसलमान होने से पहले तो निरंजन देव को घर से निकाल दिया था और मुसलमान होने के उपरान्त उससे मेल-मुलाकात उत्पन्न की जा रही थी।

वह हिन्दू समाज की इस बुद्धिविहीनता पर मन-ही-मन आँसू बहा रहा था। इन्हीं विचारों में लीन वह घर पहुँचा तो उसकी पत्नी रथ के द्वार पर आ खड़े होने का शब्द सुनकर द्वार खोलने चली आई।

पत्नी दुर्गावती ने द्वार खोल प्रणाम किया तो पण्डित जी ने उसे कहा, "एक रुपया इस रथवान को भोजनादि के लिए दे दो।"

दुर्गा परेशानी में मुख देखने लगी। पति समझ गया कि घर पर इस समय एक रुपया भी नहीं है। उसने अपनी जेब में हाथ डाला। कुछ रेज़गारी, जो एक रुपये से कम ही थी, पण्डितजी ने बिना गिने रथवान को देते हुए कहा, "इससे पेट भर लो।"

रथवान सुन और समझ रहा था। वह यह जानता था कि पण्डित जी को एक थैली, जो अच्छी भारी थी, शहंशाह के यहाँ से मिली थी। उसने वह थैली पण्डित जी को सराय में ले जाते देखा था। परन्तु वहाँ से आते समय उनके हाथ में वह नहीं थी और अब उनकी जेब में एक रुपये से कम रेज़गारी थी।

रथवान ने हाथ जोड़ दिए। उसने कहा, "महाराज! रहने दीजिए। मुझे आगरा से बाहर रथ ले जाने पर भत्ता मिलेगा।"

विभूतिचरण ने मुस्कराते हुए पूछा, "क्या मिलेगा?"

"आठ आने नित्य के हिसाब से। उसमें घोड़े को डालने का दाना और घास भी सम्मिलित है। सराय में मुझे और घोड़े को पेट भरने के लिए मिल गया था। घोड़े के लिए कुछ वहाँ से बचा साथ ले आया हूँ। वह यहाँ खिला चल दूँगा और सायंकाल तक आगरा पहुँच जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, ऐसा करो। तुम भोजन हमारे यहाँ ही कर लो। घोड़े के लिए घास तो यहाँ भी मिल जाएगी।"

रथवान को यह स्वीकार था। इस कारण वह चुप रहा। पण्डित जी की पत्नी ने भीतर जा एक केले के पत्ते पर दो गेहूँ की रोटियाँ और ऊपर गाजर-मूली का साग रख ला दिया। रथवान ने तब तक घोड़ा खोल दिया था और उसके सामने घास डाल दी थी। स्वयं दुर्गावती पण्डिताइन से रोटियाँ ले वहीं ड्योढ़ी में बैठ वह खाने लगा।

पण्डित जी भीतर गए। स्नानादि से निवृत्त हो पूजा पर बैठ गए। इस सबमें दो घड़ी लगी। पण्डित जी भोजन के लिए भीतर रसोईघर में जाने लगे तो बाहर से रथवान ने आवाज़ दी, "पण्डित जी, मैं जा रहा हूँ।"

पण्डित जी बाहर ड्योढ़ी में आ गए और रथवान के हाथ जोड़ने पर कहने लगे, "रहीम! अगर तुमको मेरे कहे पर यकीन है कि तुम्हारे साथ यह सब कुछ होनेवाला है तो तुम्हें मुझसे पूछना चाहिए था कि इसके प्रभाव को कम करने के लिए क्या करना चाहिए।"

"तो पण्डित जी! यह किस्मत की बात, मेरा मतलब है कि बुरे अमालों की बात टल भी सकती है?"

"इनकी तेज़ी तो कम हो ही सकती है। अगर सच्चे दिल से उपाय किया जाए तो बिल्कुल भी टल सकती है।"

अब रहीम ने मुस्कराते हुए कहा, "तो पण्डित जी! आपके कथन की सच्चाई का पता कैसे चलेगा?"

"हाँ। यह भी ठीक है। अगर तुम्हें अभी मेरे कहने पर शक है तो पहले इसकी परीक्षा कर लो। अच्छा, अब तुमने इस गरीब ब्राह्मण का घर देख लिया है। कभी ज़रूरत समझ आए तो आ जाना।"

अब पण्डित जी ने भी हाथ खड़ाकर आशीर्वाद दिया, "भगवान तुम्हारी रक्षा करे।"

पण्डित जी रसोईघर में पहुँचे और खाने की चौकी पर बैठ गए। पण्डिताइन सामने बैठी थी। पण्डित जी ने बैठते ही पूछा, "राम और रवि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ हैं?''

''दोनों अपने साथियों के साथ चले गए हैं। इन्हें अब एक शौक सवार हो रहा है।''

''क्या?''

''ताश खेलते हैं। पड़ोस के लाला श्यामबिहारी का लड़का विपिनबिहारी कुछ दिन हुए, आगरा गया था और वहाँ से यह खेल खरीद लाया है। वहीं दोनों गए हैं।''

''और पढ़ाई-लिखाई?''

''वह तो प्रातः कर गए हैं। कहते थे कि लिखने का काम सायंकाल करेंगे।''

''और सरस्वती कहाँ है?'' पण्डित जी ने लड़की के विषय में पूछा।

''गाय को तनिक गाँव में चराने ले गई है।''

''अब उसमें कुमारी के लक्षण दिखाई देने लगे हैं। यह काम किसी लड़के को करने के लिए कहा करो।''

''पण्डित जी! यदि कुछ नकद भी यजमानों से लेना आरम्भ कर दें तो एक नौकर इस काम के लिए रखा जा सकता है।''

''अच्छा। विचार करूँगा। कितना कुछ देना पड़ेगा इस सेवा के लिए?''

''झींगुर का लड़का सेहतू कल आया था। वह पहले भी कभी-कभी आया करता है और खाना यहाँ खाया करता है। मैंने उसे कहा था कि हमारी गाय को चरा लाया करो।

''वह तैयार था। परन्तु मैं समझती हूँ कि बिना कुछ दिये किसी से काम नहीं लेना चाहिए। इस कारण आपसे पूछने का विचारकर चुप रही।''

''देखो भाग्यवान! उसे अभी दो रुपये महीना और मध्याह्न का भोजन दे दिया करो। पीछे काम देखकर और अधिक भी दे सकूँगा।''

पण्डित जी किसी से कुछ माँगते नहीं थे। गाँव के लोग स्वतः अन्न-अनाज, वस्त्रादि दे जाया करते थे। इससे निर्वाह हो रहा था। कभी किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के घर में कोई शुभ संस्कार हुआ तो एक अथवा सवा रुपया मिल जाया करता था। वैसे नकद दान-दक्षिणा लेने का पण्डित का न स्वभाव था और न ही लोगों के पास कुछ होता था।

पण्डित जी के पड़ोस में एक बहुत बड़ी हवेली में एक श्यामबिहारी लाला रहता था। वह आढ़त का काम करता था। गाँव की भूमि की उपज तथा गाँव के जुलाहों से बना कपड़ा आगरा में बेचने के लिए भेजता था और वहाँ से गाँव वालों की आवश्यकता की वस्तुएँ लाकर गाँववालों को दिया करता था।

श्यामबिहारी का लड़का विपिनबिहारी पण्डित जी से देवनागरी और कुछ शास्त्र पढ़ने आया करता था। पण्डित जी ने उसे सुलेख लिखने का अभ्यास कराया था और वह तथा पण्डित जी के दोनों लड़के राम और रवि भी बहुत सुन्दर लिखते थे। तीनों लड़के पण्डित जी के घर पर रखी पुस्तकों की प्रतिलिपियाँ तैयार किया करते थे। यही लिखने का काम था जो दुर्गा ने अपने पति को लड़कों के सायंकाल करने का बताया था।

पण्डित जी ने भोजन के उपरान्त शयनागार में जा आराम करना चाहा तो दुर्गा ने पूछा, ''यह शहंशाह आपके पीछे इतना पड़ा रहता है, परन्तु कुछ देता-दिवाता तो है नहीं।''

''देता रहता है। उसकी कमाई महान् पाप से तर-बतर रहती है। इस कारण उसमें से यहाँ कुछ लाना मैं ठीक नहीं समझता। पहले तो मैं उसे हाथ लगाता ही नहीं था। मेरा मतलब है कि लेता ही नहीं था। यदि किसी प्रकार शहंशाह देते हैं तो मैं वहीं सब धन बाँटकर घर आता हूँ। वह खून और पाप से रंगा धन मैं यहाँ लाना नहीं चाहता। इस बार भी एक थैली में बहुत-सी अशरफियाँ थीं। अनुमान है कि कम-से-कम पाँच सौ होंगी। वह मैं भटियारिन की सराय पर बन रहे मन्दिर में लगाने के लिए दे आया हूँ। पापी के पाप का धन भगवान के चरणों में पहुँच पवित्र हो जाएगा।''

''यह तो ठीक है। परन्तु लड़की सज्ञान हो रही है। उसको विदा करने के लिए भी तो कुछ चाहिए।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अभी वह नौ वर्ष की है। मैं उसका विवाह पन्द्रह वर्ष की होने पर करूँगा। इसमें अभी बहुत काल है। तब तक भगवान किसी की नेक कमाई का कुछ भाग दिला देगा और उसके हाथ मेहँदी से रच दूँगा।"

"मगर मैंने तो उसके लिए एक लड़का अभी देखा है।"

"कौन है?"

"गाँव के पुरोहित ऊधवराम का लड़का है। दस-ग्यारह वर्ष का है और बहुत ही प्यारा लगता है।"

"वह बहुत छोटा है। लड़की उससे पहले ही युवा हो जाएगी। मैं इसके लिए अब दृष्टि दौड़ाऊँगा और पता करूँगा। हो जाएगा। अभी बहुत समय है।"

"मैं उसके रजस्वला होने से पहले ही उसे विदा करना चाहती हूँ।"

"क्या रजस्वला होने पर कुछ इतना खाने-पीने लगेगी कि घर का कोठार खाली हो जाएगा?"

"नहीं। यह बात नहीं। ऊधवराम की पत्नी कह रही थी कि शास्त्र में लिखा है कि लड़की को रजस्वला पति के घर में जाकर होना चाहिए।"

"इसीलिए तो तुमको कहा करता हूँ कि कुछ पढ़ा-लिखा करो जिससे तुम्हें पता चले कि शास्त्र में क्या लिखा है।"

"क्या लिखा है?"

"यही कि लड़की सामान्य रूप में रजस्वला तेरह वर्ष की वयस् में होती है और उसका विवाह पन्द्रह वर्ष के उपरान्त करना चाहिए। दो-ढाई वर्ष उसे यौवन प्राप्त करने में लगते हैं।"

"तो ऊधवराम की पत्नी गलत कहती थी? वह तो कहती थी कि कुमारी लड़की को रजस्वला होते माता-पिता देखें तो वे घोर नरक में जाते हैं।"

"और मैं तुमसे कहता हूँ कि वह मूर्ख पण्डित घोर नरक में जानेवाला है। वह म्लेच्छ तो मन्त्रोच्चारण भी अशुद्ध करता है। उसका लड़का भी विष्णु-सहस्र नाम पढ़कर अपने को पढ़-लिख गया समझने लगा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरस्वती उनके घर में नहीं जाएगी।''

''न सही। पर उसका घर में अचार भी तो नहीं डालना।''

''नहीं श्रीमती जी! अचार नहीं, मुरब्बा। और वह भी बहुत स्वादिष्ट बनेगा। जिसके घर जाएगी वह उसका धन्यवाद करेगा और उसके माता-पिता का जीवन-भर आभारी रहेगा।''

6

शहंशाह मेवाड़-विजय करने स्वयं सेना के साथ गया हुआ था। इस मुहिम में वह अपने साथ किसी भी हिन्दू को तथा राजपूत सेना को नहीं ले गया था। मेवाड़-विजय के लिए शहंशाह दो मास का समय पर्याप्त समझता था। परन्तु उसे आगरा से गए छ: मास से ऊपर हो चुके थे। आश्विन में उसने आगरा छोड़ा था और अब फाल्गुन आ गया था। अभी सेनाओं का आमना-सामना नहीं हो पाया था। छुटपुट झड़पें नित्य होती रहती थीं।

पण्डित विभूतिचरण को भी आगरे से बुलावा आये छ: मास से ऊपर हो चुके थे। वह भटियारिन की सरायवाले मन्दिर के विषय में जानने के लिए अधिक उत्सुक था। इस पर भी वह बिना बुलाए गाँव से बाहर जाना नहीं चाहता था। आगरा से आनेवाले लोग बता रहे थे कि मारवाड़ में मुगल सेना को सफलता नहीं मिल रही।

पड़ोसी लाला श्यामबिहारी प्राय: आगरा जाया करता था। उसका लड़का विपिनबिहारी का विवाह वहीं हुआ था। उसकी पत्नी का गौना अभी नहीं हुआ था। इससे लड़के का वहाँ आना-जाना होता रहता था। इस बार श्यामबिहारी पुत्रवधू के गौने के विषय में निश्चय करने वहाँ गया था और बात निश्चित कर आया था। अत: वह पण्डित विभूतिचरण को बताने आया था। पण्डित अपनी बैठक में बैठा अपने बड़े लड़के रामचरण से उसकी पढ़ाई के विषय में पूछ रहा था। इसी समय श्यामबिहारी वहाँ आ पहुँचा।

''आइए लाला जी! कई दिन के उपरान्त दर्शन हुए हैं।'' पण्डित जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने लाला जी को बैठने का संकेत कर कहा।

"मैं आगरा गया हुआ था।" श्यामबिहारी ने बैठते ही बात आरम्भ कर दी।

"क्या समाचार है वहाँ का?"

"शहंशाह मेवाड़ में ही हैं। सुना है कि वहाँ छुटपुट युद्ध हो रहा है। उन युद्धों के कारण शाही सेना अभी चित्तौड़ तक नहीं पहुँच पा रही है।"

"इस पर भी चित्तौड़ विजय होगा।"

"लोग कहते हैं कि वह अजेय है।"

"मेरी विद्या और बुद्धि यही कहती है कि राणा को मेवाड़ का बहुत-सा क्षेत्र खाली करना पड़ेगा। राणा के एक सेनाध्यक्ष और मन्त्री ने जयपुर वालों को कटु शब्द कहे थे और जयपुर वाले उन शब्दों का बदला लेने के लिए तड़प रहे हैं।"

"क्या कटु शब्द कहे थे?" लाला ने पूछ लिया।

"यही कि जयपुर वालों ने अपनी लड़की एक विधर्मी को दे दी है।"

"पण्डित जी! यह सत्य भी तो है।"

"परन्तु निन्दनीय नहीं। इसमें निन्दनीय कुछ और है।"

"वह क्या है?"

"यही कि हिन्दू समाज में अपने से बाहरवालों को अपनी ओर आकर्षित करने की शक्ति नहीं रही। लड़की दी है। यह इसी कारण निन्दनीय हो गया है कि हिन्दू समाज में लड़की महारानी जितनी सुन्दर होते हुए भी शहंशाह को हिन्दू नहीं बना सकी।"

"यह कैसे हो सकता था?" लाला पण्डित की बात को समझ नहीं सका। पण्डित इसका कारण जानता था और उसने बताया, "देखिए लाला जी! मैं एक लड़की के विषय में जानता हूँ जो एक हिन्दू औरत की एक मुसलमान से सन्तान थी। औरत को तो असती समझ हिन्दू परिवार से निकाल दिया गया और वह इसी शोक में लड़की को जन्म देकर मर गई। लड़की की एक हिन्दू ने यह समझ पालना की थी कि वह एक हिन्दू की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की है। लड़की सज्ञान हुई और उसका विवाह एक हिन्दू युवक से हुआ तो पता चला कि वह मुसलमान पिता की सन्तान है।

"परिणाम यह हुआ कि वह लड़की मुसलमान समझी जा रही है। उसका पति भी मुसलमान माना जाने लगा है। यह दोष है, जिस कारण जयपुर राजकुमारी का विवाह अकबर से प्रशंसा के स्थान पर निन्दनीय माना जाने लगा है।

"अभी तक जयपुर वालों से मेवाड़-युद्ध में अकबर ने सहायता नहीं माँगी। जयपुर वाले तो सहायता करने के लिए छटपटा रहे हैं। ज्योंही यह सहायता होगी, मेवाड़ का पतन आरम्भ होगा।"

लाला श्यामबिहारी इस राजनीति को नहीं समझता था। इस कारण उसने बात बदल दी। उसने कहा, "मैं इस बार आगरा इस कारण गया था कि विपिनबिहारी की पत्नी के गौने की तिथि निश्चय करूँ। विपिन ने ही बहुत आग्रह कर भेजा था।"

"तो लड़की के माता-पिता मान गए हैं ?"

"पहले जब भी मैं प्रस्ताव करता था, वे इनकार किया करते थे। इस बार उन्होंने तुरन्त मान लिया। परन्तु साथ ही उन्होंने कह दिया है कि लड़की को शीघ्र ही व्रापस भेज दें। लड़की प्रथम प्रसव उनके घर ही करेगी।

"इस पर मेरे कान खड़े हो गए। मैंने पूछ लिया, 'तो वह गर्भवती है ? किसका गर्भ है ?'"

"लड़की का पिता कहने लगा, 'गर्भ तीन मास का है और वह विपिनबिहारी का है।'

"उस समय तो मैं चुप रहा और अगले सप्ताह गौना ले आने की बात कह चला आया हूँ। वास्तव में मैं यह बात विपिनबिहारी से पूछना चाहता था।

"मैंने विपिनबिहारी से पूछा है और वह यह मान गया है कि वह जब भी वहाँ जाता था, पत्नी के कमरे में सोता था और उसने ही उसे गर्भवती किया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तब ठीक है। उसे ले आओ।"

"परन्तु विपिन की माँ नहीं मानती। वह कहती है कि लड़की छिनार है। उसे वह घर में लाकर नहीं रखेगी।"

विभूतिचरण मुख देखता रह गया। बात श्यामबिहारी ने ही कही। उसने कहा, "मुझे लड़की निर्दोष प्रतीत होती है।"

"क्या वयस् है उसकी?" पण्डित जी ने पूछ लिया।

'पन्द्रह वर्ष की है।"

"उसका गौना हो जाना चाहिए था। उसके माता-पिता ने अभी तक गौना न देकर भूल की है और फिर लड़के को पत्नी से अपने घर में ही मिलने का अवसर देकर ठीक नहीं किया। परन्तु लड़की का इसमें क्या दोष है?"

"यही मैं विपिन की माँ को समझाता हूँ, पर वह समझती ही नहीं।"

"क्या कहती है?"

"लड़की के माता-पिता को अपने ही घर में लड़की से यह काम नहीं होने देना चाहिए था।"

पण्डित ने मुस्कराते हुए कहा, "परन्तु अब तो हो गया है और इस आयु में होने में हानि भी नहीं। इस प्रयोजन के लिए ही विवाह किया गया था और वह प्रयोजन विपिन और उसकी पत्नी ने सम्पन्न किया है।"

"पण्डित जी! राम की माँ को हमारे घर भेज विपिन की माँ को समझा दीजिए।"

"ठीक है। मैं राम की माँ से कह देता हूँ।"

श्यामबिहारी गया तो पण्डित ने राम से कहा, "माँ को बुला लाओ।"

वह आई तो पण्डित जी ने श्यामबिहारी की पूरी बात बता दी। दुर्गा ने बात सुन जाने से पहले कहा, "मैं जाती तो हूँ, परन्तु वह मानेगी नहीं।"

"क्यों?"

"मेरी उससे बातचीत हुई है। इस विषय पर तो नहीं। यह तो हमें विदित ही नहीं था। हाँ, गौना के विषय में हुई है। वह समझती थी कि वहाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विपिन का विवाह कर भूल की है। वह आगरा में रहते हुए भी हम देहातियों का पेट नहीं भर सके। विवाह पर कुछ दिया नहीं और गौना पर देने को कुछ है नहीं।''

''तो तुमने उसे कहा नहीं कि गौना तो लड़की का होना है, न कि विपिन के श्वसुर की धन-दौलत का।''

दुर्गा ने मुस्कराते हुए कहा, ''वह बहुत लोभी है और वह धन-दौलत के साथ ही बहू को लाने की इच्छा करती है।''

''अच्छा, अब इस स्थिति में देखो वह क्या कहती है। उसे कह देना कि आज आगरा में हिन्दू और मुसलमानों में मेल-जोल बढ़ रहा है। उसे कहना कि जब से जयपुर की लड़की राजमहल में आई है, हिन्दू-मुसलमान का समन्वय हो रहा है। मगर यह समन्वय एक ही दिशा में चल रहा है। हिन्दू लड़कियाँ मुसलमानों के घर में जा रही हैं, मुसलमान लड़की किसी हिन्दू के घर में नहीं आती।''

''यह तो ठीक ही हो रहा है। मुसलमान की लड़की हिन्दू परिवार में पति के मत की होगी नहीं। साथ ही हिन्दू के घर में आनेवाली मुसलमान लड़की हिन्दू परिवार को दूषित कर देगी।''

''कैसे दूषित कर देगी?''

''उनके साथ खा-पीकर।''

''और पवित्र लोगों के घर में मुसलमान लड़की पवित्र क्यों नहीं हो जाएगी?''

''आसमान में बिना पंखों के उड़ा नहीं जा सकता। मुसलमान के पंख नहीं होते।''

''मुझे भय है कि विपिन घर से भाग जाएगा और आगरे में किसी मुसलमान की लपेट में आ गया तो मुसलमान हो जाएगा। उसका गौना हो जाना चाहिए।''

पण्डिताइन गई और बाहर जाने योग्य वस्त्र पहन पड़ोसियों के मकान में जाने के लिए निकली तो उसने देखा कि एक रथ द्वार पर आकर खड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो गया है। इस बार रथवान एक हिन्दू प्रतीत होता था। वह तिलक लगाए हुए था।

दुर्गा ने रथवान से पूछा, "यह किसके लिए आया है?"

"पण्डित विभूतिचरण जी के लिए।"

"कहाँ से आया है?"

"आगरा से। महारानी जी ने पण्डित जी को अपना नमस्कार भेजा है और उन्हें बुलाया है।"

दुर्गा लाला के घर जाए बिना लौट आई और आगरा से रथ आने की सूचना पति को देने लगी।

"महारानी के लड़का हुआ है।" पण्डित जी ने कह दिया।

"तो यहाँ बैठे पता चल गया है?"

"यह ज्योतिष विद्या से नहीं कह रहा। यह तो दो और दो जमा कर चार जानने से बता रहा हूँ।"

"तो अब?"

"रथवान को भोजनादि करवाओ। मैं तैयार हो रहा हूँ।"

दुर्गा अपनी लड़की सरस्वती को बाहर रथवान को भोजन कराने के लिए कह लाला श्यामबिहारी के घर चली गई।

जब तक रथवान भोजन करे और विभूतिचरण आगरा जाने की तैयारी करे, श्यामबिहारी, विपिन की माँ मालती और पण्डित जी की पत्नी दुर्गा आ गईं।

पण्डित जी ने बिठाते हुए पूछा, "लाला जी, बताइए, कैसे आना हुआ?"

श्यामबिहारी ने कहा, "विपिन तो आगरा चला गया है और मैं तथा विपिन की माँ उसके पीछे-पीछे जा रहे हैं। लड़का तिजोरी से बहुत कुछ निकालकर ले गया है।"

"वह कैसे गया है?"

"कल्लू के इक्के में।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो ऐसा करो। मेरे साथ अभी चलो। मैं भी आगरा जा रहा हूँ। शाही रथ आया है। हम समझते हैं कि हम मार्ग में ही विपिन को पकड़ सकेंगे। मगर लाला बहू को घर लाने के लिए तैयार है क्या?"

"यह चोरी कर तो उसने सिद्ध कर दिया है कि वह भी अब इस घर में रखने योग्य नहीं रहा। परन्तु पहले तो धन वापस आना चाहिए।"

"तो चलो। विपिन की माँ को फिर ले चलेंगे। अभी तो आप अकेले ही चलें।"

7

कल्लू का इक्का हल्का था, परन्तु एक घोड़े से खींचा जाता था। राज्य का रथ दो घोड़ेवाला और तेज़ भागनेवाला था। इस कारण विभूतिचरण और श्यामबिहारी रथ में कल्लू के इक्के को सहज ही पकड़ पाए। वह भटियारिन की सराय के बाहरवाले कुएँ से जल निकाल घोड़े को पिला रहा था कि उसको पहचान इन्होंने भी रथ को वहाँ ले जाकर खड़ा कर दिया। विपिन इक्के में नहीं था। पता लगा कि वह सराय में भोजन के लिए गया है। यह सूचना कल्लू इक्केवान ने ही दी थी।

श्यामबिहारी रुपये को वापस पाने के लिए अधिक उत्सुक था। इस कारण यह जानते ही कि विपिन सराय की भोजनशाला में गया है, उसके पीछे चल दिया। कल्लू ने इक्के में घोड़ा जोता और बिना विपिन के ही जाने लगा तो विभूतिचरण ने पूछ लिया, "कल्लू मियाँ, किधर जा रहे हो?"

"वापस गाँव को जा रहा हूँ।"

"तो आगरा नहीं जाओगे?"

"अब विपिन लाला आगरा नहीं जाएँगे।"

"परन्तु वह गाँव तो जा सकता है।"

"अब उसका बाप यह रथ लेकर आया है तो वह मेरे इक्के पर क्यों चढ़ेगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

''यह रथ तो मेरी सवारी में है।''

''तो विपिन लाला को भी अपने साथ ही ले आइएगा।''

विभूतिचरण समझ गया कि धन इक्के में रखा है और यह उसे ले लापता होना चाहता है। इससे उसने कल्लू का मार्ग रोकते हुए कहा, ''भाई ठहरो। लाला तुम्हारे इक्के में ही गाँव जाएगा। मैं तो आगरा जा रहा हूँ।''

इस पर भी कल्लू इक्के पर सवार हो घोड़े को हाँकने लगा तो विभूतिचरण ने आगे बढ़ घोड़े की लगाम पकड़ ली और सरकारी रथ के रथवान को बुला कह दिया, ''इसको पकड़ लो। यह भागने न पाए।''

रथवान राजपूत था। उसने कल्लू को दबोच लिया। कल्लू ने शोर मचाया तो कुएँ पर खड़े यात्री और सराय में से कुछ लोग हल्ला सुन बाहर आ गए। इन आनेवालों में श्यामबिहारी और विपिनबिहारी भी थे।

विपिन को आता देख कल्लू इक्केवाला कुछ शान्त हो गया। जब विपिन को पता चला कि कल्लू गाँव को लौट रहा था तो उसने पण्डित जी को कह दिया, ''इक्के की चौकी के नीचे एक थैली अशरफियों की रखी है। उसी को लेकर यह भाग रहा था।''

इस पर तो यात्रियों को, जो कुएँ पर जल पी रहे थे, क्रोध आ गया और वे कल्लू को चोर समझ पीटने लगे। विपिन ने इक्के में बैठने की चौकी के नीचे से अशरफियों की थैली निकाली और कल्लू को दस रुपये देकर गाँव वापस भेज दिया।

इसी समय रामकृष्ण भी वहाँ आ गया। रामकृष्ण को देख विभूतिचरण ने मन्दिर के विषय में जानना आरम्भ कर दिया। रामकृष्ण ने बताया, ''मन्दिर तो बन गया है। वह आप कलश पर सोना चढ़ रहा देख रहे हैं। इसमें मूर्ति की प्रतिष्ठा के विषय में विचार हो रहा है। मन्दिर की प्रबन्धक समिति भीतर बैठी विचार कर रही है।''

श्यामबिहारी और उसके लड़के को यह कह, ''मैं अभी आता हूँ।'' पण्डित जी भीतर चले गए। आगरा से आए पाँच सेठ, संरक्षक और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रबन्धक, वहाँ बैठे थे। वे सब विभूतिचरण को देख उठ उनका सत्कार करने लगे।

"आइए पण्डित जी! बहुत ही शुभ अवसर पर आए हैं। हम विचार कर रहे थे कि आगामी वैशाख प्रतिपदा को मन्दिर में मूर्ति स्थापित की जाए।

"आपका तो इसे शिवालय बनाने का विचार था। हमने लक्ष्मीनारायण की मूर्ति स्थापित करने का निश्चय किया है और हम सबकी यह सम्मति है कि मूर्ति की प्रतिष्ठा आप करेंगे।"

"देख लो। कहो तो काशी जी से किसी विद्वान् को बुलाया जा सकता है।"

लाला विष्णुसहाय, जिसने एक लाख रुपया मन्दिर के साथ धर्मशाला और मूर्ति-क्रय करने के लिए दिया था, विभूतिचरण को कह रहा था कि उसे ही मूर्ति-प्रतिष्ठा करनी चाहिए। उसने कहा, "घर का छोटा विद्वान् भी बाहर के प्रकाण्ड विद्वान् से अच्छा होगा। और फिर आप भी तो काशी जी से न्यायरत्न बनकर आए हैं।"

"ठीक है। आप निश्चय करिए। मैं तो यह जानना चाहता था कि इस विषय में प्रगति कहाँ तक पहुँची है।"

सबने सर्वसम्मति से यह विचार व्यक्त किया कि मूर्ति की स्थापना पण्डित विभूतिचरण वैशाख प्रतिपदा के ब्राह्म मुहूर्त में करेंगे। उस समय मन्दिर में सजातियों का सहभोज होगा। एक सौ एक ब्राह्मण तीन दिन का यज्ञ करेंगे और सबको एक-एक स्वर्ण मुद्रा दक्षिणा के रूप में दी जाएगी और धोती, अँगोछा वस्त्र के रूप में दिए जाएँगे।

विभूतिचरण इस प्रबन्ध से सन्तोष अनुभव करता हुआ बाहर आ श्यामबिहारी से पूछने लगा, "अब क्या कार्यक्रम है?"

"हम पिता-पुत्र आपके साथ आगरा चल रहे हैं और विपिन की बहू को लेकर आएँगे।"

"ठीक है। परन्तु कुछ लोग साथ आने के लिए होने चाहिएँ। बहू और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसके आभूषण-वस्त्र सुरक्षा से गाँव में पहुँचने चाहिए।''

''इसका प्रबन्ध वहाँ कर लिया जाएगा।''

''तब तो ठीक है। आप दोनों मेरे साथ रथ पर चलिए। मैं अभी दो घड़ी में आगरा पहुँच जाऊँगा। वहाँ से लौटने के विषय में मैं अभी नहीं कह सकता।''

''वह आज सायंकाल आपसे मिलकर निश्चय कर लेंगे।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

चित्तौड़-विजय पर जाने से पूर्व अकबर ने विभूतिचरण से पूछा था कि वह इस मुहिम को कब आरम्भ करे। शहंशाह ने राजस्थान के राजाओं को गनौर के दरबार में बुलाया था और लगभग सब राजा वहाँ आए थे। मेवाड़ और मालवा नरेश नहीं आए थे। दरबार में अकबर ने वहाँ आए राजाओं से पृथक्-पृथक् संधियाँ की थीं। उन संधियों में प्रत्येक से यह शर्त करा ली थी कि वे अकबर की मुहिमों में सैनिक सहायता देंगे।

गनौर के दरबार के उपरान्त ही अकबर मालवा और मेवाड़ के नरेशों को दरबार में न आने का दण्ड देना चाहता था। अतः इन दोनों राज्यों पर आक्रमण की तैयारी कर दी थी। मेवाड़ की राजधानी चित्तौड़ को अजेय समझा जाता था। इस कारण चित्तौड़-विजय के लिए अकबर स्वयं जाना चाहता था और उसने विभूतिचरण को बुलाकर पूछा था कि इस समर पर जाने का मुहूर्त्त क्या है?

विभूतिचरण ने तिथि बताई। यह आश्विन मास की प्रतिपदा थी। इस पर अकबर ने पूछा, "हमारा यह समर सफल होगा अथवा नहीं?"

विभूतिचरण ने अपनी गणना पर पुनः विचार कर कहा, "इसमें हुजूर कामयाब होंगे।"

इससे प्रसन्न हो अकबर ने मुहरों की एक थैली विभूतिचरण के रथ पर रखवा दी। पहले भी एक बार महारानी ने इसी प्रकार मुहरों की थैली उसे दी थी। पण्डित जी उसे ले जाना नहीं चाहते थे। परन्तु जब उन्हें बताया गया कि यह जरूरतमंदों में बाँट देने के लिए है तब पण्डित जी ने उस थैली को ले लिया था और फिर भटियारिन की सराय के साथ बन रहे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्दिर के लिए दे दी थी। अकबर ने इस बार भी उसी तरीके से मुहरें रथ पर रखवाईं और कहलवा दिया कि पण्डित जी जहाँ उचित समझें, उन्हें दान-दक्षिणा में दे दें।

विभूतिचरण ने इस धन को भी मन्दिर समिति को दे दिया। इस मुहिम के आरम्भ करने के समय राजा मानसिंह ने इस समर को स्वयं चलाने का प्रस्ताव किया था। इसमें कारण यह था कि एक बार मेवाड़ के महामन्त्री जयमल ने जयपुर वालों को अपशब्द कहे थे कि वे अपनी लड़की को अकबर के हरम में भेजकर हिन्दुओं के साथ गद्दारी कर रहे हैं। जयपुर वालों का पूर्ण परिवार इस कटु वचन से मेवाड़ वालों का शत्रु हो गया था और वह अपने अपमान का बदला लेना चाहते थे।

परन्तु अकबर की सेना के एक सालारे-अज़ीम थे अनवरखाँ। उसने अकबर को सम्मति दी थी कि राजपूतों को इस मुहिम का प्रबन्ध देना ठीक नहीं होगा। इसे तो केवल मुसलमानों के द्वारा ही लड़वाना चाहिए। अनवरखाँ की बात अकबर को पसन्द आई थी और मानसिंह के प्रस्ताव को यह कहकर टाल दिया गया था कि राजपूतों से अकबर को और बहुत-से काम लेने हैं, इस मच्छर को मसलने के लिए वह उनको कष्ट देना नहीं चाहता।

अकबर का विचार था कि यह मुहिम पन्द्रह दिन में समाप्त हो जाएगी, परन्तु इसमें छः मास लग चुके थे और चित्तौड़ का घेरा भी पूर्ण रूप से अभी हो नहीं सका था।

अकबर देख रहा था कि उसके सिपाही मन से इस मुहिम में लड़ नहीं रहे। वह इसका कारण अपने सालारे-जंग अनवरखाँ से पता करने लगा तो उसे बताया गया कि मुसलमान सिपाही अब अपने शहंशाह के लिए लड़ने में दिलचस्पी नहीं ले रहे।

"क्यों?" अकबर का प्रश्न था।

"इसलिए कि आगरा से कुछ ऐसी खबरें आ रही हैं जिनकी वजह से मुसलमान सिपाही यह समझ रहे हैं कि वे एक बुतपरस्त की सल्तनत की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरक्की के लिए लड़ रहे हैं।''

''तो वे समझते हैं कि हम नमाज़ पढ़ने की बजाय किसी पत्थर के बुत को सजदा करते हैं?''

''हाँ हुज़ूर! यह खबर है कि शहंशाह-ए-हिन्द की दी ज़मीन पर शहंशाह से दिए रुपए से एक आलीशान शिवालय बन रहा है।''

''लाहौल बिला कुव्वत। यह गलत बयानी कौन कर रहा है?''

''जहाँपनाह! यह मशहूर हो रहा है कि हुज़ूर ने एक ज्योतिषी पण्डित को पाँच सौ अशरफी दी थीं और उन अशरफियों से भटियारिन की सराय के साथ बन रहे मन्दिर के कलश पर सोना चढ़ाया जा रहा है।''

''तो यह ठीक खबर है?''

''इसके ठीक और गलत की बात तो शहर का कोतवाल ही बता सकता है। मैं तो यह अर्ज़ कर रहा हूँ कि यह खबर फौज में फैल रही है और इससे फौज तो फौज, मुल्क-भर के मोमिनों के हौंसले पस्त हो रहे हैं।''

अकबर को स्मरण था कि पण्डित विभूतिचरण को मेवाड़ की मुहिम पर चलने से पूर्व महारानी ने पण्डित जी से अपने होनेवाले बच्चे के विषय में पूछा था और पण्डित के नजूम से प्रसन्न हो पाँच सौ अशरफी भेंट में उसके रथ पर रखवा दी थीं। साथ ही रथवान ने यह सूचना दी थी कि वह धन पण्डित भटियारिन की सराय पर छोड़ गया था, अपने घर नहीं ले गया था। रथवान ने बताया था कि उस समय पण्डित जी की जेब में एक रुपया भी नहीं था।

अकबर को अनवर से बताया समाचार सुन पण्डित पर क्रोध आ गया। अकबर को पण्डित ने बताया था कि चित्तौड़ विजय होगा और यह हो नहीं रहा था। इससे वह पण्डित के मन में कुटिलता का भास करने लगा।

वह चित्तौड़ से आगरा लौट आया। उसका विचार था कि पण्डित को अपने गाँव से बुलाकर उसके अशुद्ध कथन के लिए दण्ड देगा।

आगरे में पहुँचा तो वह यह समाचार सुन कि महारानी ने पहले ही पण्डित विभूतिचरण को बुलाने के लिए रथ भेजा हुआ है, परेशानी अनुभव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगा। उसने पूछा, "तो तुम पहले भी इस काफिर से मिलती रही हो?"

"नहीं जहाँपनाह! यह तो बच्चे की जन्मकुण्डली बनवाने के लिए उसे बुलवाया है।"

"तो पहले हम उससे मिलेंगे।"

"क्या बात है?" महारानी शहंशाह के माथे पर शिकन देख रही थी। वह भयभीत थी कि पण्डित के विरुद्ध कुछ सुना है शहंशाह ने।

अकबर ने अपने मन की बात को छुपाने के लिए बहाना बना दिया। उसने कहा, "पण्डित ने हमारे मेवाड़ की मुहिम पर जाने से पहले यह पेशीनगोई की थी कि हमारी फतह होगी और वह हो नहीं रही।"

"मगर हो तो रही है, अगरचे फतह की रफ्तार कम है।"

"पर हमारा नुकसान अज़हद हो रहा है। मैं तो इसे पसपाई के निशानात समझता हूँ।"

"मगर मैंने तो हुजूर से कहा था कि मानसिंह अपने राजपूत सिपाहियों से शहंशाह की खिदमत करने को तैयार है।"

"हमारे मुसलमान सालारे-जंग ने बताया था कि राजपूत सिपाही एक राजपूत रियासत के खिलाफ मन लगाकर नहीं लड़ेंगे।"

महारानी ने बात बदल दी। उसने पूछ लिया, "तो आप उससे दोबारा मुहिम के मुतअल्लिक पूछना चाहते हैं?"

"हाँ।"

"वह आज किसी वक्त भी आनेवाला है।"

वास्तव में अकबर पण्डित से झगड़ा कर उससे कुछ अपनी शान में अनुचित शब्द कहलवाकर उसे फाँसी का दण्ड देने का विचार बनाकर आया था।

2

विभूतिचरण आगरा की नगर सराय से श्यामबिहारी और उसके पुत्र विपिनबिहारी से छुट्टी ले स्नानादि से निवृत्त हो राजमहल के द्वार पर जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पहुँचा। उसने अपने नाम की सूचना भीतर भेज दी। आशा के विपरीत दरबान भीतर गया और समाचार लाया कि शहंशाह उनकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

"तो शहंशाह समर से लौट आए हैं?" पण्डित ने पूछा।

"हाँ। वह भीतर दीवानखाने में आपकी इन्तज़ार में बैठे हैं।"

"तो चलो।" विभूतिचरण ने कहा और चल पड़ा।

दीवानखाने में शहंशाह एक तकिए का आश्रय लिये बैठा था। पण्डित जी ने हाथ उठा आशीर्वाद दिया तो शहंशाह ने कहा, "पण्डित जी, आइए।"

विभूतिचरण आदरयुक्त अन्तर रख सामने खड़ा हुआ तो उसे बैठने के लिए नहीं कहा गया। अकबर ने पूछा, "सुना है कि आप पिछले छः मास से आगरा नहीं आए।"

"जहाँपनाह! मेरा आगरे में आपकी खिदमत करने के सिवाय दूसरा कोई काम नहीं होता। यहाँ के कुछ लोग मेरी सेवाओं से लाभ उठाते हैं, परन्तु इसके लिए उनको गाँव में आना पड़ता है।"

"और हमें गाँव में क्यों नहीं बुलाते?"

"इसलिए कि आप एक निहायत ही अहम काम कर रहे हैं। उससे आपको हटाकर आपका कीमती वक्त एक छोटे-से गन्दे गाँव में आने-जाने में फजूल गँवाने से बचाना चाहता हूँ।"

"हम कौन-सा अहम काम कर रहे हैं?"

"हिन्दुस्तान जैसे वसीह मुल्क को एक राज्य के तले लाने की कोशिश कर रहे हैं।"

"तो यह बहुत जरूरी काम है?"

"इतना ज़रूरी न भी हो, तब भी यह निहायत ही मुश्किल है।"

"तो इसके बिना भी लोगों का भला मुमकिन है?"

"मैं लोगों के भले-बुरे पर गौर नहीं कर रहा।"

"मगर आपने एक दिन कहा था कि सबकी भलाई सोचना हर एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दू का फर्ज़ है।"

"हाँ, हुजूर! हमारे यहाँ इस किस्म के काम को यज्ञ कहते हैं। हमारी धर्म-पुस्तकों में यह कहा है कि हमारे सब काम यज्ञरूप हों। मतलब यह है कि सबके फायदे के लिए हों।"

"और अपना फायदा?"

"काम करनेवाला भी तो, सबमें शामिल होगा। जब सबका भला होगा तो उसका भी होगा।

"देखिए ज़हाँपनाह, मैं गाँव में एक कुआँ लगाता हूँ। गाँववाले उससे पानी निकालते हैं तो मैं भी निकाल सकता हूँ।"

"मगर अब आप कह रहे हैं कि मेरी मुश्किल पर गौर करते हुए लोगों के फायदे की बात नहीं सोच रहे।"

"उनके फायदे की बात उनको बताता हूँ। जैसे आपके फायदे की आपको बताता हूँ। मगर आपने कभी यह नहीं पूछा कि आपको कोई काम, जो आप कर रहे हैं, फ़ायदा देगा या नहीं देगा।"

"मगर हमने पूछा तो था कि इस मुहिम में हमें कामयाबी होगी या नहीं।"

"और मैंने अर्ज़ की थी कि होगी।"

"तो इससे हमारा फायदा होगा, यही तो इसके मायने हैं।"

"नहीं हुज़ूर, इसका यह मतलब नहीं। न ही आपने यह पूछा था। आपने तो मुहिम की कामयाबी के मुतअल्लिक पूछा था। मैंने भी उतना ही बताया था।"

"मगर उसमें कामयाबी नहीं हो रही।"

"यह इस वजह से कि हजूर अभी अपनी सब ताकत इस्तेमाल नहीं कर रहे। इस मुहिम को कामयाब करने के लिए अभी और ज्यादा ज़राय इस्तेमाल करने होंगे।"

"हमने कौन-सी कसर छोड़ रखी है अपना मकसद हासिल करने में?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"आप इसे हिन्दू-मुसलमान का सवाल बना इसमें सिर्फ मुसलमानों को ही शामिल कर रहे हैं। ऐसा मालूम होता है कि खुदा परवरदिगार इस इलाके को सर करने की इज्ज़त सिर्फ मुसलमानों को देना नहीं चाहता। आपको अपनी रियाया के दूसरे अंग को भी इस मुहिम में शामिल करना चाहिए।"

"मगर हम तो यह समझते हैं कि हम किसी हिन्दू को हिन्दुओं की आखिरी रियासत के तबाह होने के गुनाह से बाहर रखें। क्योंकि हमने यह फैसला किया हुआ है कि मेवाड़ की ईंट से ईंट बजा देंगे।"

"मगर जहाँपनाह! गुनाह या सवाब तो अपने करने से होता है। यदि कोई दूसरा उससे कराए तो वह उसका ज़िम्मेदार नहीं होता। कभी यह भी होता है कि कोई गुनाह कोई जबरदस्त हस्ती कराती है तो उसका नफा-नुकसान जबरदस्त शख्स को ही होता है। कभी इससे उलट भी होता है। कोई शख्स किसी किस्म का सवाब का काम करना चाहता है, मगर उसे वह क्यों किया जाए, नहीं जानता। यह इस अच्छे काम को गुनाह में भी बदल सकता है।"

"मैं एक मुसलमान हूँ और किसी मुल्क की हकूमत हाथ में लेकर यह अपना फर्ज़ मानता हूँ कि उसके बाशिन्दों को इसलाम के नूर से पुर करूँ।"

"हजूर! अगर वे अपनी मर्ज़ी से इसलाम मंजूर करते हैं तो इसका पुण्य-पाप उनको होगा और अगर आप बिना उनकी मर्ज़ी के उनको इसलाम मंज़ूर करने पर मजबूर करते हैं तो यह हर हालत में गुनाह ही होगा। यह इसलाम या किसी भी मज़हब की बात हो सकती है। किसी को पकड़कर किसी राह पर ले जाना गुनाह है। इन्सान को मज़हब के मुतअल्लिक मजबूर करना गुनाह ही है।"

"मगर हम मजबूर नहीं करते। हम तो उनको इसलाम में शामिल होने से फायदा पहुँचाते हैं।"

"हजूर! यह ठीक है। मगर फायदा वह है जिसे वह फायदा समझें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके मुतअल्लिक ज़बरदस्ती करना ठीक नहीं।''

''मगर हमारे मुल्ला लोग तो कर सकते हैं।''

''ऐसा करनेवाले मुल्लाओं को कैद कर लेना चाहिए। वे मज़बूर कर या फुसलाकर कोई अमल कराते हैं तो यह गुनाह ही है।''

''तो इस वक्त सब मुल्ला जो कुछ कर रहे हैं और हम उन मुल्ला-मौलानाओं को वह सब करने से मना नहीं करते तो हम गुमाह कर रहे हैं?''

''मुझे कुछ ऐसा ही समझ में आ रहा है।''

''यह तुम गुस्ताखी नहीं कर रहे क्या?''

''हजूर! नहीं। आपको गलती करने से रोकना गुस्ताखी नहीं, बल्कि यह आपकी खिदमत है।''

''हम इसे मुखालिफ़त समझते हैं।''

''तो आप भूल कर रहे हैं। मैं आपकी मुखालिफ़त नहीं कर रहा। आपकी खिदमत अदा कर रहा हूँ।''

''बहुत खूब! बगावत को खिदमत करना कह रहे हो।''

''मैं अपनी अन्तरात्मा से आपकी खिदमत ही कर रहा हूँ और उसका पुण्य मुझे मिलेगा।''

''ठीक है। हम इसे गुनाह समझते हैं और इसकी सज़ा तुम्हें देते हैं।''

इतना कह अकबर ने ताली बजाई। उसकी पीठ के पीछे एक संगमरमर की जाली थी। उसके पीछे से आवाज आई, ''ठहरिए।''

विभूतिचरण का ध्यान उधर नहीं गया था। वह पहचान गया कि यह एक औरत की आवाज़ है। सम्भव है कि-यह महारानी की आवाज़ हो।

ताली का शब्द सुन एक दरबान दीवानखाने में आया। मगर जाली के पीछे की आवाज के अनुरूप ही शहंशाह ने दरबान को कह दिया, ''बाहर ठहरो।''

दरबान दीवानखाने से बाहर निकल गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

3

अकबर और पण्डित विभूतिचरण में हो रहे वार्तालाप को महारानी जोधाबाई सुन रही थीं। वह समझ रही थीं कि शहंशाह मुहिम से निराश आए हैं और अपनी निराशा का क्रोध पण्डित पर निकाल रहे हैं। जब पण्डित के विरुद्ध किसी प्रकार की आज्ञा होने ही वाली थी तो उसने ठहरने के लिए जाली के पीछे से कह दिया।

जब दरबान दीवानखाने से निकल गया तो अकबर ने पण्डित को सम्बोधित कर कहा, ''देखो पण्डित! आज तुम्हारा इस दुनिया से अन्न-दाना खतम हो चला था। महारानी जी ने कहा है, ठहरिए। हम इसका मतलब यह समझे हैं कि वह चाहती हैं कि हमें अपने हुक्म को अभी मुल्तवी करना चाहिए।''

विभूतिचरण मुस्कराते हुए सामने खड़ा था। उसने कहा, ''मैं महारानी जी का शुक्रगुज़ार हूँ। उन्होंने मुझे कुछ सेवा करने का और मौका दिलवा दिया है।

''हज़ूर! एक बात तो यकीनी है कि जो कोई भी इस दुनिया में पैदा हुआ है वह एकदिन मरेगा ही। मगर यह जन्म और मरण मनुष्य के प्रारब्ध, जिसे किस्मत कहते हैं, के अधीन है और मैंने अपने विषय में अपने इल्म से यह जाना है कि मैं अभी पचपन साल तक और जीऊँगा।''

''तो तुम नजूम से जानते थे कि ठीक वक्त पर महारानी तुम्हारी जानबख्शी करा देंगी?''

''जहाँपनाह! उनके मुतअल्लिक मैं जानता नहीं था कि वह हमारी गुफ्तगू सुन रही हैं। हाँ, परमात्मा की बात मैं जानता था कि वह मेरी सब बातों को देखते हैं और आपके कामों को भी जानते हैं। इस कारण यह करिश्मा तो परमात्मा की ही कृपा का फल है।''

''बहुत ना-शुक्र-गुज़ार हो पण्डित!''

''वह तो पहले ही अर्ज़ कर चुका हूँ। महारानी जी इस बात की साक्षी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं। मगर मैं तो यह कह रहा हूँ कि उनके मन में यह दया-भाव भी तो परमात्मा का पैदा किया हुआ है।''

''बात करने में बहुत होशियार हो। अब महारानी जी के दिल में परमात्मा का खौफ कह रहे हो। अच्छा, छोड़ो इस बात को। अब बताओ, तुम हमारी मेहर को मानते हो या नहीं?''

''इससे इन्कार नहीं कर रहा। आपके दिल में किसी का तो मान है। परमात्मा का न सही, महारानी जी का ही सही। मगर वह जानती हैं कि उनके दिल में बैठा वह कह रहा है कि विभूतिचरण बेगुनाह हैं और उसे अभी जीने का अधिकार है।''

अकबर ने बात बदल दी। उसने जाली की ओर देखकर पूछा, ''हाँ तो महारानी! फरमाएँ कि इस काफिर की ज़िन्दगी दराज़ करने की क्या वजह है?''

जाली के पीछे से आवाज़ आई, ''मैंने तो ठहरिए इसलिए कहा है कि मुझे शहज़ादे की जन्मकुण्डली बनवानी है। इसीलिए मैंने इनको बुलाया है। साथ ही पण्डिताइन हैं। इनके तीन बच्चे हैं। पण्डिताइन बेचारी अपनी लड़की की शादी के लिए परेशान हो रही हैं। इन सब कामों के लिए अभी इनकी इस जहाँ में ज़रूरत है। पण्डिताइन दुर्गा अभी विधवा नहीं हो रही। न ही इनके बच्चे यतीम होने वाले हैं। तो फिर कुछ ऐसा हुक्म ही क्यों दिया जाए जो निरर्थक होनेवाला है।''

''तो महारानी जी भी अब नजूम लगाने लगी हैं?''

''बात यह है कि पण्डित जी को मैंने बुलाया है। मेरे भेजे रथ में बैठकर आए हैं। इसलिए यह मेरी ज़िम्मेदारी है कि इनको सही-सलामत गाँव में पहुँचा दूँ। मैं समझती हूँ कि मेरे शहंशाह की हुकूमत उस गाँव तक जरूर है और वह जब चाहें अपने मुल्ज़िम को पकड़ मँगवा सकते हैं।''

''हाँ, पण्डित जी!'' महारानी ने बात बदल विभूतिचरण से कहा, ''मैं खादिमा के हाथ शहज़ादे की जन्म-तिथि और समय लिखकर भेज रही हूँ। उसकी जन्मकुण्डली और ज़िन्दगी के हालात आप लिखकर भेज दें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बताइए, यह काम कब तक हो सकेगा?''

''हुजूर!'' पण्डित ने जाली की ओर देखकर कहा, ''कम-से-कम दो दिन इसमें लगेंगे।''

''तो खादिमा से वह पर्चा ले लें और आप जा सकते हैं।''

इसी समय जाली के पीछे से एक खादिमा एक कागज़ के पुर्ज़े पर शहज़ादे की जन्म-तिथि इत्यादि लिखा ले आई। वह उसने अकबर के हाथ में दे दी।

शहंशाह ने कागज़ पर हिन्दी भाषा में एक पंक्ति में ही जन्मकाल इत्यादि लिखा देखा तो पण्डित के हाथ में देते हुए पूछा, ''पण्डित जी! हमें पता चला है कि आप हमसे दिए धन को मन्दिर बनवाने पर खर्च कर रहे हैं। यह हमारी मर्ज़ी के खिलाफ है।''

''जहाँपनाह! मैंने आपसे कभी कोई रकम नहीं ली। हाँ, पिछली बार मेरे जाने के रथ पर एक थैली रखी देखी थी। रथवान से पूछने पर पता चला कि महारानी जी ने वह धन ज़रूरतमन्दों में देने के लिए दिया है।

''मैंने वह जरूरतमन्दों को ही दे दिया था। मुझे मालूम हुआ है कि उसका सदुपयोग किया जा रहा है। उस धन से सोना खरीदकर एक मन्दिर के कलश पर चढ़ाया जा रहा है। महारानी जी का दिया धन एक निहायत ही मुनासिब काम पर खर्च हो रहा है।''

''बस यही वजह हो रही है कि हमारी मेवाड़ की मुहिम कामयाब नहीं हो रही।''

''उसकी कामयाबी तो हो रही है। हाँ, उस रफ्तार से नहीं हो रही जिससे आप और मैं उम्मीद कर रहे थे। इसकी वजह मैंने अर्ज़ कर दी है।''

''मगर यह बात हमें सालारे-जंग ने ही बताई है कि उस मन्दिर पर हमारे धन से बन रहे कलश की खबर से ही हमारे मुसलमान सिपाही दिल लगाकर नहीं लड़ रहे।''

''जहाँपनाह! यह बात नहीं है। बात यह है कि इसी सालारे-जंग ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शायद हुज़ूर को यह राय दी थी कि इस मुहिम में राजपूतों को शामिल न किया जाए और अपनी इस गलत राय से हो रही खराबी को छुपाने के लिए बदनामी की यह बात कह दी है।

"राजपूताना के रेगिस्तान में आपके मुसलमान सिपाही जंग कर नहीं सके। वह अपनी गलत राय का इलज़ाम किसी दूसरे पर लगा रहा मालूम होता है।"

अकबर विचार करने लगा कि पण्डित की बात ठीक ही मालूम होती है। नाकामयाब सालारे-जंग अपनी नाकामयाबी की सफाई में इलज़ाम किसी दूसरे पर लगा रहा है।

"देखिए जहाँपनाह!" पण्डित ने आगे कहा, "मन्दिर के खुलने की रस्म और वहाँ देवता की स्थापना अगले महीने की पहली तारीख को होनेवाली है। अगर हुज़ूर उस मौके पर वहाँ तशरीफ लाने की तकलीफ करें तो हिन्दुस्तान में वसीअ तादाद रियाया के मन में उत्साह की लहर दौड़ जाएगी और फिर उसके हम मज़हबों को चित्तौड़ की मुहिम में शामिल कर लेंगे तो फतह यकीनी है। शहंशाह अपने मुनासिब ज़राय को मुनासिब जगह पर इस्तेमाल नहीं कर रहे। यह होने लगेगा तो कामयाबी, जो आपके भाग्य में लिखी है, वह फल देने लगेगी।"

"हमें तो यह खबर मिली है कि हमारे सिपाही पहले ही हमारे उस मन्दिर की तामीर में मददगार होने पर नाराज हैं।"

"यह तो अपनी नाकामयाबी और नालायकी को छुपाने के लिए बहानेबाज़ी ही मालूम होती है। देखिए हुज़ूर! कहावत है 'नाच न जाने आँगन टेढ़ा।' मुझे कुछ ऐसी ही बात मालूम होती है।'

"तो तुम मुझे इस मुहिम में राजपूतों को शामिल करने की राय देते हो?"

"मैं तो राजा मानसिंह की तजवीज़ की याददिहानी ही कर रहा हूँ।"

"अच्छी बात है। हम पण्डित की राय पर गौर करेंगे।"

इसका मतलब था कि मुलाकात समाप्त हुई। विभूतिचरण इस सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय शहंशाह के सामने खड़ा रहा। इस बार उसे बैठने का भी हुक्म नहीं दिया गया था। पण्डित ने आशीर्वाद दिया और पिछले पाँव दीवानखाने से बाहर निकल गया। यह दस्तूर था कि शहंशाह की मौजूदगी में कोई भी व्यक्ति आते हुए अथवा जाते हुए उनकी ओर पीठ नहीं करता था।

4

जब विभूतिचरण दीवानखाने से बाहर निकला तो बाहर दो राजपूत सिपाही खड़े थे। इन्होंने पंडित को देख झुककर सलाम किया और पंडित जी को महल के बाहर ले जाकर उनके लिए खड़े रथ पर बिठाते हुए कहा, "पंडित जी! महारानी जी ने यह आपको भेंट देने के लिए हुक्म दिया है।"

यह एक थैली थी। उसमें पहले की भाँति मुहरें ही प्रतीत होती थीं। पंडित जी ने थैली को पकड़ते हुए पूछ लिया, "इस बोझ को कहाँ पहुँचाने की आज्ञा है?"

"हुज़ूर! यह आज्ञा है कि आप इसे अपने गाँव ले जाइए। वहाँ पंडिताइन दुर्गा की लड़की के विवाह पर खर्च करने के लिए यह महारानी जी की ओर से भेंट है।"

विभूतिचरण विस्मय में मुख देखता रह गया। दोनों राजपूत सिपाही गंभीर मुख पंडित जी के मुख पर परेशानी के चिह्न देख रहे थे। पंडित जी ने अपने मनोभावों को प्रकट कर दिया और कहा, "सरदार! तनिक पता करो कि किस दुर्गा को महारानी जी की यह सौगात पहुँचानी है।"

"तो आप यह पकड़िए और ठहरिए। हम अभी पता करने की कोशिश करते हैं।"

मगर इस समय तक शहंशाह महारानी के पास जा चुके थे। इस कारण राजपूत सिपाही पंडित जी से कहने लगे, "इस समय शहंशाह महारानी जी के पास हैं और वहाँ अब कोई नौकरानी नहीं जा सकती। इस कारण आप अभी तो नगर सराय में ही जा रहे हैं, वहाँ इसके विषय में जो कुछ भी आज्ञा होगी, हम आपकी सेवा में कहलवा भेजेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विभूतिचरण रथ पर सवार हो नगर सराय को चल दिया। उसके दीवानखाने से जाते ही अकबर उठा और जाली के पीछे जा पहुँचा, जहाँ महारानी जोधाबाई बैठी थीं। उनके पास दो सेविकाएँ खड़ी थीं और एक ने गोद में शहज़ादे को लिया हुआ था। शहज़ादा उस समय चालीस दिन का हो चुका था।

"तो इसे भी यहाँ लिए बैठी थीं।" शहंशाह ने धाय की गोद में बच्चे को देखकर पूछा।

"मैं इसके लिए पंडित जी से आशीर्वाद लेने आई थी।"

"तो वह कोई औलिया है जिसकी दुआ की ख्वाहिश कर रही थीं?"

"बिना औलिया के कोई मुस्तकबिल में कैसे देख सकता है? उसमें तो यह ताकत परमात्मा की दी हुई हो सकती है।"

"तुमने आज एक बहुत बड़े काफिर की जान बचा ली है।"

"मगर जहाँपनाह! इसका कसूर क्या था?"

"इसने हमारी सल्तनत में सेंध लगाने की कोशिश की है।"

"मैंने आप दोनों में हुई सारी बातचीत सुनी है। उसमें तो कोई सेंध लगाने की बात थी नहीं। उसने आपको एक राय दी थी। उस राय का मानना न मानना आपके अख्तियार में था।"

"मगर मैं उसकी यहाँ दी गई राय की बात नहीं कर रहा। पिछली बार जब यह आया था तो महारानी जी ने इसे पाँच सौ अशरफियाँ किसी खरायत के काम पर खर्च करने के लिए दी थीं। वह इसने एक हिंदू मंदिर पर व्यय करने के लिए दे दी हैं। सिर्फ इतना ही नहीं कि वह रकम इस काम के लिए दे दी है, बल्कि इसकी डुग्गी पीटना शुरू कर दिया है।"

"जहाँपनाह! उस धन के खर्च करने में उसे मैंने आजादी दी थी। वह उसे अपने पास भी रख सकता था। मुझे मालूम है कि उसके घर में एक रुपया भी नकद नहीं था, जब वह रथ में अपने घर पहुँचा था। वह खुद भी जरूरतमंद था। इसकी बीवी इसे कह रही थी कि लड़की शादी करने लायक हो रही है और उसके लिए कुछ नकद की जरूरत होगी। मगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसने अपनी जरूरत से ज्यादा मंदिर की जरूरत को समझा है।

"भला यह गुनाह की बात थी? और फिर इसने उस धन को देनेवाले का नाम रोशन करने की ही कोशिश की थी।

"यह तो कसूर उनका है जो आपके इस सवाब के काम को बुरा मान रहे हैं। मेरी तो जहाँपनाह से यह अर्ज है कि इस किस्म के खुदा-दोस्त को इनाम देना चाहिए।"

शहंशाह मुस्करा रहा था। उसने मुस्कराते हुए कहा, "तो इस बार जरूरतमंदों को देने के लिए महारानी जी ने इस काफिर को कुछ नहीं दिया?"

"मैंने तो दिया है। मगर कुछ आपके हाथ से भी जाता तो उसको शहंशाह की फराखदिली का कुछ तो अहसास होता।"

"हमने यह फैसला किया है कि भटियारिन की सराय पर बने मंदिर की इफ्तताही रस्म के वक्त खुद जाकर कुछ मंदिर की नजर-न्याज़ करेंगे। इस काफिर के हाथ में देने की बजाय खुद जाकर देंगे। इससे हमारी शोहरत होगी।"

महारानी जोधाबाई ने शहंशाह की कदमबोसी की और कहा, "जैसे हुजूर के गोविंदवाल में सिक्ख गुरु की संगत में हाजिर होकर नजर पेश करने से हिंदुस्तान में धूम मच गई थी, वैसे ही इस समय भी होगा और हुजूर की हिंदू रियाया आपके गुणानुवाद गाती फूली नहीं समाएगी।"

"हाँ। हम पंडित के इस दावतनामे को मंजूर करेंगे।"

"और एक मेरी इल्तजा है।"

"क्या?"

"इस मौके पर इस खादिमा को भी साथ रखें।"

"यह एक मुश्किल मसला है। यह गोविंदवाल नहीं है। यह आगरा है। फिर तुम जानती हो कि हमारी हरम में एक जबरदस्त इसलामी असर है जो हमारी सल्तनत को नेस्तो-नाबूद कर सकता है। उसके तार हिंदुस्तान के हर बड़े शहर से जुड़े हुए हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महारानी जोधाबाई चुप हो रहीं।

जब अकबर ने महारानी को अपने कमरे में भेज दिया तो विचार करने लगा कि कितनी बड़ी बेवकूफी करने लगा था। पंडित विभूतिचरण से उसे काम लेते हुए चार-पाँच साल के लगभग हो चुके थे और उसकी भविष्यवाणी कभी भी निष्फल नहीं हुई थी। वह विचार कर रहा था कि हकीकत में इस बार भी उसका कहा ठीक हो रहा था। यह ठीक था कि वह इस मुहिम का नतीजा बहुत जल्दी चाहता था, मगर दूसरी तरफ भी तो दिलदार लोग थे। वे अपने वतन के लिए लड़ रहे थे। उनका त्याग और तपस्या भी तो उसकी इच्छाओं का विरोध कर रहे थे।

इस पर भी वह विचार करता था कि विजय उसकी ही होगी। यह सोचकर उसकी हँसी निकल गई। वह हँसा इस कारण था कि उसके मस्तिष्क में अपनी कामयाबी की बात के आते ही यह बात भी आई थी कि भला उसकी ही कामयाबी क्यों होगी?

उसने यह प्रश्न विभूतिचरण से मालवा पर आक्रमण के विषय में पूछते समय किया था। पंडित ने गणना कर बताया था कि मुहिम मुश्किल है, मगर कामयाबी शहंशाह की ही होगी। उस समय उसने प्रश्न किया था, "मेरी ही फतह होगी, भला क्यों?"

"आपने अपने पहले जन्म में कुछ ऐसे पुण्य कार्य किए हैं कि आपके भाग्य में फतह लिखी है। मालवा वालों ने आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ा। आपका हमला वाजिब नहीं है मगर फिर भी वह हारेंगे और आप जीतेंगे।"

इस पर अकबर ने पूछा था, "तो खुदा बहुत ही बेइंसाफ है?"

पंडित का सतर्क उत्तर था, "नहीं हुज़ूर! वह अन्याय नहीं करता। आपके पूर्व जन्म के पुण्यकर्म आपके साथ हैं और मालवा वालों के पूर्व जन्म के कर्म उनके साथ हैं।"

"यह कैसे पता चले कि यह मेरे इस जन्म की मेहनत-मशक्कत का नतीजा नहीं?"

"यह मेहनत-मशक्कत करने की अक्ल और कुव्वत भी तो पूर्व जन्म

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के कर्मों का फल है। हुजूर! याद रखिएगा, जिस दिन आपके मन में किसी काम के लिए स्फूर्ति और साहस नहीं होगा तो समझ लीजिएगा कि परमात्मा नहीं चाहता कि आप उसे करें।''

अकबर का अगला प्रश्न था, ''और जब भी हमारा मन किसी ऐसी बात के लिए करे जिसका नतीजा पीछे बुरा हुआ हो तो क्या समझा जाए?''

''यही कि पूर्व जन्म के संस्कार आपसे वह गलती करवा रहे हैं। इसमें आप विवश हो उस नतीजे की तरफ ले जाए जा रहे हैं।''

आज भी जब अकबर के मन में आया कि फतह उसकी ही होगी तो उसकी हँसी निकल गई। साथ ही वह विचार करने लगा कि वह फतह सुख और आराम की सूचक है अथवा दुःख और क्लेश की?

यह कैसे जाने? इसके लिए उसे यह समझ आया कि विभूतिचरण ही इस बात का उत्तर दे सकता है।

एकाएक उसके मन में विचार आया कि वह अभी नगर सराय में होगा। इस विचार के आते ही उसने ताली बजाई तो दरबान भीतर चला आया और सलाम कर हुक्म का इंतजार करने लगा।

अकबर ने कहा, ''एक सिपाही को बुलाओ।''

सिपाही आया तो अकबर ने उससे कहा, ''भाग कर नगर सराय में जाओ। वहाँ पंडित विभूतिचरण हैं। उनसे कहो कि शहंशाह याद फरमाते हैं। देखो, उनसे कहना कि हम मंदिर की इफ्तताही रस्म के मुतअल्लिक पूछना चाहते हैं।''

सिपाही गया तो अकबर पंडित के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

5

विभूतिचरण सराय में पहुँचा तो नगर के बहुत-से धनी-मानी सेठ उसकी प्रतीक्षा में वहाँ एकत्रित हो रहे थे। भटियारिन की सराय पर मंदिर की निर्माण समिति के लोग भी आगरा आ चुके थे और यह बात विख्यात

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो चुकी थी कि मंदिर का उद्घाटन और देवता का प्रतिष्ठान पंडित विभूतिचरण कर रहे हैं। इससे सब प्रसन्न थे और उस समारोह का कार्यक्रम बनाने सब एकत्रित हो रहे थे।

विभूतिचरण आया तो सब उसे घेर कर सराय के एक बड़े कमरे में एकत्रित हो गए।

पंडित सदा की भाँति प्रसन्न वदन उनमें बैठ पूछने लगा, "किस कारण आए हैं?"

"हम वैशाख प्रतिपदा का कार्यक्रम जानने के लिए आए हैं। हमारा अनुमान है कि उस दिन वहाँ पर लाखों की संख्या में हिंदू एकत्रित होंगे। पिछले तीन सौ वर्ष से किसी भी मंदिर का उद्घाटन और मूर्ति की स्थापना खुले रूप में नहीं हो रही। इस समय यह हो रही है। इसलिए वहाँ लाखों का एकत्रित हो जाना संभव है। इस कारण सब कुछ पहले ही निश्चय कर उसका प्रबंध भी तो करना चाहिए। वहाँ सबके खाने और पीने का प्रबंध भी होना चाहिए।"

विभूतिचरण देख रहा था कि राज्य की ओर से किंचिन्मात्र अनुमति मिलने से हिंदू समाज में जागृति की तरंग दौड़ गई है। वह समझता था कि यही जीवन का लक्षण है। इस कारण वह प्रसन्न था।

उसने कार्यक्रम निर्धारित कर दिया। उसने कहा, "मूर्तिप्रतिष्ठा का मुहूर्त दूसरे प्रहर तीन घड़ी व्यतीत होने पर होगा। यजमान की दीक्षा उससे पहले हो जानी चाहिए।

"मूर्ति स्थापित होते ही शंख, घड़ियाल, तुर्रियों और ढोल-नगाड़ों से परमात्मा की जयजयकार की जाएगी। यह दो पल तक चलेगी। लोग अपने साथ शंख ला सकें, लाएँ और बजाएँ। तब मंदिर के गोपुर से घड़ियाल बजाया जाएगा और फिर भगवान की आरती उतारी जाएगी। मंदिर पर खड़े एक सौ एक पंडित यह आरती गाएँगे। लोग शांत हो सुनेंगे।

"इस आरती के उपरांत सबको प्रसाद बाँटा जाएगा। प्रसाद बाँटने की प्रक्रिया यह होगी कि लोग पंक्ति बाँधकर मंदिर में एक द्वार से आएँगे,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ प्रसाद लेंगे और दूसरे द्वार से निकलते जाएँगे। यह उत्सव की समाप्ति होगी।"

"इसमें तो बहुत देर लग जाएगी।"

"देखिए सेठ जी! यह सब जनता में पहले घोषणा कर दीजिए। नियंत्रण भंग करनेवाला देवता का अपमान करेगा और पाप का भागी होगा। यह सब पहले बात देना चाहिए।

"मैं समझता हूँ कि यदि एक सौ युवक स्वयंसेवक प्रबंध के लिए कटिबद्ध मिल जाएँ तो सब प्रबंध हो जाएगा।"

इस कार्यक्रम की व्याख्या और प्रबंध की बातचीत हो रही थी कि शहंशाह का सिपाही विभूतिचरण को ढूढँता हुआ आया। उसने सबके सम्मुख ही शहंशाह की आज्ञा सुना दी। उसने कहा, "शहंशाह पंडित विभूतिचरण को याद करते हैं। वह अपने मंदिर-उद्घाटन के वक्त जाने के विषय में राय करना चाहते हैं।"

विभूतिचरण ने सब एकत्रित हुए सेठों से कह दिया, "मैं शहंशाह से मिलने के उपरांत पुन: आपसे मिलकर कार्यक्रम को अंतिम रूप दूँगा।

इतना कह पंडित उसी सिपाही के साथ महारानी द्वारा दिए रथ में ही महल में जा पहुँचा। पंडित को भीतर सूचना जाते ही बुला लिया गया।

जब विभूतिचरण पुन: आशीर्वाद दे सामने खड़ा हुआ तो अकबर खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "महारानी ने हमें समझा दिया है कि हमें मंदिर की इफ्तताही रस्म के वक्त हाजिर होना चाहिए। अब बताओ, हमें किस तरह और कब वहाँ आना चाहिए?"

विभूतिचरण ने आँखें मूँदकर एक क्षण-भर ही विचार किया और कह दिया, "हुज़ूर! दूसरे पहर दो घड़ी गुजरने पर मंदिर का मुहूर्त होगा। उससे पहले शहंशाह वहाँ पहुँच जाएँ तो बहुत जल्दी फारिग हो जाएँगे। सबसे पहले हुज़ूर का ही मंदिर में प्रवेश होगा। यह इंतजाम मैं कर दूँगा।

"शहंशाह को राजपूत सिपाहियों के संरक्षण में आना चाहिए। उनकी सहायता से उनको सबसे पहले दर्शन हो सकेंगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मगर पंडित जी! क्या हम मंदिर में जा सकेंगे?"

"सब लोग जो वहाँ जाएँगे एक पंक्ति में भीतर जाएँगे, मंदिर में मूर्ति की प्रदक्षिणा कर सकेंगे। इसमें हिंदू-मुसलमान तथा ऊँच-नीच में भेद-भाव नहीं किया जाएगा। मंदिर में मूर्ति के समीप तो केवल पुजारी ही बैठेगा और शेष सब एक मुनासिब फासले से मूर्ति के दीदार हासिल कर सकेंगे।"

शहंशाह इस प्रबंध से विस्मय में पंडित का मुख देखने लगा। फिर पूछने लगा, "कितने लोग वहाँ जमा होनेवाले हैं?"

"हुज़ूर! कह नहीं सकता। इस पर भी प्रबंधकों को मैंने कहा है कि दो लाख की भीड़ का प्रबंध करना होगा।"

"तो इंतजाम के लिए सिपाही वहाँ भेजे जाएँ?"

"नहीं जहाँपनाह! परमात्मा के काम में दुनियावी शहंशाह के दखल की जरूरत नहीं।"

"हमें डर है कि लोग वहाँ लड़ पड़ेंगे। सब लोग पहले दर्शन करना चाहेंगे और झगड़ा हो सकता है।"

"कुछ भी हो जहाँपनाह! कोई हिंदू नहीं चाहेगा कि राजसी कर्मचारी मंदिर के प्रबंध में दखल दें।"

"हम मानसिंह को इंतजाम के लिए कह देंगे। फिर तो किसी हिंदू को ऐतराज नहीं होगा।"

"जहाँपनाह! यहाँ हिंदू-मुसलमान का सवाल नहीं। भगवान के दरबार में हिंदू-मुसलमान में फरक नहीं। वहाँ तो सब बराबर हैं। सवाल दुनियावी शहंशाह और जगत् के शहंशाह का है। हम चाहते हैं कि भगवान् को अपना इंतज़ाम खुद करने दें। हम दुनियावी सुलतानों का उसके घर में इंतजाम पसंद नहीं करते।"

अकबर समझ रहा था कि पंडित परमात्मा पर सीमा से अधिक भरोसा कर रहा है। परंतु वह बिना मंदिरवालों की स्वीकृति के राजसी प्रबंध करना नहीं चाहता था। इस पर भी वह अपनी सुरक्षा का प्रबंध कर ही उस उत्सव

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में जाना चाहता था।

इस पर अकबर उठ खड़ा हुआ। विभूतिचरण भी उठ पड़ा। शहंशाह ने खड़े-खड़े ही कहा, "हमें मालूम हुआ है कि तुम्हारी पत्नी बहुत ही गुरबत की जिंदगी गुजार रही है। इसलिए हम उसकी कुछ मदद करना चाहते हैं और इसमें तुमको हारज नहीं होना चाहिए।

"उसके सुख-भाग में मैं बाधक क्यों हूँगा?"

"तब ठीक है। अब तुम जा सकते हो। पहली वैशाख को हम भटियारिन की सराय पर पहुँचेंगे और उम्मीद करते हैं कि हमें अपने देवता के दर्शन बाआसानी करा दोगे।"

पंडित ने हाथ उठाकर आशीर्वाद दिया, "भगवान आपको सुमति दे।" इतना कह पंडित दीवानखाने से बाहर निकल आया। जब वह महल के बाहर रथ पर बैठने लगा तो वही राजपूत सिपाही, जो महारानी की भेंट पंडिताइन दुर्गा के लिए दे गए थे, समीप खड़े थे। जब विभूतिचरण रथ पर सवार होने लगा तो उन्होंने कहा, "महारानी जी से आपके प्रश्न का उत्तर मिला है। उनका कहना है कि वहाँ आपके गाँव में तीन बच्चे हैं। राम, रवि और सरस्वती। उनकी माँ बहन दुर्गा देवी है। वह धन दुर्गा देवी के लिए है। आप उसे यह पहुँचा दें और उसे कह दें कि यह उसकी लड़की सरस्वती के विवाह के लिए महारानी जी की भेंट है।"

"समझ गया हूँ।" पंडित रथ पर सवार हुआ और सराय को चल दिया। रात को पंडित सराय में ही रहा। रात एक प्रहर व्यतीत होने पर श्यामबिहारी, पंडित का पड़ोसी लाला, आया और पंडित जी से बोला, "मैं, विपिन और उसकी पत्नी कल यहाँ से चलेंगे। आप कल जा रहे हैं?"

"मैं भी कल बहुत प्रातःकाल यहाँ से चलूँगा।"

"तब तो हम आपके रथ के साथ-साथ ही चलेंगे। हमने दो रथ किए हैं। एक में मैं और विदाई का सामान होगा और दूसरे में लड़का और बहू होंगे। तीन भाड़े के संरक्षक घुड़सवार, तलवार और तीर-कमान से लैस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ मिलेंगे।''

''ये संरक्षक किसने दिए हैं ?''

''मैंने यहाँ के कोतवाल से अर्जी की थी और कोतवाल ने दिए हैं। उनका भाड़ा दो रुपए प्रति संरक्षक प्रतिदिन के हिसाब से देना पड़ेगा। उनके आने-जाने में दो दिन लगेंगे।''

''तब तो ठीक है।'' श्यामबिहारी गया तो नगर सेठ आ गए। पंडित ने उनको बताया कि उद्घाटन के दिन शहंशाह अकबर भी वहाँ आएगा। प्रबंध ऐसा होना चाहिए कि उसे देवता के दर्शन सबसे पहले हो सकें।

6

पंडित गाँव में पहुँचा तो श्यामबिहारी के मित्र और परिवार के लोग गाँव के बाहर अपने लड़के तथा बहू की अगवानी करने के लिए खड़े थे। वे गाँव का बाजा भी साथ लाए हुए थे। पंडित समझ गया कि श्यामबिहारी ने अपने पहुँचने का समय पहले दिन ही किसी व्यक्ति के हाथ बता भेजा होगा। इस धूमधाम की अगवानी में इच्छा न रहते भी पंडित सम्मिलित हो गया। पंडित की पत्नी और बच्चे भी श्यामबिहारी की हवेली के बाहर पहुँचे हुए थे।

पंडित के मन में महारानी तथा शहंशाह तक दुर्गा की अकिंचनता और लड़की के विवाह का समाचार पहुँचने पर विस्मय हो रहा था। इस कारण घर पहुँचते ही पंडित ने पत्नी से पूछ लिया, ''देवि! बहुत कष्ट है तुम्हें इस निर्धन ब्राह्मण के घर आने का ?''

''नहीं तो। किसने कहा है यह आपसे ?'' दुर्गा ने विस्मय प्रकट करते हुए पूछा।

''इस बार राजमहल में धूम मची हुई थी कि पंडित की पत्नी बहुत कष्ट में है। उस बेचारी के पास तो एक रुपया भी नहीं और उसकी लड़की सज्ञान, विवाह के योग्य हो गई है। उसके हाथ पीले करने के लिए पंडित के पास कुछ भी नहीं।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह किसी ने मनगढ़ंत कहानी कही है। यह ठीक है कि हमारे पास कुछ नहीं। आप किसी से लेते ही नहीं। परंतु मुझे कष्ट है, लड़की सज्ञान हो गई है और उसके विवाह की मुझे चिंता लग रही है, सब इस लाला ने जो आपके साथ गया था, वहाँ विख्यात किया प्रतीत होता है।"

"यह देखो।" विभूतिचरण ने एक थैली निकाल दुर्गा को देते हुए कहा, "यह शंहशाह की हिंदू महारानी ने तुम्हारे लिए भेजी है। उनका कहना है कि हमारे गाँव में एक दुर्गा पंडिताइन रहती है। वह राम और रवि दो पुत्रों की माँ है। यह धन उसकी लड़की सरस्वती के विवाह के लिए है।"

इस पर दुर्गा ने कहा, "और यह क्या है?" उसने पंडित जी के कपड़ों के थैले के साथ एक अन्य थैली दिखाते हुए कहा।

पंडित एक दूसरी थैली पत्नी के हाथ में देख पूछने लगा, "यह कहाँ से पा गई हो?"

"शाही रथ के रथवान ने यह मुझे दी है और कहा है कि जलालुद्दीन अकबर शहंशाह अजीम, बादशाह-ए-हिंद ने यह पंडित विभूतिचरण जी की धर्म-पत्नी को भेजी है। यह पंडित जी की पत्नी के प्रयोग के लिए ही है।"

"ओह!" पंडित जी के मुख से अकस्मात् निकल गया और वह अवाक् पत्नी का मुख देखता रह गया। उसने विचार कर कहा, "यह दूसरी थैली शहंशाह ने दी मालूम होती है।"

"जी।" दुर्गा ने कहा, "मैं नहीं जानती कि यह सब यहाँ का वृत्तांत कैसे वहाँ पहुँच गया है। इस पर भी प्रसन्नता का विषय है कि आपका व्रत कि आप नकद किसी से नहीं लेंगे, भी पूरा हो रहा है और भगवान हमारी आवश्यकताओं की पूर्ति भी कर रहा है।"

"हाँ। यह तो है। मगर यह भी समझ लो कि यह शाही मुहरें नर-रक्त से सिक्त हैं। इसको छूने मात्र से भी दोष लग सकता है।"

दुर्गा ने मुस्कराते हुए पूछा, "आप संसार-भर को प्रायश्चित्त कराते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरते हैं। आप इस धन के दोष को दूर नहीं कर सकते क्या?"

"कर तो सकता हूँ। परंतु अभी तुम इसे भूमि में गाड़ दो। फिर इसको किसी पुण्य काम में प्रयोग करने से पहले इसकी शुद्धि करूँगा। मैं अपने तथा अपने किसी प्रिय के प्रयोग में इसे तब तक नहीं ला सकता जब तक इसकी शुद्धि नहीं हो जाती।"

"यह शुद्धि कैसे होगी?"

"यह विचार कर बताऊँगा।"

विभूतिचरण इन मुहरों की दो थैलियों की कथा को समझ नहीं सका था कि उसके घर की अवस्था का ज्ञान शाही महल तक कैसे पहुँचा? शहंशाह ने कहा था कि वह उसकी पत्नी की सहायता करना चाहते हैं और महारानी जी ने राजपूत सिपाहियों के हाथ कहलवा भेजा था कि पंडित जी के गाँव में एक राम, रवि तथा सरस्वती की माता पंडिताइन दुर्गा रहती है और यह धन उसकी बेटी सरस्वती की शादी पर व्यय करने के लिए है।

दोनों थैलियों का धन एक सहस्र स्वर्ण शाही मुद्राएँ थीं। उन दिनों की दर से वह बीस सहस्र रुपए के बराबर था।

एक बात वह समझ गया था कि राजा-रईस और धनी-मानी लोग अस्थिर बुद्धि होते हैं। यही कारण है कि एक घड़ी पूर्व जिसे फाँसी लटकाने की आज्ञा होनेवाली थी, उसे ही शहंशाह ने मालामाल कर दिया था। संभव है कि किसी भी दिन उसके कर्मचारी यहाँ आ उसके पूर्ण गृह-संपद् को उखाड़ ईंट, चूना कर दें। वह भटियारिन की सराय की गिरी हालत देख चुका था।

इस विचार से वह काँप उठा। उसने यह धन मकान में भूमि में दबाने के स्थान पर श्यामबिहारी लाला के पास जमा करा दिया और कहा, "लाला, इसे रखो। यह शहंशाह ने अपने शहज़ादे के विषय में भविष्यवाणी तथा उसकी कुंडली बनाने के प्रतिकार में दिया है।"

श्यामबिहारी चमचमाती मुहरों को देख समझ गया कि शाही टकसाल से तरोताज़ी बनकर आई हैं। उसने अपनी बही में विभूतिचरण का खाता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोल लिया और पंडित का एक सहस्र स्वर्ण मुहरें और उनका भार एक सहस्र तोला लिख लिया।

विपिनबिहारी राम का मित्र था और राम को अपनी पत्नी की कथाएँ बताया करता था और राम उनको अपने पिता से बताया करता था। विभूतिचरण उनको ध्यान से सुना करता था। वह समझ रहा था कि बच्चों के मन में किसी प्रकार की विकृत इच्छाओं के बनने से पूर्व ही वह उनको तब ही समझा सकेगा जब राम इत्यादि उसको विपिन तथा उसकी पत्नी की बातें निस्संकोच बता रहे होंगे।

एक दिन माता-पिता भोजन करने के उपरांत बैठे भटियारिन की सरायवाले मंदिर के उद्घाटन के विषय पर बात कर रहे थे कि सरस्वती बोल उठी, "विपिन भापा की बहू नंदिनी कह रही थी कि वह भी मंदिर देखने जाएगी।"

"यह तो होना ही चाहिए।" पंडित ने कहा। इस पर दुर्गा ने कहा, "वह जा नहीं सकेगी और यदि गई तो कष्ट में भी पड़ सकती है।"

"क्यों नहीं जा सकेगी?" विभूतिचरण ने पत्नी से पूछ लिया।

"यह इस कारण कि उसके पेट में सातवें महीने का बच्चा है।"

"माता जी!" सरस्वती ने पूछा, "यह बच्चा कहाँ से आ गया है?"

पंडित अभी विचार ही कर रहा था कि बच्चे के आने को किस प्रकार समझाए कि राम बोल उठा, "मैं जानता हूँ। यह विपिन भापा ने अपनी पत्नी के पेट में डाल दिया है।"

"पर क्यों और कैसे?" सरस्वती को राम का उत्तर पर्याप्त स्पष्ट नहीं लगा।

राम ने बताया, "विपिन और नंदिनी रात एक ही खाट पर सोते हैं और उसी समय विपिन ने यह बच्चा नंदिनी भाभी के पेट में डाल दिया है।"

"कैसे डाल दिया है?" सरस्वती ने फिर पूछा।

इस पर पंडित जी ने बताने का निश्चय कर बच्चों को चुप कराकर कहा, "सरस्वती! मैं बताता हूँ। ध्यान से सुनोगी तो समझ जाओगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"शरीर दो वस्तुओं का बना है। एक अन्न और दूसरा प्राण। अन्न का अभिप्राय है वस्तु अर्थात् मांस, हड्डी, रक्त और मज्जा इत्यादि। और प्राण का अभिप्राय है हिलने-डुलने, सूँघने तथा देखने इत्यादि की शक्ति। ये दोनों इस पृथिवी पर सूर्य से आती हैं। सूर्य की किरणों से गेहूँ, मक्की, केला, अमरूद इत्यादि खाने के पदार्थों से अन्न बनता है। वही जब हम खाते हैं तो मांस, रक्त इत्यादि बन जाते हैं। शरीर की इंद्रियों में जो काम करने की सामर्थ्य आती है वह भी सूर्य द्वारा अन्न में आती है और फिर हमारे शरीर में भोजन के साथ जाती है।

"देखो, यदि हम भोजन करना छोड़ दें तो जहाँ हमारा शरीर शिथिल हो जाएगा वहाँ यह क्षीण भी होने लगेगा। भोजन लेने से पुनः दोनों बातें पैदा हो जाती हैं। मांस इत्यादि भी बनने लगता है और शरीर की दुर्बलता भी दूर हो जाती है।

"सूर्य में यह शक्ति परमात्मा की है। अतः शरीर में ही अन्न से शरीर बनता है। नंदिनी के पेट में बच्चे का शरीर उस भोजन से ही बना है जो वह खाती रही है।

"जब शरीर बन जाता है तो फिर जीवात्मा शरीर में घुस जाता है। यह बहुत ही सूक्ष्म होता है। इतना सूक्ष्म कि दिखाई भी नहीं देता और हमारे जो रोम-छिद्र हैं, इनमें से भी भीतर जा सकता है। जब शरीर बन जाता है तो यह उस बने शरीर में ऐसे जा बैठता है जैसे मकान बन जाने पर मकान का मालिक उसमें बैठ जाता है।"

सरस्वती ने कहा, "अब समझी हूँ। परंतु पिता जी! इसमें विपिन भापा ने क्या किया है? वह क्यों कहता है कि वह उसका बच्चा है?

"उस दिन वह कह रहा था कि यह उसका ही है। मैंने पूछा था कि तुम्हारा कैसे है? इस पर वह हँस पड़ा और उसने बताया नहीं।"

"वह इसलिए कि वह स्वयं नहीं जानता। जानता होता तो बता देता। यदि बिना जाने बताता तो कुछ गलत बता देता।"

"नहीं जानता तो वह क्यों कहता है कि बच्चा उसने बनाया है?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मूर्ख ऐसा कहा ही करते हैं। एक राजा का दरबान यह समझता है कि राज्य वह चलाता है। एक सेना का सिपाही समझता है कि राज्य वह चला रहा है। राजा समझता है कि राज्य वह चला रहा है। वास्तव में राज्य तो राजा से रंक तक सब चलाते हैं। इसी प्रकार बच्चा पति-पत्नी और सबसे बढ़कर परमात्मा के सहयोग से बनता है।"

"पर पिता जी! कैसे? मैं यही तो पूछ रही हूँ।"

"जैसे मैं कुंडली बना लेता हूँ और फिर उससे लोगों के मरण पर्यंत का वृत्तांत जान लेता हूँ। जब तुम मेरी विद्या पढ़ोगी तो तुम भी जान सकोगी। इसी प्रकार जब तुम नंदिनी जितना पढ़ जाओगी तो तुम भी यह विद्या जान जाओगी।"

"परंतु," दुर्गा ने कहा, "विपिन को अपनी पत्नी को उत्सव पर नहीं ले जाना चाहिए।"

"तो ऐसा करो।" पंडित जी ने कहा, "तुम लड़की को जाकर समझा दो।"

"पर मैं तो उत्सव पर जाऊँगी।" सरस्वती बोल उठी।

"वहाँ बहुत भीड़ होगी।" पंडित जी ने कहा।

"तो क्या हुआ?"

"हुआ यह कि तुम भीड़ में दब जाओगी और मर जाओगी।"

"पिता जी! ज्योतिष लगाकर बताइए कि मैं मरूँगी अथवा नहीं।"

विभूतिचरण हँस पड़ा। हँसकर बोला, "अच्छा। उत्सव पर जाने से पहले पता कर दूँगा।"

7

अकबर को यह बात पसंद नहीं आई कि हिंदू मंदिर के उत्सव पर राज्य का प्रबंध नहीं चाहते। उसे विदित था कि कुछ वर्ष हुए हरिद्वार में हिंदुओं का एक पर्व था। उस समय वैरागी और नंगे साधु परस्पर लड़ पड़े थे और कई सौ मारे गए गए थे। लड़ने वालों के अतिरिक्त सैकड़ों तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भागती भीड़ के नीचे दबकर कुचले गए थे।

कुछ ऐसी ही बात की वह इस समय आशा करता था। आगरे के सेठों ने यह घोषणा कर दी थी कि अकबर मंदिर के उद्घाटन के दिन मंदिर देखने आएगा। इससे तो आगरे से बीस-बीस कोस के लोग इस उत्सव पर आने के लिए तैयार हो गए।

यह समाचार राजा मानसिंह के पास भी पहुँचा। उसको भी समझ में आया कि देवता से अधिक शहंशाह के दर्शन के लिए लोग आएँगे। अत: उसने निश्चय किया कि वहाँ शहंशाह की सुरक्षा का प्रबंध होना चाहिए। वह मंदिर की निर्माण-समिति के सदस्यों से मिलकर कहने लगा, "यदि शहंशाह की रक्षा के लिए सेना के लोग आएँगे तो इससे भीड़ में गड़बड़ भी हो सकती है।"

"क्या गड़बड़ हो सकती है?" एक ने पूछा।

"वे सैनिक स्त्रियों से छेड़छाड़ तथा किसी का अपहरण भी कर सकते हैं।"

इस पर मानसिंह ने समर पर सैनिकों के व्यवहार का वृत्तांत बताया तो सेठ मुख देखते रह गए।

एक ने कहा, "विभूतिचरण जी का कहना था कि मंदिर में सरकारी प्रबंध नहीं होना चाहिए।"

"तो किसका प्रबंध करेंगे?"

"हम नगर के एक सौ से ऊपर युवक तैयार कर रहे हैं जो प्रबंध करेंगे।"

इस पर मानसिंह ने कहा, "तो ऐसा करें कि उन स्वयंसेवकों को हमारे एक सालार के अधीन कुछ दिन तक प्रबंध करने की शिक्षा दिला दें।"

इस पर सेठ तैयार हो गए। एक सौ से ऊपर स्वयंसेवक नित्य राजा साहब के सैनिक शिविर में जाकर शिक्षा लेने लगे। उत्सव से तीन-चार दिन पहले एक राजपूत सैनिक ने राजा साहब को बताया, "हुज़ूर! शहंशाह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का खास अर्दली करीमखाँ अपने एक मित्र को कह रहा था कि शहंशाह यह काफिरों का मेला इस कारण देखने जा रहा है कि मुसलमान सैनिक हिंदुओं की मनपसंद औरतों का अगवाह कर सकें। इससे तो कई सैनिकों के जत्थे उस दिन उत्सव में लूट मचाने का इरादा कर रहे हैं।''

''तो फिर क्या किया जाए?''

उस सैनिक ने बताया, ''हमें उन सैनिकों को काबू में रखने के लिए कोशिश करनी चाहिए।''

''सेठ लोग कुछ स्वयंसेवक इस काम के लिए तैयार कर रहे हैं।''

''महाराज! वे बेचारे क्या कर सकेंगे? मुसलमान सैनिक इस मेले को एक महान लूट का अवसर समझ रहे हैं। महाराज! इसमें हमें कुछ करना चाहिए।''

''यदि हम कुछ करेंगे तो शहंशाह की दो सेनाएँ आपस में लड़ मरेंगी।''

''लेकिन महाराज! अगर मुनासिब इंतजाम न किया गया तो सैकड़ों औरतों का अगवाह हो जाएगा।''

''मैं समझता हूँ कि शहंशाह को इस संभावना की सूचना दे दें तो प्रबंध सुगमता से हो सकेगा।''

''क्या प्रबंध हो सकेगा?'' राजपूत सालार का प्रश्न था।

''शहंशाह से मुसलमान सैनिकों को आज्ञा दिला दें कि वे उत्सव पर जाएँ ही नहीं।''

''मगर महाराज! हमारे लोग तो यह समझ रहे हैं कि शहंशाह ने स्वयं लूट मचाने की योजना बनाई है।''

''यह बात सत्य नहीं हो सकती।''

''महाराज! करीमखाँ शहंशाह का खास आदमी है। वह शहंशाह का इस प्रकार के कामों में सहायक समझा जाता है। इससे सब यह सत्य समझ रहे हैं कि शहंशाह ने ही उसे उत्साहित किया है कि मेले में गड़बड़ मचाई जाए। इस पर सब समझ रहे हैं कि कुछ अधिक चीख-पुकार मची तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहंशाह की रक्षा के लिए सेना को हुक्म हो जाएगा और फिर वहाँ मंदिर को गिराकर बिसमार भी किया जा सकता है।''

''तो फिर हम क्या कर सकते हैं?''

''मेरी एक तजवीज है,'' सामने खड़े राजपूत सैनिक ने कहा।

''क्या?''

''हम आपके सैनिक सामान्य हिंदुओं के पहरावे में जाएँ और बिना मंदिरवालों को बताए भीड़ की, विशेष रूप में स्त्रियों की रक्षा करें।''

''यह देख लो कि हिंदू-मुस्लिम फसाद नहीं होना चाहिए। इससे हमारे शहंशाह से संबंध बिगड़ सकते हैं।''

''आप हमें इस उत्सव पर जाने की अनुमति दे दें। शेष हम स्वयं विचार कर लेंगे।''

इस राजपूत सालार का नाम सुमेरसिंह था। उसको सूचना एक मुसलमान ने ही दी थी कि करीमखाँ सैनिक शिविर में आया था और सैनिकों से फुसफुसाहट में बातें करता रहा था। करीमखाँ के जाने के उपरांत ही सेना में उत्सव पर जाने के लिए तैयारी होने लगी है। वे सैनिक टोलियाँ बना रहे हैं।

राजा मानसिंह ने उस दिन सेना को छुट्टी दे दी और चार-पाँच सौ सैनिक एक निश्चित योजना के अनुसार उत्सव में जाने की तैयारी करने लगे।

वैशाख प्रतिपदा से दो दिन पूर्व ही विभूतिचरण परिवार सहित सराय में जा टिका था। रामकृष्ण बहुत प्रसन्न था। इस उद्घाटन के अवसर पर उसने तीन हलवाई की दुकानें लगवा दी थीं। वह आशा कर रहा था कि सहस्रों रुपए की बिक्री इस अवसर पर होगी। वह इस मंदिर और इसके उद्घाटन के उत्सव को अपने भाग्य का उदय समझ रहा था।

मंदिर समिति का यह आग्रह था कि उद्घाटन के उपरांत पंडित विभूतिचरण मंदिर का स्थायी पुजारी बन मंदिर की ऊपर की मंजिल के कमरों में आकर रहने लगे। पंडित ने अभी इस विषय में निश्चय नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया था। उसका कहना था कि पहले उद्घाटन हो जाए। तदनंतर प्रबंध के लिए समिति बन जाए। उसके उपरांत वह निश्चय करेगा कि वह स्वयं इस प्रबंध में क्या कार्यभार अपने सिर पर ले।

उत्सव के पहले ही सायंकाल से लोग एकत्रित हो मंदिर के चारों ओर डेरे डाल टिकने लगे थे। बहुत-से साधु-संत और महात्मा तो कई दिन पहले से ही वहाँ डेरे डाल धूनियाँ रमा रहे थे। विभूतिचरण और मंदिर के प्रबंध करनेवाले सेठ इस समारोह की सफलता पर बहुत प्रसन्न हो रहे थे। उन्होंने दो लाख दोने प्रसाद के लिए तैयार करवा रखे थे और उनका यह निश्चय था कि मंदिर में दर्शन के लिए सब आनेवालों को प्रसाद मिलना चाहिए। इस काम के लिए आगरा के तीन अन्य सेठ नियुक्त थे।

प्रातः चार बजे ही विभूतिचरण ने स्वयंसेवकों को, मंदिर में दर्शन के लिए आनेवालों को पंक्तियों में कैसे आने दिया जाए और कैसे शीघ्रातिशीघ्र इतनी बड़ी संख्या में दर्शकों को निपटाया जाए, यह सब समझाना आरंभ कर दिया था।

मंदिर के आनेवाले द्वार से दो पृथक्-पृथक् मार्ग भीतर आने और बाहर जाने के लिए बाँस बाँधकर बनाए गए थे। एक पुरुषों के लिए था और दूसरा स्त्रियों के लिए।

पंडित स्वयं सात बजे पूजा के लिए बैठ गया। पहले यज्ञ-हवन किया गया। तदनन्तर वेदमंत्र-गान हुआ और फिर एक सौ एक ब्राह्मण मंदिर की छत पर चढ़कर स्तोत्र पढ़ने लगे।

स्वयंसेवकों ने भीड़ में घूम-घूमकर लोगों को समझा दिया था कि पूजा और स्तोत्र-गान के समय सबको चुपचाप खड़े होकर सुनना है। न तो उन्हें परस्पर बोलना है और न ही शंख इत्यादि बजाने हैं।

लोग अपने घरों में पूजा करने के शंख, घड़ियाल इत्यादि लेकर आए हुए थे। मंदिर की ओर से भी सैकड़ों लोग आरती के उपरांत शंख, घड़ियाल, ढोल, नगाड़े इत्यादि बजाने के लिए नियुक्त थे।

कार्यक्रम नियमित रूप से चलता रहा। पूजा समाप्त हुई और ब्राह्मण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंदिर की छत पर चढ़कर स्तोत्र-गान करने लगे। दो लाख की भीड़ चुपचाप खड़ी-खड़ी मंदिराभिमुख हो हाथ जोड़े स्तोत्र-गान सुनती रही। यह दो घड़ी तक चलता रहा। अब मंदिर पर से शंखध्वनि हुई तो सब ओर से शंख, घड़ियाल इत्यादि बजने लगे। घोर तुमुलनाद होने लगा।

इसी समय शहंशाह चालीस घुड़सवारों से घिरा हुआ वहाँ आ पहुँचा। बीस सवार शहंशाह के आगे थे और बीस सवार पीछे। शहंशाह की सवारी के मंदिर तक पहुँचने के लिए मार्ग बनाया हुआ था। शंख, घड़ियाल इत्यादि के तुमुलनाद में शहंशाह की सवारी मंदिर-द्वार पर जा खड़ी हुई।

सब घोड़ों से उत्तर पड़े और द्वार पर निर्माण समिति के प्रधान सेठ भानु मित्र ने शहंशाह का पुष्पमालाओं से स्वागत किया। मंदिर पर से शहंशाह पर पुष्पवर्षा की गई।

पुरुषों के मार्ग से शहंशाह मंदिर में गए। उनके दाहिनी ओर राजा मानसिंह थे और बाईं ओर मिर्ज़ा अबुल फैज़ी। सेठ भानु मित्र शहंशाह को मंदिर में ले गया।

पुरुषों के मार्ग के साथ-साथ स्त्रियों के लिए मार्ग बना था। दोनों मार्गों के बीच बाँसों से रोक लगी थी। ज्यों ही शहंशाह ने मंदिर में प्रवेश किया उसकी दृष्टि स्त्रियों के मार्ग से भीतर जाती हुई एक स्त्री पर पड़ी। उसे वह जानी-पहचानी समझ आई। उसके मुख से एकाएक निकल गया, "ओह! तुम!" परंतु उस समय ढोल, नगाड़ों, शंख और घड़ियालों का इतना शोर था कि अकबर के मुख से निकला वाक्य किसी को सुनाई नहीं दिया।

मंदिर के देवस्थान की प्रदक्षिणा में भी आधा-आधा मार्ग पुरुष-स्त्रियों के लिए बनाया हुआ था। संयोग ऐसा बना कि कुछ स्त्रियाँ और सुंदरी तथा अकबर और मानसिंह साथ-साथ प्रदक्षिणा कर रहे थे। परंतु अभी भी घड़ियाल इत्यादि का इतना तुमुलनाद हो रहा था कि अकबर ने सुंदरी को संबोधन करने का यत्न किया, परंतु सुंदरी ने या तो सुना नहीं अथवा जान-बूझकर अनसुना कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवता की प्रदक्षिणा हुई और शहंशाह मूर्ति के सामने आ खड़ा हुआ। जयपुर के एक अति योग्य मूर्तिकार की बनाई लक्ष्मी नारायण की मूर्ति अति सुंदर बनी थी। शहंशाह ने देवता के चरणों में फूल चढ़ाए और अशरफियों की एक छोटी-सी थैली चरणों में रख दी। उसी समय सुंदरी ने एक रुपया और कुछ फूल चढ़ाए। विभूतिचरण ने दोनों को प्रसाद दोने में दे दिया। विभूतिचरण इस संयोग को देख मुस्करा रहा था।

उसने आशीर्वाद दिया और वे मंदिर से बाहर निकल गए।

करीमखाँ ने भी भटियारिन की लड़की सुंदरी को सबसे पहले मंदिर में जाते देखा था। वह विस्मय कर रहा था कि सुंदरी वहाँ कैसे आ गई? उसे सुंदरी के नगर चैन से भाग जाने के पीछे का इतिहास विदित नहीं था। इस कारण वह मन में यह विचार कर रहा था कि उसे पकड़कर शहंशाह के हवाले कर दे। इससे वह बहुत बड़ा इनाम पाएगा। अतः वह अन्य स्थान पर होनेवाले छुटपुट झगड़ों को छोड़ मंदिर के द्वार पर आ खड़ा हुआ।

सुमेरसिंह विचार कर रहा था कि स्त्रियों के अपहरण करनेवालों के नेता पर देख-रेख रखनी चाहिए। इस कारण वह उसके पीछे लगा हुआ था। वह भी करीमखाँ के पीछे मंदिर के द्वार पर आ खड़ा हुआ। सुंदरी मंदिर से बाहर निकली और अपने पति निरंजन देव की प्रतीक्षा करने लगी। वैसे तो वह भी सुंदरी की भाँति सबसे आगे था, परंतु शहंशाह और उसके साथ मानसिंह इत्यादि को सबसे पहले भीतर जाने का अवसर मिला। इस कारण जब सुंदरी बाहर आई तो निरंजन देव अभी भीतर ही था। सुंदरी एक ओर हटकर खड़ी हो गई। इस समय तक तो स्त्री-पुरुषों की एक-एक मील लंबी पंक्तियाँ लग चुकी थीं।

एकाएक करीमखाँ ने लपककर सुंदरी की बाँह पकड़कर ऊँची आवाज में कहा, "तुम शहंशाह की बंदी हो।"

सुमेरसिंह तैयार खड़ा था। जब सुंदरी ने शोर मचाया, "बचाओ! बचाओ!!" सुमेरसिंह की तलवार ने करीमखाँ का सिर धड़ से पृथक् कर दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकबर अभी समझ ही रहा था कि क्या हो गया है कि मानसिंह ने अपने साथ आए राजपूतों को शहंशाह के चारों ओर घेरा डाल देने के लिए कह दिया। इस घेरे में सुमेरसिंह, निरंजन देव, सुंदरी, राधा और कुछ अन्य दर्शन करनेवाले भी आ गए।

शहंशाह ने करीमखाँ की देह को ऐंठते देखा तो हुक्म दे दिया, "इनमें से कोई भी भागने न पाए। मुजरिम को हमारे सामने पेश किया जाए।"

मानसिंह ने अपने राजपूतों को आज्ञा दे दी, "इन सबको मेले से बाहर ले चलो।"

इस समय अन्य कई स्थानों पर भी मुसलमानों सैनिकों और राजपूतों में जमकर लड़ाई होने लगी थी। मुसलमानों को पता चल गया था कि करीमखाँ मारा गया है और राजपूतों को पता लगा था कि सुमेरसिंह पकड़ा गया है।

मानसिंह ने देखा कि सैनिकों की लड़ाई के कारण मेले में भगदड़ मच रही है। अतः उसने शहंशाह को कहा, "जहाँपनाह! चलना चाहिए।"

"मगर हमारा खास अर्दली मारा गया है।"

"उसका मुकद्दमा मीरे-अदल के पास जाएगा।"

"नहीं। यह मुकद्दमा हम खुद देखेंगे।"

शहंशाह ने करीमखाँ को सुन्दरी की बाँह पकड़े हुए देखा था और वह मीरेअदल के सामने सुन्दरी के बयान नहीं होने देना चाहता था।

शहंशाह का हुक्म सुन मानसिंह ने अपने पीछे खड़े एक सिपाही को कह दिया, "इन बंदियों को सीधे शाही महल में ले चलो। मीरे-अदल के पास ले जाने की जरूरत नहीं।"

इस आज्ञा के उपरांत शहंशाह की सवारी आगरा को चल दी।

8

करीमखाँ के मारे जाने पर और अन्य कई स्थान पर स्त्रियों को हाथ लगाते ही राजपूतों को तलवार निकालते देख शीघ्र ही शांति स्थापित हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गई। इस पर भी कई लोग भगदड़ में घायल हो गए। घायल होनेवालों में स्त्रियाँ और बच्चे अधिक थे।

दोपहर होते-होते मेले में शांति हो गई। कई सहस्र तो बिना दर्शन किए ही अपने-अपने घरों को चल दिए थे। कई सौ घायल हुए तो उनकी मरहम-पट्टी की जाने लगी। हलचल के उपरांत पुनः दर्शकों की पंक्तियाँ लग गई थीं और सायंकाल तक दर्शक मंदिर में जाते रहे। फूलों, रुपयों, रेज़गारी और मुहरों का ढेर मूर्ति के चारों ओर लग गया था। विभूतिचरण भी फूलों के भीतर से देख रहा था। सबसे अंत में रामकृष्ण और उसका लड़का मोहन आए और पंडित जी के चरण स्पर्श कर बोले, ''भगवान का धन्यवाद है कि मंदिर और सराय लुटने और तोड़-फोड़ से बच गई है।''

''क्या हुआ है ?''

सेठ भानु मित्र ने एक स्त्री पर झगड़े की बात बता दी। इस पर रामकृष्ण ने बताया, ''पंडित जी! शहंशाह का वही अर्दली था जो हमारी पहली सराय को गिरा गया था। उसने सुंदरी को बाँह से पकड़ घसीटना चाहा तो एक समीप खड़े राजपूत ने उस अर्दली का सिर काट धड़ से पृथक् कर दिया।

''इस पर सुंदरी, वह राजपूत और कुछ अन्य लोग पकड़े गए हैं। निरंजन देव भी पकड़ा गया है। राजा मानसिंह ने तो कहा था कि सबको मीरे-अदल के सामने ले जाया जाए। परंतु शहंशाह ने आज्ञा दे दी कि इनका मुकदमा वह स्वयं करेंगे।''

विभूतिचरण ने भी सुंदरी को माँग में सिंदूर लगाए हुए देखा था। इस कारण वह समझ रहा था कि बहुत झगड़ा होगा।

परंतु अपने स्वभाववश वह बिन बुलाए कभी भी शहंशाह से किसी प्रकार की याचिका करने नहीं जाना चाहता था।

वह समझ रहा था कि अब तक कुछ-न-कुछ निर्णय हो चुका होगा। इस कारण उसने रामकृष्ण को कहा, ''मोहन को भेज निरंजन देव का पता करो।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतना कह वह देवता को नमस्कार कर उसकी प्रदक्षिणा ले और अपने लिए रखा प्रसाद का दोना उठा मंदिर की छत पर अपने परिवार में चला गया।

दुर्गा ने पूर्ण झगड़ा देखा था। वह उस समय छत पर खड़ी पंक्ति में आ रहे तथा जा रहे लोगों को देख रही थी।

उसने अपने पति को बताया, ''एक सुंदर हिंदू स्त्री मंदिर के बाहर निकल चारों ओर किसी को देख रही थी। संभवतः वह अपने घर के किसी व्यक्ति को ढूँढ़ रही थी कि इस समय पठानों के पहरावे में एक व्यक्ति आया और उस स्त्री को बाँह से पकड़कर शहंशाह की ओर ले जाने लगा तो उस स्त्री ने शोर मचा दिया, 'बचाओ! बचाओ!!'

''यह शोर सुनकर एक पीली पगड़ी बाँधे राजपूत ने तलवार निकाली और उस पठान का सिर काट दिया। सिर भूमि पर उछलने लगा तो शहंशाह के समीप खड़े एक हिंदू सरदार ने आज्ञा दे वहाँ खड़े सबको घेर लेने को कह दिया। तुरंत दस-बारह व्यक्ति घेरे में आ गए। तलवार चलानेवाला राजपूत भी पकड़ लिया गया। पीछे सब लोग उत्सव के बाहर चले गए।''

विभूतिचरण प्रातःकाल का निराहार बैठा था। उसने हाथ धो कुल्ला किया और दोने में से प्रसाद के मोदक खाने लगा।

इस समय सेठ भानु मित्र एक पत्र ले मंदिर पर चला आया। वहाँ आकर उसने विभूतिचरण को वह पत्र दे दिया।

''सेठ जी, क्या लाए हैं?'' विभूतिचरण ने पूछ लिया।

''शहंशाह का पत्र आपके नाम है।''

पंडित ने लड्डू समाप्त किए। तब हाथ धो पत्र ले पढ़ा। उसमें लिखा था, ''पंडित विभूतिचरण जी! फौरन चले आइए। आपकी एक मुकद्दमे में गवाही चाहिए।''

पंडित ने सेठ जी से पूछा, ''कोई सवारी भी आई है?''

''हाँ! एक रथ है।''

''मैं जाने को तैयार हूँ।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेठ जी ने धीरे से कहा, ''पत्र लानेवाला एक राजपूत है। वह कहता है कि यदि आप लापता होना चाहते हैं तो हो सकते हैं। वह वहाँ कह देगा कि आप नहीं मिले।''

''वह ऐसा क्यों कहता है ?''

''मरनेवाले अर्दली करीमखाँ के सब संबंधी रोते-धोते हुए शहंशाह के द्वार पर इकट्ठे हो रहे हैं और उस स्त्री को मुसलमानों के हवाले करने के लिए कह रहे हैं जिसके कारण झगड़ा हुआ है।''

विभूतिचरण ने कहा, ''सेठ जी, आप चिंता न करें। मैं अभी मारा नहीं जा सकता। मेरी मृत्यु अभी नहीं लिखी।''

विभूतिचरण ने अपने पूजा के वस्त्र उतारे और सामान्य कपड़े पहने और मंदिर से नीचे उतर आया। ज्यों ही वह नीचे उतरा मोहन निरंजन देव के साथ आता दिखाई दिया। वह भी पकड़ा गया था। निरंजन देव ने पंडित जी के पूछने पर बताया, ''हमें आगरा में ले जाकर शहंशाह के सामने उपस्थित किया गया। सुंदरी को हमसे पृथक् कर दिया गया था। मैंने तो यह बताया कि जब मैं मंदिर से बाहर आया तो झगड़ा हो चुका था। इसलिए मैं कुछ नहीं जानता कि क्या हुआ है।

सुमेरसिंह जिसने करीमखाँ का कत्ल किया था, उसने कहा कि करीमखाँ इस औरत को बाँह से पकड़कर घसीटने लगा तो यह 'बचाओ-बचाओ' का शोर मचाने लगी। मैंने उस आततायी को ललकारा। मगर वह इस औरत को घसीटता ही गया तो मैंने उसको उसकी गुस्ताखी का दंड देना उचित समझा।

'' 'तुम वहाँ क्या कर रहे थे ?' शहंशाह ने सुमेरसिंह से पूछा।

'' 'मैं राजा साहब के अंगरक्षकों में से एक हूँ और खुफिया तौर पर उनकी रक्षा किया करता हूँ।''

'' 'क्यों राजा साहब ?' शहंशाह ने मानसिंह से पूछा।

'' 'हाँ, हुजूर। अपने शहंशाह की रक्षा के लिए मैंने प्रत्यक्ष रक्षकों के अतिरिक्त कुछ खुफिया लोग भी तैनात किए हुए थे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

" 'आप इस औरत को जानते हैं?'

" 'नहीं, जहाँपनाह।'

" 'आप सुमेरसिंह को कसूरवार समझते हैं या नहीं?'

" 'मैं समझता हूँ कि इनसे इनाम के लायक काम किया है।'

" 'मगर जानते हैं कि करीमखाँ क्यों इस औरत को पकड़ रहा था?'

" 'जहाँपनाह! मैं कैसे किसी के मन की बात जान सकता हूँ। मैं तो यह समझता हूँ कि यह पठान सब पठानों की तरह एक हिंदू औरत का अगवाह कर रहा था।'

" 'क्यों औरत!' शहंशाह ने अपने को सुंदरी से अनभिज्ञ प्रकट करते हुए कहा, 'तुम कौन हो?'

" 'हुजूर! एक औरत हूँ। यह मेरा घरवाला खड़ा है।'

" 'तुम कौन हो? हिंदू हो या मुसलमान हो?'

" 'मैं एक इंसान हूँ।'

" 'तुम किसकी औलाद हो?'

" 'एक हिंदू औरत की औलाद हूँ। एक हिंदू से परवरिश की गई हूँ। मगर मुझको कहा जा रहा है कि मेरे पिता एक मुसलमान हैं। मैं खुद कैसे जान सकती हूँ कि मेरे पिता क्या थे और क्या हैं। साथ ही मैं एक रूह हूँ जो न हिंदू है, न मुसलमान।'

" 'मगर मजहब तो जिस्म के साथ ताल्लुक रखता है।'

" 'तो क्या पेट से ही बच्चा कलमा पढ़ता हुआ पैदा होता है या क्या उसके तिलक लगा होता है? हुजूर! मेरा बच्चा हुआ है। वह लड़का है। मैंने बहुत गौर से देखा है। न तो उसकी सुन्नत हुई देखी है और न ही उसके तिलक लगा है।'

" 'यह तो बच्चे के माता-पिता द्वारा जब वह दो-तीन साल का हो जाता है तो निशान बनाए जाते हैं।'

" 'जहाँपनाह! यही तो मैं अर्ज कर रही हूँ कि मेरे माता-पिता, जो भी थे, उन्होंने मुझ पर हिंदू के निशान बनाए थे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अकबर सुंदरी के उत्तरों से संतुष्ट नहीं था। इस पर भी वह उसे कह नहीं सका कि उसने उसे जागीर दे रखी है। यह इसलिए कि वह उसकी लड़की है। यह न कह सकने के कारण वह सबका मुख देख रहा था। उसे परेशान देख मानसिंह ने कहा, 'जहाँपनाह! इस वक्त मुकद्दमा तो यह है कि करीमखाँ की हत्या हुई है। हत्या करनेवाली यह लड़की नहीं। इस कारण इसे छोड़ देना चाहिए। इसी प्रकार इसके पति का इस हत्या में कोई हाथ नहीं। उसे भी छोड़ देना चाहिए। कुछ दूसरे लोग जो पकड़े गए हैं, वे यह जानने के लिए ही पकड़े गये थे कि कत्ल करनेवाले ने कत्ल क्यों किया था। यह न तो ज़ाती वजह से किया गया है और न ही किसी दुश्मनी के कारण। वजह ऐसी है जो माकूल है। इसलिए मेरी इल्तजा है कि सबको छोड़ दिया जाए।'

" 'ठीक है।' अकबर ने कह दिया और सबको छोड़ दिया। मगर जब मैं सुंदरी के साथ सलाम कर आने लगा तो शहंशाह ने कह दिया, 'सुंदरी! तुमसे महारानी बेगम मिलना चाहती हैं। इसलिए तुम उनसे मिले बिना नहीं जा सकतीं।' मुझे महल से निकाल दिया है और सुंदरी को नहीं छोड़ा। उसे खादिमा के साथ हरम में भेज दिया है।"

"देखो निरंजन! मुझे शहंशाह ने बुलवा भेजा है। मैं उसके विषय में जानने का यत्न करूँगा।"

9

विभूतिचरण के आगरा पहुँचते ही शहंशाह के सामने उसको उपस्थित किया गया। उस समय रात काफी हो गई थी। शहंशाह अकेला था। विभूतिचरण ने हाथ उठा आशीर्वाद दिया तो शहंशाह ने उसे अपने सामने बैठने के लिए कह दिया।

विभूतिचरण बैठा तो शहंशाह ने कहा, "हम नहीं समझते कि किस तरह अपने ख्यालात का इज़हार करें। वह इतनी तादाद में और सब एकदम दिमाग में आ रहे हैं कि हम न तो यह जानते हैं कि कहाँ से शुरू करें और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ खतम करें।''

''तो जहाँपनाह! इस समय मुझे छुट्टी दे दी जाए। मैंने सुबह से कुछ खाया-पीया नहीं और आज की कार्यवाही से निहायत ही थक गया हूँ।''

''मगर हम तुम्हें ज़िबह करना चाहते हैं।''

''मगर क्यों? मैंने क्या गुनाह किया है?''

''तुमने एक मुसलमान लड़की को हिंदुस्तानी ख्यालात से भर दिया है।''

''सत्य? जहाँपनाह! किसको?''

''सुंदरी को।''

''तो उसने शिकायत की है?''

''वह तो जानती नहीं कि उसके दिमाग में कूड़ा-कर्कट भर दिया गया है।''

''मगर मैं इस जुर्म से इंकार करता हूँ। मैं अपनी जिंदगी में उससे सिर्फ एक बार और वह भी आधी घड़ी के लिए मिला हूँ। इतने कम वक्त में कितना कूड़ा-कर्कट भरा जा सकता है? साथ ही उस वक्त मैंने उसे एक ही बात कही थी। जब उसने कहा था कि वह जन्म से ही मुसलमान है तो मैंने उससे पूछा था कि वह कलमा पढ़ती-पढ़ती पैदा हुई थी? बस इससे ज्यादा बात नहीं हुई।''

''मगर वह तो अब एक फलसफादान की तरह रूह और जिस्म की बात करती है।''

''मैंने पूछा, 'अब तुम कहाँ जाओगी?'

''बोली, 'अपने शौहर के घर।'

''मैंने कहा, 'मगर तुम मुसलमान हो।'

''वह बोली,, 'मेरे जिस्म पर कोई निशान हो तो बताइए।'

''अब बताओ। मैं क्या करूँ?''

''मेरी इल्तजा है कि उसे अपने खाविंद के पास भेज दें। इसी वक्त। जिससे रात वह उसकी सोहबत में रह सके।''

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ओह। तुम ठीक कहते हो। मगर यह फलसफा और हाजिर जवाबी तुमने उसमें पैदा की है?"

"जहाँपनाह! नहीं। मैं परमात्मा की हाज़िर-नाज़िर समझ यह कहता हूँ कि मैंने उसे कुछ नहीं सिखाया।"

अकबर ने ताली बजाई। एक दरबान आया तो उसे हुक्म दे दिया, "उस लड़की को जो महारानी बेगम के पास है, बुलाओ।"

सुंदरी अभी तक उसी पहरावे में थी जिसमें वह सुबह मंदिर में आई थी। उसके आते ही अकबर ने पूछा, "देखो। इन पंडित जी को जानती हो?"

"आपके त्योतिषी हैं।"

"यह पूछ रहे हैं कि क्या तुम हिंदू हो?"

"मैं हिंदू नहीं हूँ।"

"तो तुम मंदिर किस काम से गई थीं?"

"आप भी तो गए थे?"

"मैं तो तमाशा देखने गया था।"

"मेरा भी जी चाहता था तमाशा देखने को।"

"तो तुम पूजा करने नहीं गई थीं?"

"जी नहीं। मैं हिंदू नहीं हूँ।"

"तो तुम मुसलमान हो?"

"नहीं हुज़ूर! मुझसे नमाज पढ़ी नहीं जाती।"

"तो तुम क्या हो?"

"एक औरत हूँ।"

अकबर हँस पड़ा और बोला, "अच्छा तुम जा सकती हो।"

"कहाँ?"

"अपने बच्चे के पास।"

"हुज़ूर! इस वक्त कैसे जाऊँगी?"

"यह पंडित जी अपने रथ में तुम्हें ले जाएँगे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पंडित जी, ले चलेंगे?"

"हाँ। ले चलूँगा।"

सुंदरी ने कदम बोसी की और पंडित जी से बोली, "तो चलिए।"

"भगवान आपको ता-हयात सेहत और कामयाबी बख्शे।" पंडित ने यह शहंशाह को कहा और सुंदरी के साथ दीवानखाने से निकल गया।

●●●

167942
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167942

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

(1894 - 1989)

शिक्षा : एम. एस-सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रूके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद्, दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता।

A.H.W.
ASHOK SERIES

प्रकाशक
हिन्दी साहित्य सदन
वितरक :-
एन॰डी॰सहगल एण्ड सन्स
18/23, शक्ति नगर, दिल्ली 110007

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar